# वाणी

राजभाषा विशेषांक

वर्ष : 38 अंक 142 सितंबर 2024

वर्ष 2023-24 हेतु माननीय अमित शाह, गृह मंत्री, भारत सरकार से प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति-प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव

पत्रिका पढ़ने के लिए,
क्यूआर कोड स्कैन करें

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
तिमाही गृह पत्रिका

# गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्रीय कार्यालय के प्रांगण में ध्वजारोहण के पश्चात राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देती हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** । उनके साथ हैं हमारे कार्यपालक निदेशक **श्री जयदीप दत्ता रॉय,** कार्यपालक निदेशक **श्री धनराज टी** एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी **श्री राजीव कुमार**

बैंक ने क्षेत्रीय प्रबन्धकों हेतु आयोजित कारोबार सम्मेलन के दौरान निवा बूपा हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी के साथ साझेदारी में मेसर्स सुनंदा फाउंडेशन, चैरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई के माध्यम से जरूरतमंद और गरीब लोगों को 48,641 भोजन दान किया । सुनंदा फाउंडेशन को चेक सौंपते हुए बैंक के एमडी व सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** और निदेशक द्वै

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

# वाणी

वर्ष : 38 अंक 142 सितंबर 2024

## संदेश

प्रबन्ध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश 3
कार्यपालक निदेशक का संदेश 4
कार्यपालक निदेशक का संदेश 5
महा प्रबन्धक का संदेश 6

## संपादकीय

भारत मंडपम में गूँजी हिंदी 7

## विशेष आलेख

हिंदी की सामर्थ्य एवं सार्थकता 12
भारतीय लिपियों की विकास यात्रा 14
विश्व मंच पर हिंदी 18
हिंदी और बांग्ला का अंतर्संबंध 22
आवारा हूँ... 35
चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 39
प्रारंभिक शिक्षा में हिंदी की भूमिका 42
बच्चों में टीकाकरण (प्रतिरक्षण) का महत्व 43
हिंदी भाषा: चुनौतियाँ और समाधान 45
सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ) और वेबसाइट के लिए इसका महत्व 46
राजभाषा की संकल्पना और महात्मा गांधी का योगदान 48
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हमारी हिंदी 50
डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी से हिंदी का विकास 52
राजभाषा कार्यान्वयन और इण्डियन ओवरसीज़ बैंक 53
हिंदी भाषा से रोजगार की संभावनाएं 55
सुशासित लोकतंत्र में शिक्षा का महत्व 58

## बैंकिंग व अन्य लेख

विशेष रुपया वोस्ट्रो खाता 8
हरित वित्त या ग्रीन फाइनेंस 20
बैंकिंग कारोबार में रिटेल और कासा 25

## कविता

मैं सोच रहा क्या लिखना है 9
हिंदी 13
संविधान 17
मान सहित हिंदी को अपनाना 41
नारी सम्मान 51
अख़बार 54
मैं बेटी हूँ 57

## साहित्य का सफ़रनामा

मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया 10

## फोटो फ़ीचर

केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ 27
क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ 29

## विविधा

कैलेंडर 30
शब्द शब्दांतर 24
ज्ञान के मोती 44
हंसी की फुलझड़ियाँ 47
राजभाषा प्रश्नोत्तरी 59
प्रतिस्पन्दन 60

# वाणी

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
की तिमाही गृह पत्रिका

वर्ष : 38 अंक 142 सितंबर 2024

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार !
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार ?

मुख्य संरक्षक
अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य
कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक
जयदीप दत्ता रॉय
कार्यपालक निदेशक

संरक्षक
धनराज टी
कार्यपालक निदेशक

परामर्शदाता
रेयाजुल हक
महा प्रबन्धक

संपादक
कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक

संपादन सहयोग
नगेन्द्र कुमार सिंह
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

संपादन सहयोग
शुभम दीक्षित
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

संपादन सहयोग
पदमा चांदवानी
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

मुद्रक
कृष्णराज प्रिंटर्स
36 देवराजन स्ट्रीट, रॉयपेट्टा
चेन्नै 600 014, तमिलनाडु
दूरभाष : 044-28481125

वाणी में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं ।
बैंक का इससे सहमत होना ज़रूरी नहीं है ।

पत्र व्यवहार का पता
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय,
763 अण्णा सालै, चेन्नै 600002
फैक्स : 044-28551618
दूरभाष : 044-28519572
ई-मेल : official@iobnet.co.in

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

# प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय आइओबियन्स,

गृह पत्रिका वाणी के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे सदैव प्रसन्नता होती है। सितंबर तिमाही ने आइओबी परिवार को प्रसन्न होने के कई कारण दिये हैं, जिसे आपसे साझा करते हुए असीम हर्ष व गर्व की अनुभूति हो रही है। साथियो, आपके अथक प्रयास एवं परिश्रम से 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हमारे केन्द्रीय कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से वर्ष 2023-24 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति, "प्रथम पुरस्कार" प्राप्त हुआ है। यह क्षण मेरे लिए अविस्मरणीय था। उल्लेखनीय है कि यह सम्मान बैंक को लगातार 2 वर्षों से प्रथम पुरस्कार के रूप में प्राप्त हो रहा है। इस कीर्तिमान के लिए आप सभी बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं। साथ ही, यह भी उल्लेख करते हुए गर्वान्वित महसूस कर रहा हूँ कि हमारे राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित 'भाषा संगम' पुस्तक का विमोचन भारत मंडपम जैसे भव्य मंच एवं गणमान्य व प्रतिष्ठित अतिथियों के बीच केंद्रीय गृह मंत्री माननीय अमित शाह के कर कमलों से होना, यह बैंक के लिए सम्मान का विषय है। माननीय केंद्रीय गृह मंत्री ने अपने संबोधन में हमारे बैंक द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की, बैंक के लिए प्रशंसनीय शब्द सुनना मेरे लिए काफी सुखद था। दोस्तो, उपलब्धियों की यह शृंखला यूँ ही जारी रही और 15 सितंबर 2024 को बैंक द्वारा संकलित 'निबंध संचय भाग-3' पुस्तिका का विमोचन केंद्रीय गृह राज्य मंत्री सम्मानीय नित्यानंद राय ने किया, जो हममें विशेष ऊर्जा का संचार करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमें समर्पित रहने के लिए प्रेरित करता है। ध्यातव्य है कि शिखर पर पहुँचकर वहाँ टिके रहने के लिए दोगुना प्रयास एवं इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। सभी कार्यालय एवं शाखाएँ, राजभाषा कार्यान्वयन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रोडमैप तैयार करें और राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियों एवं नवोन्मेषी कार्यों पर बल दें।

साथियो, बैंकिंग के क्षेत्र में भी सितंबर तिमाही हमारे लिए बेहद खास रही है। सितंबर तिमाही का वित्तीय परिणाम दर्शाता है कि बैंक का तिमाही-दर-तिमाही क्रिटिकल पैरामीटर में नंबर काफी सुसंगत है। इस तिमाही में हमने अपने सभी पुराने रिकॉर्डों को पीछे छोड़ते हुए रु. 777 करोड़ का निवल लाभ दर्ज़ किया है। सभी को हार्दिक बधाई! यह बेहतर परिणाम हमारे टीमवर्क को दर्शाता है। इस तिमाही में स्लीपेज का अनुपात 0.11% रहा है। इस प्रशंसनीय कार्य की निरंतरता को बनाए रखिए। स्लीपेज को रोकने से न सिर्फ खातों को एनपीए होने से बचाया जा सकता है बल्कि अनावश्यक प्रोविजनिंग से भी राहत मिलती है।

हमें चालू वित्तीय वर्ष में ध्यान रखना है कि हमारी कोई भी शाखा किसी भी पैरामीटर में निगेटिव न रहे। सभी शाखाएं कासा बढ़ाने पर विशेष फोकस करें। आपको कासा बढ़ाने के लिए केंद्रीय कार्यालय स्तर से जो भी मदद चाहिए, आप उसे संबंधित विभाग के संज्ञान में लाईये, अपने बेहतर सुझाव ई-टू-सिक्स पर दीजिए। बैंक कासा से संबंधित विभिन्न अभियान चला रही है, आपके लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं भी शुरु की गयी हैं। आप सभी मौजूदा अभियान से सक्रिय रूप से जुड़ें। दृढ़ता और कर्तव्यनिष्ठा को रेखांकित करते हुए हिंदी के यशस्वी कवि केदारनाथ अग्रवाल लिखते हैं –

**"न टूटो तुम, बस झको योंकि,**
**चूम लो मिट्टी, और फिर उठो।"**

शुभकामनाओं सहित,

**अजय कुमार श्रीवास्तव**
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

एमडी व सीईओ महोदय को सुनने के लिए, क्यूआर कोड स्कैन करें

# कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि राजभाषा विभाग बैंक की तिमाही गृह पत्रिका वाणी के सितंबर अंक को राजभाषा विशेषांक के रूप में प्रकाशित करता आ रहा है । मुझे यह अंक आप सभी को सौंपते हुए असीम गौरवानुभूति हो रही है । गौरवान्वित होने का कारण अब किसी से छुपा नहीं है । लगातार दूसरी बार हमारे बैंक को राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय से राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ । यह साबित करता है कि हम अपनी सफलता की कसौटी पर खरे उतरे हैं । ये आप सभी के समेकित प्रयासों का ही परिणाम था कि हम इस पुरस्कार को प्राप्त कर सके। इसके लिए हमारी राजभाषा टीम तथा सभी स्टाफ़ सदस्य बधाई तथा सराहना के पात्र हैं ।

सेवा क्षेत्र का अंग होने के साथ ही हम बैंकर्स, आम जनता के वित्तीय प्रहरी भी हैं । ग्राहकों के खातों में जमा उनकी श्रमअर्जित पूंजी को धोखाधड़ियों और अवैध गतिविधियों में लिप्त अपराधियों से सुरक्षित रखना हमारा प्रथम दायित्व है । विगत कुछ वर्षों में ऐसी वित्तीय आपराधिक गतिविधियों में तीव्र उछाल देखा गया, जहां सीधे-सादे ग्राहकों ने ज़रा सी चूक के चलते पूरे जीवन की कमाई एक ही पल में गंवा दी । इन सभी खतरों को भाँपते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने डिजिटल वित्तीय धोखाधड़ी को नियंत्रित करने के अपने प्रयासों के तहत एक अभिनव एआई/ एमएल -आधारित मॉडल विकसित किया है, जिसे म्यूल-हंटर नाम दिया गया है । इस एआई मॉडल को बेंगलुरु स्थित भारतीय रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब (आरबीआइएच) द्वारा विकसित किया गया है जो बैंकों में म्यूल बैंक खातों की समस्या को शीघ्रता से निपटाने और डिजिटल धोखाधड़ी को कम करने में मदद करेगा । आरबीआइएच द्वारा निर्मित म्यूल-हंटर संदिग्ध म्यूल खातों की पहचान करने के लिए नियम-आधारित प्रणाली से बेहतर है । इसकी उन्नत एमएल एल्गोरिदम लेनदेन और खाता विवरण से संबंधित डेटासेट का विश्लेषण कर सकती है ताकि सामान्य नियम-आधारित प्रणालियों की तुलना में अधिक सटीकता और अधिक गति के साथ म्यूल खातों की भविष्यवाणी की जा सके । इस प्रणाली को कई बैंकों के सहयोग से म्यूल खातों की गतिविधि के 19 अलग-अलग पैटर्न का विश्लेषण करने के बाद विकसित किया गया है ।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि इस दिशा में हमारे इन-हाउस फ्रॉड मॉनिटरिंग एंड प्रेवेंशन (एफ़आरएम) टूल ने भी अपना काम बखूबी किया है और हम विगत वित्तवर्ष की पहली छमाही की तुलना में इस वर्ष की पहली छमाही के अंत तक धोखाधड़ियों को 45% तक कम करने में सफल रहे हैं । यद्यपि, अभी इस दिशा में एक लंबा सफर तय किया जाना बाकी है, फिर भी हमें आशा है कि हम भविष्य में रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब द्वारा विकसित अभिनव एआई/ एमएल - मॉडल आधारित म्यूल-हंटर की मदद से धोखाधड़ियों को रोकने में सफल रहेंगे ।

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता रॉय

**जयदीप दत्ता रॉय**
कार्यपालक निदेशक

# कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय सहकर्मियों,

बैंक की गृह पत्रिका वाणी के माध्यम से आप सभी से पुन: संवाद करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । साथियो, जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए हमारे केंद्रीय कार्यालय को भारत सरकार से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति-प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है । 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में यह पुरस्कार हमारे एमडी व सीईओ ने केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह के कर कमलों से ग्रहण किया । आप सभी को ढेर सारी बधाईयाँ ! साथियो इस तरह के पुरस्कार बैंक की ब्रांड इमेज को मजबूत करता है और कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य अतिथियों के बीच बैंक की छवि को भी दर्शाता है । राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि शाखाओं / कार्यालयों के स्टाफ सदस्य अपने दैनंदिन कार्य-निष्पादन में राजभाषा का प्रयोग कर रहे हैं । पर उत्कृष्टता की शीर्ष पर बने रहने के लिए सिर्फ कार्य करना ही अनिवार्य नहीं है, बल्कि कार्य-शैली में कुछ बदलाव झलकना चाहिए ।

आगे कुछ बातें बैंकिंग की कर लेते हैं । दोस्तो, सितंबर तिमाही में हमारा बिजनेस मिक्स 5.41 लाख करोड़ तक पहुँच चुका है । हमें अनवरत रूप से कोशिश करनी है कि हमारे बिजनेस मिक्स में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो । आप जानते हैं कि संस्थान के विकास पर ही हमारा विकास भी निर्भर है । बैंक के विकास में हमारी 3319 शाखाएं और 50 क्षेत्रीय कार्यालयों के सभी स्टाफ सदस्यों के योगदान अपेक्षित हैं ।

आज पूरे बैंकिंग जगत के लिए कासा में वृद्धि करना एक मूलभूत समस्या है । हम भी उससे अछूते नहीं है । विदित है कि बैंकिंग करने के लिए जमा और अग्रिम के बीच संतुलन होना आवश्यक है । फ्रंट लाइन स्टाफ सदस्य कोशिश करें कि उनकी शाखा में प्रतिदिन 5 एसबी खाता और प्रत्येक माह में 10 चालू खाता खुले । आप सभी कासा बढ़ाने में अपना योगदान दें और इसके लिए अधिकाधिक एचएनआई ग्राहक को लक्षित कर सकते हैं । इस दिशा में, हम तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत हैं । शाखाओं को खाता खोलने के लिए टैब उपलब्ध करवायी गयी है । आप कहीं से भी 365*24*7 टैब बैंकिंग के जरिए ग्राहक का ऑन-बोर्डिंग कर सकते हैं । आप जानते हैं कि बैंक के पास लगभग 8000 बीसी हैं । हाल ही में बीसी के पारितोषिक राशि में भी अच्छी खासी वृद्धि की गयी है । कासा बढ़ाने के लिए कारोबार संवादी (बीसी) का भी सहयोग लें । साथ ही, यह भी ध्यान रखें कि कोई भी एसबी / चालू खाता निष्क्रिय न हो । प्राय: देखने में आता है कि खोले गए नए खाते कुछ समय के बाद निष्क्रिय हो जाते हैं । ऐसा न हो इसके लिए प्रयासरत रहें ।

मुझे आप सभी को शुभकामनाएं देते हुए अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉन्ड के कुछ शब्द याद आ रहे हैं- "Life is not always waiting for the storm to pass, its learning to dance in the rain यानी जिंदगी हमेशा तूफान के गुजरने का इंतजार नहीं करती, बल्कि बारिश में नाचना भी सीखाती है ।" आप सभी विपरित परिस्थितियों में न घबराते हुए टीम भावना के साथ काम करें और बैंक की तरक्की में अपना बहुमूल्य योगदान दें ।

धनराज

**धनराज टी**
कार्यपालक निदेशक

# महा प्रबंधक का संदेश

प्रिय साथियो,

एक बार फिर बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'वाणी' के माध्यम से आप सभी से रूबरू होने का मौका मिला है। साथियो, वाणी के इस अंक के ज़रिए आप सभी से बात करते हुए जो खुशी हो रही है उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। इस खुशी का कारण आप सभी जानते ही हैं; लगातार दूसरे साल हमारे बैंक ने राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है, जिसे आप सभी की ओर से हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय ने माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर कमलों से 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम में ग्रहण किया। उस विशाल सभागार में बारंबार गुंजायमान होता आइओबी का नाम और उस अविस्मरणीय पल की स्मृतियाँ सभी आइओबियन्स का मस्तक गर्व से ऊंचा कर देती हैं। माननीय गृह एवं सकारिता मंत्री के कर कमलों से भाषा संगम पुस्तक का विमोचन एवं अपने उद्बोधन में आइओबी के राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना; हम सभी आइओबियन्स के लिए सम्मान की बात है। इस उपलब्धि के लिए मैं पूरे राजभाषा विभाग की टीम तथा आप सभी की सराहना करता हूँ। यह आप सभी के सहयोग के बिना संभव नहीं था। आप सभी इस कीर्ति के बराबर के हकदार हैं।

मुझे यह कहने के लिए जटिलतम गणितीय गणनाओं और समझ से परे भारी भरकम ग्राफ़्स की ज़रूरत नहीं है कि सोशल मीडिया हमारे जीवन के लगभग सभी पहलुओं में अपनी दखल दे चुका है। पिछले कुछ सालों में, सोशल मीडिया ने, असंख्य प्लेटफार्मों के माध्यम से, न केवल हमारे एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के तरीके को बदला है बल्कि उत्पादों और उत्पादकों के बारे में एक धारणा बनाने का भी काम किया है। विशेषज्ञों की मानें तो सोशल मीडिया हमारे सोचने के दायरे से लेकर हमारे सुविधाओं और उत्पादों के चयन के निर्णयों को भी गहरे तक प्रभावित कर रहा है। यहाँ यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है, 70% से अधिक लोग खरीदारी का निर्णय लेते समय सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं, चाहे वह सलाह लेने के लिए हो कि कौन सा कॉफी मेकर खरीदना है या ऋण के लिए किस बैंक पर भरोसा करना है।

हमारे भविष्यदृष्टा एमडी व सीईओ सर ने इसको पहचाना और न केवल आंतरिक व बाह्य रूप से कार्यालयों के नवीनीकरण पर काम किया बल्कि सोशल मीडिया पर बैंक की ब्रांड इमेज को और अधिक सशक्त करने व बैंक की पहुँच को विस्तारित करने के लिए एक अलग अनुभाग का सृजन किया। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि हमारे सोशल मीडिया सेल ने महज़ 18 महीनों में यूट्यूब पर 20563% नए सब्सक्राइबर्स, इन्स्टाग्राम, फेसबुक और एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर क्रमशः, 1595%, 4855% और 54% नए फॉलोवर जोड़े हैं। यह इन पहलों का ही परिणाम है कि आज हमारे लिए ग्राहकों की जरूरतों और अपेक्षाओं को समझना पहले से अधिक आसान हो गया है, क्योंकि बैंक और उपयोगकर्ता के बीच बातचीत अधिक पारदर्शी हो गई है। इन पहलों के चलते ही व्यक्तिगत बैंकिंग का भविष्य वास्तव में उज्ज्वल, मैत्रीपूर्ण, व्यक्तिगत, सामाजिक और तकनीक-प्रेमी दिखता है। देश के युवाओं की खर्च करने की शक्ति और सोशल नेटवर्किंग की शक्ति बढ़ने के साथ, सोशल मीडिया बैंकिंग को अधिक गतिशील और सुविधाजनक बनाने का एक शानदार तरीका है, जिसमें हम काफ़ी हद तक सफल रहे हैं। सफलताओं का यह सफर इसी तरह जारी रहेगा ऐसी मेरे आशा है।

साथियो, दिसंबर माह में अधिवर्षता के चलते मैं अपने कार्यालयी दायित्वों से मुक्त हो रहा हूँ, तो इस नाते आप सभी से आधिकारिक रूप से यह मेरा आखरी संवाद है, किन्तु मुझे आशा है कि हम संपर्क में बने रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

रेयाजुल हक़
महा प्रबन्धक

# भारत मंडपम में गूँजी हिंदी

प्रिय पाठको,

हमें गृह पत्रिका 'वाणी" के राजभाषा विशेषांक में, हिंदी की व्यापकता, स्वीकार्यता और महत्व का जश्न मनाने की खुशी है । भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है; यह संस्कृति, इतिहास और पहचान का एक वाहक है । यह हमें एक साथ बांधता है, भौगोलिक सीमाओं को पार कराता है तथा एकता और संबंध की भावना को बढ़ावा देता है । हमारी राजभाषा, अपने समृद्ध साहित्यिक विरासत और अभिव्यक्तिपूर्ण शक्ति के साथ, हमारे राष्ट्र की पहचान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । यह वह माध्यम रहा है जिसके माध्यम से हमारे पूर्वजों ने अपनी बुद्धिमत्ता साझा की, कवियों ने अपनी कविताएँ बुनीं, और नेताओं ने पीढ़ियों को प्रेरित किया ।

अनुच्छेद 351 के अनुसार, 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके ।' हिंदी के शब्द-भंडार को बढ़ाने के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भाषाओं के शब्द, शैली को आत्मसात करने की आवश्यकता है । भारत मंडपम में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान राजभाषा विभाग को सशक्त एवं समृद्ध बनाने की दिशा में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के विकास पर बल देना काफी प्रशंसनीय रहा । इसी के मद्देनज़र कार्यक्रम के दौरान राजभाषा विभाग के तहत भारतीय भाषा अनुभाग के गठन की नींव रखी गयी । निस्संदेह इससे हिंदी सहित भारतीय भाषाएं भी समृद्ध होंगी ।

पत्रिका की पृष्ठ सं. 30 से 33 नव वर्ष 2025 की पंचांग सहित कैलेंडर से संबंधित रखा गया है । जिसे कार्यालय / शाखा में यथोचित स्थान पर प्रदर्शित करें । वाणी के इस अंक में हमेशा की तरह सभी स्तंभों को बरकरार रखते हुए, मुख्यत: राजभाषा विषयक आलेखों को स्थान दिया गया है । एक ओर जहाँ विशेष आलेख के अंतर्गत 'प्रारंभिक शिक्षा में हिंदी की भूमिका' विषयक आलेख में बच्चों के समावेशी विकास में उनकी मातृभाषा का योगदान, 'हिंदी और बांग्ला का अंत:संबंध' विषयक आलेख में बंगाल में हिंदी की पुख्ता जमीन तैयार करने संबंधी समुचित प्रयासों तथा 'राजभाषा की संकल्पना में महात्मा गांधी का योगदान' विषयक आलेख में स्वतंत्रता सेनानियों की भाषा हिंदी को संविधान में स्थान दिलाने की बापू के अप्रतिम योगदान को बयां करती है वहीं दूसरी तरफ बैंकिंग विषयक स्तंभ में 'विशेष रुपया वोस्ट्रो खाता' और 'बैंकिंग में कासा तथा रिटेल' जैसी समसामयिक विषयों पर चर्चा की गई है । साहित्य का सफरनामा स्तंभ में शायर एवं अपनी गीतों के माध्यम से फिल्मी दुनिया में अमिट छाप छोड़ने वाले साहिर लुधियानवी साहब को शामिल किया गया है तथा हाल ही भारत के शोमैन कहे जाने वाले राज कपूर जी की 100वीं जयंती मनायी गई, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 'आवारा हूँ' शीर्षक से लिखा गया आलेख आप सभी को पसंद आएगा । साथ ही, आपके लिए एमडी व सीईओ महोदय के संदेश का ऑडियो वर्ज़न भी उपलब्ध करवाया गया है, जिसे पृष्ठ सं 3 पर दिये गए क्यूआर कोड स्कैन कर सुन सकते हैं । इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ ।

आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में ...

आपका,

**कृष्ण कुमार गुप्ता**
मुख्य प्रबंधक सह संपादक

# मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया

रेयाज़ुल हक़, महा प्रबन्धक, केंद्रीय कार्यालय

साहिर लुधियानवी एक ऐसे शायर हैं, जो अपनी शायरी और गीतों से लोगो के दिलों पर राज करते हैं । साहिर यानी जादूगर और सच में श्रोता उनके गीतों में खो जाते थे और आज भी उनके लिखे गीत अपना जादू बरकरार रखे हुए हैं । अपनी शायरी के माध्यम से उन्होंने युवाओं के दिल को छुआ और यही वजह थी कि उन्हें 'युवा जोश का शायर' की संज्ञा दी गई । हम और आप आज भी उनके लिखे गीत गुनगुनाते हैं। साहिर का लिखा यह गीत मानो उनकी ही कहानी कह रहा है:

**"मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया, हर फिक्र को धुएँ में उड़ाता चला गया...**

**बर्बादियों का सोग मनाना फ़ुज़ूल था, बर्बादियों का जश्न मनाता चला गया ।।"**

हम सभी जानते हैं मानव जीवन का असली उद्देश्य है कि वह अपनी पहचान और सकारात्मक छाप को दुनिया में छोड़े जिससे आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरित हों। साहिर लुधियानवी एक ऐसी ही शख्सियत थे, जिन्होंने अपनी ज़िंदगी और रचनाओं में इस उद्देश्य को पूरी तरह से जिया। वे भारतीय साहित्य और फिल्म उद्योग के महान शायर और गीतकारों में से एक थे। उनका असली नाम अब्दुल हयी था, लेकिन वे "साहिर" नाम से पहचाने गए। उनकी शायरी में समाज की सच्चाइयों और इंसानी जज़्बातों की गहरी झलक मिलती है।

उन्होंने अपनी कविताओं और गीतों के ज़रिए समाज के दुःख-दर्द, प्रेम, और संघर्ष को इस तरह उकेरा कि वे आम लोगों के दिलों तक पहुँच गए। उनकी रचनाओं में मानवीय भावनाओं का ऐसा असर था कि लोग उनकी शायरी में अपने जीवन की कहानी देख पाते थे। साहिर ने सियासी, रुमानी, नफसियाती और इंकलाबी शायरी की तो दूसरी ओर उन्होंने भजन और कव्वालियां भी लिखीं, बल्कि यूं कहा जाए कि उन्होंने अपनी शायरी में इंसानी जिंदगी के तमाम पहलुओं को लिख डाला। उनके जीवन की कई ऐसी बातें हैं जो बहुत ही खास है पर आम लोगों को इनके बारे में शायद ही पता हो, जिनमें सबसे अहम बात है साहिर के कम उम्र के कई अनुभव आइये ऐसी खास शख्सियत के बारे में कुछ जानते हैं ।

साहिर लुधियानवी एक पंजाबी मुस्लिम गुज्जर परिवार में पैदा हुए थे। इनका जन्म 08 मार्च 1921 को करीमपुरा, लुधियाना पंजाब में हुआ । इनकी मां का नाम सरदार बेगम था तथा इनके पिता चौधरी फज़ल मोहम्मद थे, जो लुधियाना के एक रईस जागीरदार थे पर माता-पिता अलग हो गए । साहिर की शुरुआती पढ़ाई लुधियाना के खालसा हाई स्कूल से हुई इसके बाद उन्होने गवर्नमेंट स्कूल में दाखिला लिया। हालांकि वे कॉलेज की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए और छोटी-मोटी नोकरियाँ शुरू कर दी तथा कुछ वर्षों तक लाहौर में रहे जहां उन्होंने चार उर्दू पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य सन् 1948 तक किया तथा इसके बाद वे बंबई में रहे जो इनकी कर्मभूमि रही। उनकी मृत्यु 59 वर्ष की अवस्था में 25 अक्टूबर 1980 को दिल का दौरा पड़ने से हुई।

साहिर का जन्म ब्रिटिश भारत के पंजाब में लुधियाना के करीमपुरा में हुआ था। इसी कारण उन्होंने अपने नाम के साथ "लुधियानवी" जोड़ा। उनका बचपन कठिनाइयों से भरा रहा। माता-पिता के बीच लगातार विवाद और अलगाव के कारण उनका जीवन बहुत अस्थिर रहा, और पिता की कठोरता ने उनके व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित किया। उनकी कहानियों से पता चलता है कि उनका नाम 'अब्दुल' इसीलिए रखा गया था क्योंकि उनका अब्दुल नाम का एक चिड़चिड़ा पड़ोसी था । उनके पिता पड़ोसी को परोक्ष रूप से कोसने के लिए साहिर पर अपशब्द बोलते थे ताकि उनका पड़ोसी इन बातों को सुन सके ।

आपसी विवादों के कारण उनकी मां अपने पति से अलग हो गईं और साहिर को लेकर चली गईं। वे अपनी माँ के साथ अकेले रहते थे, जो पिता की ओर से उनकी कस्टडी के दावों से बचाने के लिए हमेशा उनके साथ खड़ी रहीं। इस संघर्ष में माँ-बेटे दोनों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा, लेकिन माँ ने उन्हें हर मुश्किल से बचाए रखा। इन कठिनाइयों ने उन्हें समाज में व्याप्त अन्याय और असमानता के प्रति संवेदनशील बना दिया। वे अपनी कविताओं में सामाजिक न्याय, प्रेम, और मनुष्य की पीड़ा को व्यक्त करते थे। साहिर की प्रेरणाओं में मानवीय संवेदनाएं, आत्म-सम्मान, और सामाजिक न्याय की भावना शामिल थी। उस ज़माने में लुधियाना उर्दू का गतिशील और सरगर्म केंद्र हुआ करता था। फलस्वरूप यहीं से उन्हें शायरी का शौक पैदा हुआ और उन्होंने उर्दू और फारसी की सैकड़ों नज़्में और ग़ज़लें पढ़ डालीं। इनमें 'मिर्जा ग़ालिब', 'मीर तकी मीर', 'मिर्ज़ा मुहम्मद रफी सौदा', 'मोहम्मद इब्राहिम ज़ौक़' व 'अल्लामा इक़बाल' की शायरी हुआ करती थीं।

उन्होंने जब वर्ष 1939 में गर्वनमेंट कॉलेज लुधियाना में दाखिला लिया तब यहीं से उनके लेखन की भी शुरुआत हुई। वे अपने शेर और शायरी के लिए अपने कॉलेज में मशहूर हो गए थे। वे देश की आजादी व राजनितिक आंदोलनों के कारण कम्युनिस्ट आंदोलन व छात्र संघ की ओर भी आकर्षित हुए। उनकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी और उन्होंने अमृतसर के मुशायरों में भी भाग लेना शुरू कर दिया। ये वो समय था जब उनके बिना कोई भी मुशायरा अधूरा माना जाने लगा था । इसी दौरान उन्होंने 'ताजमहल' नाम से नज़्म लिखी जिसे लोगों द्वारा बहुत सराहा गया।

साहिर लुधियानवी का योगदान हिंदी और उर्दू साहित्य, खासकर शायरी और फिल्मी गीतों में अद्वितीय है। उनकी रचनाएँ सिर्फ मनोरंजन नहीं थीं, बल्कि सामाजिक मुद्दों को गहराई से दर्शाती थीं। 1945 में उनका पहला काव्य संग्रह "तल्खियाँ" उर्दू में प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने समाज की कठोर वास्तविकताओं को बेबाकी से पेश किया। उनकी शायरी की भाषा आसान और प्रभावशाली थी, जिससे उनके विचार आम लोगों तक पहुँचते थे। उस समय के दौरान साहिर कई उर्दू पत्रिकाओं का संपादन भी किया करते थे। 1949 में विभाजन के बाद, साहिर लाहौर से दिल्ली चले और अंततः उन्होंने मुंबई में बसने का फैसला किया, जहाँ उनका परिचय फिल्म और संगीत की दुनिया से हुआ।

फिल्मों में साहिर का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। हालाँकि शुरुआत में साहिर को फिल्म जगत में ज्यादा पहचान नहीं मिली, लेकिन धीरे-धीरे उनके काम ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। फिल्म "नौजवान" (1951) ने साहिर को एक प्रमुख गीतकार के रूप में स्थापित किया, जिसके बाद उन्होंने कई प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया, जैसे एस.डी. बर्मन, शंकर-जयकिशन, और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल। इन संगीतकारों के साथ मिलकर उन्होंने कई हिट गीत लिखे। उनके गीतों में समाज के मुद्दों के साथ-साथ प्रेम, आत्म-सम्मान और एकता जैसी विभिन्न भावनाओं का अनोखा मिश्रण था। उनके लिखे हुए कुछ गीत जैसे "तुम मुझे भूल भी गए तो" (काग़ज़ के फूल, 1959), "तू हिंदू बनेगा न मुसलमान बनेगा" (धर्मपुत्र ,1961), "हमें तुमसे प्यार कितना" (कुमकुम, 1962), और "अभी न जाओ छोड़ कर" (आंधी, 1975) आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं।

साहिर लुधियानवी पहले ऐसे गीतकार थे जिन्होंने संगीतकारों से अपने गीतों के शब्दों के अनुरूप धुन बनाने की माँग की, जो उस समय एक अनोखी, लेकिन विवादास्पद बात थी। उन्होंने कहा था, "संगीत मेरी कविताओं के अनुरूप होना चाहिए, मैं नहीं चाहता कि मेरे शब्दों को संगीत के लिए बदल दिया जाए। "यह उनके स्वाभिमान और शायरी के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके अलावा, साहिर ने ऑल इंडिया रेडियो से भी संघर्ष किया ताकि फिल्म गीतकारों के नाम प्रसारणों में डाले जाएं और उन्हें उचित श्रेय मिले, जो उनके गीतकारों के अधिकारों के प्रति सम्मान को प्रकट करता है। उनके शब्द आज भी साहित्य और कला प्रेमियों को प्रेरणा देते हैं और भारतीय सिनेमा की दुनिया में उनका योगदान अमूल्य है।

वे प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष विचारों वाले शायर थे। उनकी कविताओं में समाज में फैले अन्याय, वर्ग संघर्ष, और मानवता का संदेश मिलता है। उनका मानना था कि शायर का काम केवल प्यार और खूबसूरती के बारे में लिखना नहीं है, बल्कि उसे समाज के मुद्दों पर भी अपनी बात कहनी चाहिए। उनकी कई कविताएँ और गाने मजदूरों और समाज के दबे-कुचले लोगों के हक की बात करते हैं। साहिर लुधियानवी को "पीपल्स पोएट" (जनता के कवि) कहा गया, क्योंकि उनकी शायरी और गीतों में आम आदमी की भावनाओं, दर्द और संघर्ष का गहरा प्रतिबिंब था। उनकी जिंदगी पर लिखी गई किताब "साहिर: The People's Poet" इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

साहिर का जीवन और उनकी कविताएँ समाज को एक नई दिशा देने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके शब्दों में जो शक्ति थी, वह श्रोताओं के दिलों में गहरी छाप छोड़ने में सक्षम थी। साहिर ने यह सिद्ध कर दिया कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में बदलाव लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी हो सकता है।

### साहिर के मशहूर गीत:

साहिर के मशहूर गीतों में शामिल हैं :- मिलती है ज़िंदगी में मोहब्बत कभी कभी, तुम अगर साथ देने का वादा करो, बाबुल की दुआएं लेती जा, किसी पत्थर की मूरत से मोहब्बत का इरादा है, कभी-कभी मेरे दिल में ख्याल आता है, साथी हाथ बढ़ाना, क्या मिलिए ऐसे लोगो से जिनकी फितरत छुपी रहे, ये देश है वीर जवानो का, अभी न जाओ छोड़ कर कि दिल अभी भरा नहीं ...इत्यादि। साहिर के गीतों की सूची इतनी लंबी है कि शायद एक बार में नहीं बताई जा सकती। उर्दू शायरी के प्रेमी तथा पुराने गीतों में रुझान रखने वाले श्रोताओं द्वारा उनके गीतों को आज भी सुना जाता है। आज भी किसी गली के रेडियो में साहिर द्वारा लिखे गए मधुर गीतों की गुनगुनाहट सुनाई दे जाएगी। साहिर के लिखे जादुई गीतों का करिश्मा आज भी बरकरार है।

### पुरस्कार एवं सम्मान :

साहिर को आधुनिक हिंदी साहित्य और फ़िल्म जगत में विशेष योगदान देने के लिए सरकारी और ग़ैर सरकारी संस्थाओं द्वारा विभिन्न पुरस्कारों व सम्मान से नवाज़ा जा चुका है, जो कि निम्न हैं:-

- 'पद्मश्री' – वर्ष 1971 में भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।
- वर्ष 1972 में महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें 'जस्टिस आफ़ पीस' अवार्ड से नवाजा था।
- 'आओ कि कोई ख़्वाब बुनें' गजल-संग्रह के लिए वर्ष 1973 में 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार'।
- वर्ष 1973 में उन्हें 'महाराष्ट्र स्टेट लिट्रेरी अवार्ड' से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 1974 में महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें 'स्पेशल एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट' मनोनीत किया।
- 8 मार्च 2013 को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया।

साहिर लुधियानवी एक ऐसे शायर थे जिन्होंने अपनी लेखनी से प्रेम और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह किया। उनकी कविताओं और गीतों में मानवीय संवेदनाओं का जो अद्वितीय मिश्रण मिलता है, वह उन्हें अन्य शायरों से अलग करता है। साहिर का जीवन और रचनाएँ साहित्य प्रेमियों को भविष्य में भी प्रेरित करती रहेंगी। उन्होंने अपने शब्दों से न केवल साहित्य को समृद्ध किया बल्कि समाज को जागरूक करने का कार्य भी किया। एक मंच पर उन्होंने कहा था, **"कविता सिर्फ शब्दों का खेल नहीं है, यह इंसान की आत्मा की आवाज़ होती है।"** साहिर की यह सोच उनके लेखन में भी दिखाई देती थी, जहां वह केवल कवि नहीं, बल्कि समाज के आवाज़ भी बनते थे। साहिर ने अपने जीवन में अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए। इसके अलावा, विशेष रूप से उनके गीतों के लिए उन्हें "फिल्मफेयर पुरस्कार" जैसे कई सम्मान प्राप्त हुए। उनकी रचनाएँ आज भी साहित्य और संगीत के क्षेत्र में अत्यधिक सम्मानित हैं और वे भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वैसे तो साहिर के बारे में लिखने को बहुत कुछ है परंतु साहिर के ही लिखे गीत की इन पंक्तियों से इस लेख को पूर्ण विराम देते हैं:-

**"मैं पल दो पल का शायर हूँ, पल दो पल मेरी कहानी है...**
**पल दो पल मेरी हस्ती है, पल दो पल मेरी जवानी है ॥"**

# हिंदी की सामर्थ्य एवं सार्थकता

ब्रजेश कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय राँची

हिंदी हमारे देश की मुख्य भाषा और विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। इसका अपना एक विशेष स्थान है, जो इसकी सामर्थ्य और सार्थकता को प्रमाणित करता है। एक भाषा के रूप में हिंदी केवल संचार का माध्यम ही नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, सभ्यता, और समाज की ध्वजवाहक भी है। हिंदी की सामर्थ्य और सार्थकता को समझने के लिए इसके विभिन्न पहलुओं, यानी इसका ऐतिहासिक विकास, साहित्यिक योगदान, सांस्कृतिक महत्व, सामाजिक उपयोगिता, आर्थिक व वैश्विक प्रसार, और शिक्षा में भूमिका को समझना आवश्यक है।

## हिंदी की ऐतिहासिक और भाषाई विकास

हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से मानी जाती है। इसे देवनागरी लिपि में लिखा जाता है और इसका उद्गम अपभ्रंश और अवहट्ट भाषाओं से हुआ है। 10वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान हिंदी भाषा का स्वरूप उभरने लगा और धीरे-धीरे यह भाषा अपनी पहचान बनाने लगी। समय के साथ हिंदी में कई प्रकार की बोलियों का समावेश हुआ, जैसे- अवधी, ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी, और हरियाणवी, जिन्होंने हिंदी को और भी समृद्ध तथा विविधतापूर्ण बना दिया।

वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद हिंदी ने राष्ट्रीय एकता का स्वरूप धारण किया। महात्मा गांधी ने इसे जनमानस की भाषा बतलाया और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प लिया गया। हिंदी की इस ऐतिहासिक यात्रा ने इसे एकता और अखंडता का प्रतीक बना दिया है।

## हिंदी की साहित्यिक सामर्थ्य

हिंदी का साहित्यिक क्षेत्र अत्यंत समृद्ध और विविधता से परिपूर्ण है। संस्कृत से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक हिंदी ने विभिन्न कालों में अपना साहित्यिक विकास किया है। आदिकाल में वीरता की गाथाओं को लिपिबद्ध करने का महत्व था, जबकि भक्ति काल में संत कवियों जैसे कबीर, तुलसीदास, सूरदास, और मीराबाई ने हिंदी साहित्य को अध्यात्मिक और धार्मिक ऊंचाई दी। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' ने हिंदी साहित्य को जन-जन तक पहुंचाया।

आधुनिक युग में प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, और हरिवंश राय बच्चन जैसे लेखकों और कवियों ने हिंदी साहित्य को नए आयाम दिए। इनकी कृतियों ने हिंदी भाषा को एक सशक्त और प्रभावशाली बनाया, जो किसी भी प्रकार की भावनाओं, विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। आज हिंदी साहित्य उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता और विभिन्न विधाओं में बहुत समृद्ध हो चुका है, जो कि हिंदी भाषा की सामर्थ्य को दर्शाता है।

## हिंदी का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का संवाहक भी है। यह हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है और हमारी परंपराओं का संरक्षण करती है। भारतीय समाज के हर क्षेत्र में हिंदी का महत्व है। यह हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में गहराई से जुड़ी है।

विवाह, त्योहार, पूजा, और अन्य सांस्कृतिक समारोह में हिंदी का प्रमुखता से उपयोग होता है। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों और भारतीय कथाओं का हिंदी में अनुवाद किया गया है, जो हमें भारतीय संस्कृति, मूल्यों, और आदर्शों को समझने में मदद करता है। यह हिंदी का ही प्रभाव है कि हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रख पा रहे हैं।

## हिंदी की आर्थिक और व्यावसायिक सामर्थ्य

समसामयिक दौर में हिंदी भाषा का उपयोग व्यावसायिक और आर्थिक गतिविधियों में भी हो रहा है। कई प्रमुख उद्योग, जैसे- फिल्म, टेलीविजन, विज्ञापन और मीडिया, हिंदी के माध्यम से अपने उत्पाद और सेवाएं जनसामान्य तक पहुंचा रहे हैं। हिंदी फिल्मों और टीवी शो का टर्नओवर अरबों रुपये का है।

साथ ही, हिंदी विज्ञापन उद्योग भी बहुत तेजी से बढ़ रहा है। कंपनियां हिंदी में विज्ञापन करके अपने उत्पादों को व्यापक उपभोक्ता वर्ग तक पहुंचा रही है। हिंदी अखबार और पत्रिकाओं का प्रसार भी देश भर में व्यापक स्तर पर हो रहा है। इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के प्रसार के साथ हिंदी में सामग्री की मांग बढ़ रही है, जिससे हिंदी में रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं।

## वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रसार

हिंदी केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्व के अन्य देशों में भी बोली और समझी जाती है। फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो जैसे देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या काफी है। इसके अलावा, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, और यूरोप के देशों में भी प्रवासी भारतीयों के माध्यम से हिंदी का प्रसार हो रहा है।

संयुक्त राष्ट्र ने भी हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषाओं की सूची में शामिल करने पर विचार किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से भी हिंदी का प्रसार वैश्विक स्तर पर हो रहा है। यह हिंदी की बढ़ती सामर्थ्य का प्रतीक है कि आज हिंदी बोलने और समझने वाले लोग दुनिया के हर कोने में मिलते हैं।

## हिंदी की शिक्षा में भूमिका

शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी का विशेष महत्व है। हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र अब अपने विषयों को गहराई से समझने के लिए

हिंदी में स्तरीय पुस्तक उपलब्ध है। भारत में हिंदी माध्यम के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी हिंदी में उपलब्ध हो रहे हैं, जिससे हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

नई शिक्षा नीति के तहत हिंदी भाषा को प्राथमिक शिक्षा से ही महत्व दिया गया है ताकि बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करके अपनी मूल संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहें। इससे शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने में मदद मिल रहा है और बच्चों की बौद्धिक क्षमता का विकास हो रहा है।

**हिंदी की डिजिटल दुनिया में सार्थकता**

डिजिटल युग में हिंदी का प्रसार तेजी से हो रहा है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी का व्यापक उपयोग बढ़ा है। आज हिंदी भाषा में वेबसाइट, ब्लॉग, और सोशल मीडिया प्लेटफार्म बहुतायत रूप में उपलब्ध हैं। डिजिटल युग में हिंदी की बढ़ती उपस्थिति इसका प्रमाण है कि हिंदी डिजिटल विश्व में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कर रही है।

हिंदी में गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेज़न जैसी बड़ी कंपनियों ने अपने उत्पादों और सेवाओं का हिंदीकरण कर दिया है, जिससे हिंदी उपयोगकर्ताओं के लिए इंटरनेट का उपयोग आसान हो गया है। सोशल मीडिया पर भी हिंदी में कंटेंट की मांग और उपयोगिता में वृद्धि हो रही है।

**निष्कर्ष:**

हिंदी भाषा की सामर्थ्य और सार्थकता भारतीय समाज, संस्कृति, और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं में दिखाई देती है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, गौरव और एकता का प्रतीक है। यह भाषा हमें अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, और राष्ट्रीय धरोहर से जोड़ती है। हिंदी का बढ़ता महत्व और वैश्विक प्रसार इस बात का संकेत है कि यह भाषा आने वाले समय में और भी अधिक महत्वपूर्ण और व्यापक होने वाली है।

आज हिंदी की सामर्थ्य को पहचानते हुए इसे आगे बढ़ाने और प्रचारित करने की आवश्यकता है। हिंदी को शिक्षा, तकनीकी विकास, और सामाजिक जीवन में और भी स्थान देना होगा। इससे न केवल हिंदी भाषा का विकास होगा, बल्कि यह हमारे देश की सांस्कृतिक एकता और अखंडता को भी मजबूत करेगा। हिंदी की सार्थकता केवल वर्तमान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य में भी एक सशक्त, प्रभावशाली और समृद्ध भाषा के रूप में उभरती रहेगी। अत: हिंदी की सामर्थ्य और सार्थकता को समझते हुए, हमें इसके प्रसार और संरक्षण के प्रयासों में अपना योगदान देना चाहिए ताकि यह भाषा आने वाले समय में और भी सशक्त और महत्वपूर्ण बनें।

## हिंदी

हिन्दी कई बार न जाने क्यूँ, मेरी माँ के जैसी लगती है।
इसकी बिंदी हर बार मुझे, माँ की बिंदी सी दिखती है।

जब पहली दफ़े आँख खोली, तो माँ को सामने पाया था।
पहली ज़ुबान से वैसे ही, मैंने हिन्दी को दोहराया था।

बिन कहे ही जैसे माँ मेरी, आँखों से सब पढ़ लेती है।
हिन्दी भी तो वैसे ही मेरे, भावों को अभिव्यक्ति देती है।

ये हिन्दी दिवस हमेशा से, मुझे जश्न के जैसा लगता है।
वैसे भी मेरी माँ से जुड़ा, हर दिन मेरी ख़ातिर जलसा है।

मेरी कविताओं को शब्द दिये, और मुखर किया मेरे भावों को।
ऐ हिन्दी। शत-शत नमन तुझे, ये तेरी बेटी करती है।

**नेहा सिंह**
प्रबंधक
भोपाल क्षेत्र

# भारतीय लिपियों की विकास यात्रा

रश्मि कुमारी सिंह, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय बड़ौदा

भारत में लेखन के विकास का इतिहास लंबा और जटिल है। भारत में लेखन का सबसे पहला रूप ब्राह्मी लिपि के रूप में जानी जाती थी। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक दक्षिणी भारत और श्रीलंका के क्षेत्र में इस लिपि का उपयोग किया गया था। ब्राह्मी लिपि पुरानी सेमिटिक लिपि पर आधारित थी, जिसे अरामाईक लिपि के नाम से जाना जाता है। भारत में लेखन के विकास के इतिहास में अगला महत्वपूर्ण चरण गुप्त लिपि का विकास था। इस लिपि का उपयोग उत्तरी भारत के क्षेत्र में चौथी से छठी शताब्दी तक किया गया था। गुप्त लिपि पुरानी ब्राह्मी लिपि से ली गई थी। भारतीय लेखन के इतिहास में अगला महत्वपूर्ण चरण देवनागरी लिपि का विकास था। इस लिपि का उपयोग उत्तरी भारत क्षेत्र में 7वीं से 13वीं शताब्दी तक किया गया था। देवनागरी लिपि पूर्ववर्ती गुप्त लिपि से ली गई थी। भारतीय लेखन के इतिहास में अंतिम महत्वपूर्ण चरण बंगाली लिपि का विकास था। इस लिपि का प्रयोग पूर्वी भारत के क्षेत्र 14वीं से 19वीं शताब्दी तक किया जाता था।

### सिंधु लिपि-

सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की प्रारंभिक संस्कृतियों में से एक थी। यह संस्कृति अपनी अनूठी लिपि के लिए भी जानी जाती है, जिसका उपयोग इस क्षेत्र में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता था। इसे चित्राक्षार लिपि के नाम से भी जाना जाता है। इस लिपि का उपयोग क्षेत्र में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता था। लिपि को ब्राह्मी लिपि का अग्रदूत माना जाता है, जिसका उपयोग संस्कृत लिखने के लिए किया गया था। स्क्रिप्ट में कई अनूठी विशेषताएं हैं, जिनमें विभिन्न ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए डॉट्स और डेश का उपयोग शामिल है। लिपि को स्वरों का उपयोग करने वाली पहली लिपि भी माना जाता है

सिंधु लिपि उस समृद्ध और जीवंत संस्कृति की याद दिलाती है जो कभी इस क्षेत्र में फलती-फूलती थी। यह लिपि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों और भारत के इतिहास में उनके योगदान का प्रतीक है। सिंधुघाटी लिपि का उपयोग प्राचीन सिंधु (सिंधु) सभ्यता में किया जाता था। लिपि को "सिंधु लिपि" के रूप में भी जाना जाता है। यह एक ऐसी लिपि है जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

### ब्राह्मी लिपि

बौद्ध ग्रंथ 'ललितविस्तार' में 64 प्रकार के लिपियों का उल्लेख है, जिसमें पहला नाम ' ब्राह्मी ' और दूसरा 'खरोष्ठी' है। यह बाएं से दायीं ओर लिखी जाती है। ब्राह्मी एक ऐसी लिपि है जिसका उपयोग भारत की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता है। यह आज उपयोग में आने वाली सबसे पुरानी लिपियों में से एक मानी जाती है। ब्राह्मी का उपयोग संस्कृत, प्राकृत और भारत में बोली जाने वाली कई अन्य भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता था। ब्राह्मी भारत में संस्कृत और अन्य भाषाओं को लिखने के लिए उपयोग की जाने वाली एक लिपि है। इसका नाम ऋषि ब्रम्हा के नाम पर रखा गया है, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने इसका आविष्कार किया था। ब्राह्मी लिपि वैदिक लिपि के बाद भारत की दूसरी सबसे पुरानी लिपि है। ब्राह्मी लिपि का उपयोग प्राचीन और मध्यकालीन भारत में संस्कृत, प्राकृत, तमिल और कन्नड़ सहित कई भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता था। इसका उपयोग थेरवाद बौद्ध धर्म के पवित्र ग्रंथों, पाली कैनन को लिखने के लिए भी किया गया था। ब्राह्मी लिपि का उपयोग अभी भी भारत में बहुत कम लोगों द्वारा किया जाता है, मुख्य रूप से धार्मिक उद्देश्यों के लिए। सर्वप्रथम मौर्य सम्राट अशोक के शिलालेखों में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग लेखन के लिए किया गया है। 1837 ई में सर्वप्रथम अंग्रेज अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने इस लिपि की पहचान कर पढ़ा था।

ब्राह्मी लिपि एक ऐसी लिपि है जिसका उपयोग भारत में संस्कृत और अन्य एशियाई भाषाओं सहित तिब्बती तथा कुछ लोगों के अनुसार कोरियाई लिपि का भी विकास ब्राह्मी लिपि से ही मानी जाती है। इसे "देवनागरी लिपि के रूप में भी जाना जाता है। ब्राह्मी लिपि को भारत में उपयोग की जाने वाली सबसे पुरानी लिपियों में से एक माना जाता है, और माना जाता है कि इसका उपयोग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से किया जाता रहा होगा।

### खरोष्ठी-

प्राचीन गांधार में गांधारी भाषा लिखने के लिए खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया जाता था। यह मुख्य रूप से शाही शिलालेखों और बौद्ध ग्रंथों को लिखने के लिए प्रयोग किया जाता था। लिपि तीसरी शताब्दी से चौथी शताब्दी तक उपयोग में थी । यह लिपि दाएं से बायीं ओर लिखी जाती है। अशोक के शिलालेखों में प्रमुख रूप से शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा में उल्लेखित है । इसके अलावा इस लिपि का उपयोग बेक्ट्रिया, कुषाण साम्राज्य, सोगडिया ओर सिल्क रोड में भी किया गया। कुछ साक्ष्यों के अनुसार 7 वीं शताब्दी तक खोतान और नीमा शहरों में भी इसका प्रयोग देखा गया।

खरोष्ठी लिपि एक प्राचीन लेखन प्रणाली है जिसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप में किया जाता था। ऐसा माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है, जिसका उपयोग ईसा पूर्व दूसरी और तीसरी शताब्दी के दौरान इस क्षेत्र में किया जाता था। चौथी शताब्दी ईसवी तक खरोष्ठी लिपि का उपयोग किया जाता था, जब इसे गुप्त लिपि से बदल दिया गया था। ऐसा मान जाता है कि इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है, जिसका उपयोग भारत में भी किया जाता है।

**अरामाईक लिपि-**

अरामाईक लिपि के बारे में आपने बहुत सुना होगा। यह एक लोकप्रिय लिपि है जो क्रमिक स्वरों और व्याकरण के साथ लिखी जाती है। अरामाईक लिपि का इतिहास लगभग 1500 साल पुराना है। यह लिपि प्राचीन भारत में प्रचलित थी और आज भी प्रचलित है। अर्मेनियाई भाषा लिखने के लिए आमायिक लिपि का प्रयोग किया जाता है। स्क्रिप्ट को "एक्मि आडज़िन स्क्रिप्ट" या "मेस्रोबियन स्क्रिप्ट के रूप में भी जाना जाता है। आरमयिक लिपि की उत्पत्ति ग्रीक वर्णमाला से मानी जाती है। अरुणाचल प्रदेश भारत के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित एक राज्य है। राज्य कई स्वदेशी समुदायों का घर है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अलग भाषा और लिपि है। अरामायिक लिपि राज्य में उपयोग की जाने वाली कई लिपियों में से एक है। अरामाईक लिपि का उपयोग आका लोगों द्वारा किया जाता है, जो राज्य के दक्षिणी भाग में रहते हैं। लिपि में प्रत्येक वर्ण का अपना अनूठा अर्थ है, और इसका उपयोग आका, असमिया, बंगाली, बोडो, गारो और कोच सहित विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए किया जा सकता है। अरामाईक भाषा और संस्कृति को जीवित रखने के लिए लिपि के उपयोग को संरक्षित और बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

भारत में एक छोटे से समुदाय द्वारा उपयोग की जाने वाली एक आकर्षक लेखन प्रणाली है। आरमयिक लिपि एक अक्षरांश है, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक वर्ण एक व्यंजन और एक स्वर दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। स्क्रिप्ट में केवल 40 से अधिक वर्ण हैं, जो बाएं से दाएं लिखे गए हैं। माना जाता है कि इस लिपि की उत्पत्ति 7वीं शताब्दी में हुई थी, और इसका उपयोग आज भी लगभग 1,000 लोगों के समुदाय द्वारा किया जाता है। जबकि लिपि का व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है, यह भारत की समृद्ध भाषाई विविधता का एक दिलचस्प उदाहरण है।

**संस्कृत -**

भारत की सबसे पुरानी और सबसे पवित्र भाषाओं में से एक है। इसकी उम्र और प्रभाव के कारण इसे अक्सर "सभी भाषाओं की जननी" कहा जाता है। धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रंथों में सदियों से संस्कत का प्रयोग होता रहा है और इसकी लिपि को प्रायः पवित्र और सुंदर माना जाता है। संस्कृत का उपयोग स्कूलों और विश्वविद्यालयों के साथ-साथ कुछ सरकारी कार्यालयों में भी किया जाता है। हालाँकि संस्कृत पहले की तरह व्यापक रूप से नहीं बोली जाती है, फिर भी यह भारतीय संस्कृति और समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संस्कृत भाषा का अर्थ है- एक परिपूर्ण भाषा। संस्कृत एक प्राचीन भाषा है जिसका प्रयोग भारत में कई सदियों से किया जाता रहा है। यह एक बहुत ही सुंदर और काव्यात्मक भाषा है । बहुत से लोग आज भी संस्कृत का अध्ययन करते हैं, और इसे भारत की सबसे महत्वपूर्ण भाषाओं में से एक माना जाता है।

सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध संस्कृत लिपि देवनागरी लिपि है। यह अधिकांश संस्कृत ग्रंथों और पुस्तकों में प्रयुक्त लिपि है। यह हिंदू शास्त्रों, वेदों में प्रयुक्त लिपि भी है। अन्य लोकप्रिय संस्कृत लिपियों में बंगाली, गुरुमुखी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, तमिल और तेलुगु लिपियाँ शामिल हैं। इन लिपियों में से प्रत्येक का अपना अनूठा इतिहास ओर उत्पत्ति है। संस्कृत भाषा बहुत पुरानी भाषा है, और यह सदियों से कई अलग-अलग लिपियों में लिखी गई है।

लिपि का चुनाव अक्सर उस क्षेत्र पर निर्भर करता है जहाँ भाषा का प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, देवनागरी लिपि का उपयोग मुख्य रूप से उत्तर भारत में किया जाता है, जबकि बंगाली लिपि का उपयोग पूर्वी भारत में किया जाता है। दक्षिण भारत में संस्कृत के लिए आमतौर पर तमिल और तेलुगु लिपियों का प्रयोग किया जाता है। हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में संस्कृत भाषा का बहुत महत्व है। कई हिंदू शास्त्र और ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं। बुद्ध ने अपने कुछ उपदेश संस्कृत में भी दिए। संस्कृत बहुत ही सुंदर और काव्यात्मक भाषा है। यह बहुत संक्षिप्त और संक्षिप्त भी है। संस्कृत भाषा की कई अलग-अलग बोलियाँ हैं, लेकिन सबसे लोकप्रिय और आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बोली पाणिनि बोली है। पाणिनि बोली शास्त्रीय संस्कृत के समान है जो प्राचीन भारत में उपयोग की जाती थी। यह वह बोली भी है जिसका उपयोग वेदों, हिंदू शास्त्रों में किया जाता है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में संस्कृत भाषा का बहुत महत्व है।

**प्राकृत –**

प्राकृत लिपि दक्षिण एशिया में प्रयुक्त होने वाली एक प्राचीन लिपि है। इसे "ग्रन्थ" लिपि के रूप में भी जाना और उपयोग किया जाता है । इसका उपयोग संस्कृत, पाली, प्राकृत और तमिल सहित कई भाषाओं को लिखने के लिए किया गया था। लिपि का उपयोग आधुनिक भारतीय भाषाओं, जैसे हिंदी, मराठी और बंगाली में भी किया जाता है। प्राकृत एक प्राचीन लिपि है जिसका उपयोग भारत में किया जाता था। इसे देवनागरी लिपि का अग्रदूत माना जाता है, जो आज भी प्रयोग की जाती है। जबकि प्राकृत की सटीक उत्पत्ति स्पष्ट नहीं है, यह माना जाता है कि यह तीसरी या चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास उभरी है। लिपि का उपयोग पाली, प्राकृत और संस्कृत सहित विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए किया गया था। प्राकृत का उपयोग 11 वीं शताब्दी तक जारी रहा, जब इसे देवनागरी द्वारा प्रतिस्थापित किया जाने लगा। जबकि प्राकृत का उपयोग कम हो गया था, इसे पूरी तरह से कभी नहीं छोड़ा गया था। इसका उपयोग धार्मिक ग्रंथों ओर साहित्य के अन्य कार्यों के लिए किया जाता रहा। आज, प्राकृत में रुचि का पुनरुद्धार हो रहा है, और यह एक बार फिर से कुछ विद्वानों और लेखकों द्वारा उपयोग की जा रही है। अशोक के शिलालेखों की लिपि 'ब्राह्मी' और दूसरा 'खरोष्ठी' है। ये बाएं से दायीं ओर लिखी जाती हैं। इसी को भाषा

वैज्ञानिक पहली प्राकृत कहकर पुकारते हैं। इस भाषा का काल 500 ईपू से 100 ईपू तक माना जाता है। महावीर स्वामी ने अपना उपदेश प्राकृत भाषा के अर्धमगधी में दिया था।

प्राकृत लिपि भारत में प्रयुक्त लेखन का एक प्राचीन रूप है। ऐसा माना जाता है कि इसका उपयोग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के रूप में किया गया था। माना जाता है कि लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इसके व्याकरण का नाम प्राकृत प्रकाश है। जिसमें इसके 4 भेद बताए गए हैं।

1. महाराष्ट्री
2. पैशाची
3. मगधी
4. शौरसेनी

प्राकृत लिपि का उपयोग प्राकृत, संस्कृत और पाली सहित कई अलग-अलग भाषाओं को लिखने के लिए किया गया था। इस लिपि को गौड़ी लिपि के नाम से भी जाना जाता है।

**पाली -**

पाली लिपि एक प्राचीन लेखन प्रणाली है जिसका उपयोग पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के दौरान दक्षिण एशिया में किया गया था। यह लिपि ब्राह्मी लिपि से ली गई है, जिसका उपयोग उसी समय अवधि के दौरान भारत में किया गया था। पाली एक भारतीय भाषा है जिसका उपयोग थेरवाद बौद्धों द्वारा एक पवित्र भाषा के रूप में किया जाता था। लिपि को "पाली केननिकल वर्णमाला" के रूप में भी जाना जाता है और इसका उपयोग थेरवाद बौद्ध धर्म के पवित्र ग्रंथों पाली केनन को लिखने के लिए किया जाता है।

पाली लिपि की अनेक विशिष्ट विशेषताएं हैं। अक्षरों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है, अधिकांश अन्य भारतीय लिपियों के विपरीत, जो बोली जाने वाली भाषा के अनुसार व्यवस्थित होती हैं। यह पाली लिपि को उन लोगों के लिए सबसे सुलभ और उपयोगकर्ता के अनुकूल लिपियों में से एक बनाता है जो इसे सीखना चाहते हैं। विशेषक चिह्नों के प्रयोग में भी या लिपि अद्वितीय है। ये छोटे-छोटे चिह्न होते हैं जिनका प्रयोग उच्चारण को दर्शाने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, पाली अक्षर "का" का उच्चारण या तो कठोर "क" ध्वनि के रूप में या नरम "जी" ध्वनि के रूप में किया जा सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या एक विशेषक का उपयोग किया गया है। यह पाली लिपि को बहुत सटीक और पढ़ने में आसान बनाता है। पाली लिपि थेरवाद बौद्ध परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और दुनिया भर में लाखों लोगों द्वारा इसका उपयोग किया जाता है। यदि आप इस प्राचीन लेखन प्रणाली के बारे में अधिक जानने में रुचि रखते हैं, तो ऑनलाइन कई संसाधन उपलब्ध हैं।

पाली के प्रसिद्ध वैयाकरण कच्चायन के अनुसार पाली में 8 स्वर तथा 33 व्यंजन होते हैं। मोगलायान के अनुसार 10 स्वर तथा 33 व्यंजन होते हैं। पाली कैनन, थेरवाद बौद्ध धर्म के धर्मग्रंथ, पाली में लिखे गए हैं। पाली केनन सबसे पुराना बौद्ध धर्मग्रंथ है, और एकमात्र बौद्ध धर्मग्रंथ है जो आज भी उपयोग में है। पाली का उपयोग कुछ महायान बौद्ध परंपराओं में एक साहित्यिक भाषा के रूप में भी किया जाता है। पाली लिपि का प्रयोग मुख्य रूप से श्रीलंका और थेरवाद बौद्ध देशों में होता है।

**मगधी -**

मगधी लिपि भारतीय उपमहाद्वीप में प्रयुक्त होने वाली लिपि है। इसे ब्राह्मी लिपि से व्युत्पन्न माना जाता है। मगधी का उपयोग मगध भाषा लिखने के लिए किया गया था, और इसका उपयोग मगध के क्षेत्र में, वर्तमान बिहार, भारत में किया गया था। मगध भाषा अब बोली नहीं जाती है, और लिपि का उपयोग नहीं किया जाता है।

मगधी लिपि प्राचीन भारत के मगध क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली एक लिपि है। लिपि को "पाली लिपि" या "प्राकृत लिपि" के रूप में भी जाना जाता है। मगधी लिपि को ब्राह्मी लिपि का वंशज माना जाता है। मगधी लिपि का उपयोग पाली, प्राकृत और मगधी सहित कई भाषाओं को लिखने के लिए किया गया था। लिपि को नेपाल और श्रीलंका के शिलालेखों से भी जाना जाता है। मगधी लिपि को ब्राह्मी लिपि की ही एक शाखा माना जाता है। ब्राह्मी लिपि को देवनागरी लिपि सहित कई लिपियों कर पूर्वज माना जाता है, जिसका उपयोग हिंदी ओर बंगाली लिपि लिखने के लिए किया जाता है। मगधी लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती है। लिपि संकेतों की एक श्रृंखला से बनी है, जिन्हें "अक्षर" के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक अक्षर एक व्यंजन ध्वनि के साथ- साथ एक स्वर ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है। माना जाता है कि मगधी लिपि का उपयोग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 5वीं शताब्दी सीई तक किया गया था। 5 वीं शताब्दी सीई में मगध क्षेत्र में लिपि का उपयोग बंद हो गया, जिसे देवनागरी लिपि ने बदल दिया।

**तिगलिरि -**

तिगलिरि एक लिपि है जिसका उपयोग तेलुगु भाषा लिखने के लिए किया जाता है। यह दक्षिण भारत में उपयोग की जाने सबसे लोकप्रिय लिपियों में से एक है लिपि को ग्रंथ के रूप में भी जाना जाता है और इसका प्रयोग संस्कृत हिंदी और मराठी सहित कई अन्य भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता है।

इसके अलावा तिगलिरि लिपि इथियोपिया के टिग्लिरी लोगों द्वारा

उपयोग की जाने वाली एक लेखन प्रणाली है। यह लैटिन वर्णमाला पर आधारित है और इसका उपयोग 19वीं शताब्दी से किया जा रहा है। तिगलिरि लिपि का उपयोग टिम्लिरी भाषा लिखने के लिए किया जाता है, जो एफ्रो एशियाटिक परिवार की कुशेटिक शाखा की सदस्य है। तिगलिरि लिपि इथियोपिया की कुछ लेखन प्रणालियों में से एक है जो इथियोपियाई ऑर्थोडॉक्स चर्च की गीज़ लिपि पर आधारित नहीं है। इसके बजाय, यह लैटिन वर्णमाला पर आधारित है। यह अम्हारिक और अंग्रेजी जैसी अन्य भाषाओं के बोलने वालों के लिए इसे ओर अधिक सुलभ बनाता है। तिगलिरि लिपि इस मायने में भी अनूठी है कि यह उन कुछ लेखन प्रणालियों में से एक है जो अर्थ-शब्दांश दृष्टिकोण का उपयोग करती है। इसका मतलब यह है कि प्रत्येक अक्षर या तो व्यंजन या स्वर का प्रतिनिधित्व कर सकता है। यह तिगलिरि लिपि को अन्य लेखन प्रणालियों की तुलना में अधिक लचीला और कुशल बनाता है। तिगलिरि लिपि द्विग्लिरी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

तिगलिरि लिपि की खोज 20वीं सदी की शुरुआत में फ्रांसीसी विद्वान पॉल पेलियट ने की थी। ऐसा माना जाता है कि इसका उपयोग टिग्लिरी लोगों द्वारा किया जाता था, जो उस क्षेत्र में रहते थे जो अब उत्तरपूर्वी अफगानिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान है। लिपि में लगभग 200 प्रतीक है, जिनमें से अधिकांश विचारधारात्मक हैं। लिपि अच्छी तरह से समझ में नहीं आती है, लेकिन यह लेखन का एक रूप माना जाता है जिसका उपयोग धार्मिक ग्रंथों के लिए किया जाता था। यह भी संभव है कि लिपि का उपयोग कर्मकांड के प्रयोजनों के लिए किया गया था, क्योंकि कुछ प्रतीक विशिष्ट वस्तुओं या घटनाओं से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। लिपि का उपयोग शायद रोजमर्रा के संचार के लिए नहीं किया गया था, क्योंकि कुछ प्रतीक हैं जो आम शब्दों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि स्क्रिप्ट का उपयोग केवल कुछ ही लोगों द्वारा किया गया था, या क्योंकि इसका उपयोग विशेष अवसरों के लिए किया गया था। तिगालिरि लिपि एक महत्वपूर्ण खोज है, क्योंकि यह तिम्लिरी लोगों की संस्कृति और धार्मिक विश्वासों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह उस लिपि के कुछ उदाहरणों में से एक है जिसके बारे में माना जाता है कि इसका उपयोग इस क्षेत्र में किया जाता था।

जनता हेतु जनता द्वारा
जनता ने बनाया संविधान।
छब्बीस जनवरी उन्नीस सौ
पचास में लागू, बढ़ा मान।।

राष्ट्रपति भारत के पहले
डॉ राजेन्द्र प्रसाद था नाम
अनुमोदित कर कानून को
महत्वपूर्ण किया है काम।।

संविधान निर्माता आंबेडकर
पढे-लिखे थे महान।
लिख कानून भारत में अच्छा
जनता को दिया है वरदान।।

दीन दुखी गरीबों को मिला
पूरा-पूरा है अधिकार।
अपना देश अपनी सरकार
बनाया सबको भागीदार।।

पढ़ने लिखने का मिला अधिकार
जनता का हुआ उद्धार।
ऊंच नीच और भेदभाव पर
चलाई कानून की तलवार।।

दीन दुखी गरीब जनता का
तब बढ़ा भारत में मान।
जो लागू किया संविधान
मेरा भारत है कितना महान।।

द्रोहित शिवहरे
सहा प्रबन्धक
रायपुर क्षेत्र

# विश्व मंच पर हिंदी

राजश्री सेच्या, मुख्य प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर

हिंदी लगभग 1000 साल प्राचीन भाषा है जो कि भाषा ही नहीं एक संवाद का माध्यम भी है। हिंदी में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है और जो लिखा जाता है, वही बोला जाता है।

विश्व पांच प्रायद्वीपों का एक समूह है जिसमें लगभग 240 देश है और लगभग 7000 भाषाएं बोली जाती हैं। इन भाषाओं में जिस भाषा का जितना भी ज्यादा वर्चस्व होगा, व्यापार एवं अन्य कार्यों के लिए वार्तालाप का साधन उतना ही सुगम होगा।

## रूपरेखा

देश की एकता के लिए एक भाषा का होना जितना आवश्यक है। उससे अधिक आवश्यक है देश भर के लोगों में देश के प्रति विशुद्ध प्रेम तथा अपनापन होना। अगर आज हिन्दी भाषा मान ली गई है तो इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा हो सकती है।

विदेशों में लगभग 154 देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ायी जाती है। इनमें अप्रवासी भारतीयों के अलावा स्थानीय छात्र भी हिंदी का अध्ययन करते हैं। एक समय था जब हिंदी का अध्ययन साहित्य,संस्कृति और एक भाषा के रूप में प्रमुखता से किया जाता था। पर आज हिंदी एक व्यावसायिक,व्यावहारिक भाषा के रूप में भी अपनायी जा रही है। साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति, मान्यताओं और भावनात्मक धरोहरों को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया जाता है, वहीं रोजी-रोटी के लिए प्रयोजन मूलक हिंदी को अपनाया जा रहा है। विदेशों में हिंदी, सांस्कृतिक-दूत का काम भी करती है। कई विदेशी विद्वान हिंदी की विशिष्टता की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने इस भाषा पर अपना प्रभुत्व सिद्ध किया। उन्होंने हिंदी में रचनाएं कीं, साथ ही हिंदी से अपनी भाषा में और अपनी भाषा से हिंदी में अनुवाद किये। इस तरह हिंदी ज्ञान-विज्ञान और साहित्य-संस्कृति के आदान-प्रदान का माध्यम बन गयी।

विदेशों में हिंदी की स्थिति को तीन वर्गों में देखा जा सकता है। पहले वर्ग में वे लोग आते हैं जो जीविकोपार्जन के लिए पीढ़ियों पहले भारत से विदेश आ बसे। हिंदी को अपनी अस्मिता के साथ उन्होंने जोड़े रखा। इन देशों में मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों को शामिल किया जा सकता है। मॉरीशस में 'आर्योदय', 'आक्रोश' और 'इंद्रधनुष' नामक हिंदी पत्रिकाएं नियमित प्रकाशित होती हैं। फीजी में पं. कमला प्रसाद मिश्र, पं. काशीराम कुमुद, बाबू कुंवर सिंह, गुरु दयाल शर्मा के नाम सुपरिचित हैं। सूरीनाम में अमर सिंह रमण, जीत नारायण, सूर्य प्रसाद वीरे प्रमुख नाम हैं। इन देशों में हिंदी भाषी भारतीय मूल के नागरिकों की संख्या इतनी अधिक है कि वे वहां की राजनीति, प्रशासन और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। वे हिंदी के लिए बहुत योगदान दे रहे हैं। सम्भवत: यही कारण होगा कि दूसरा और चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में और पांचवां त्रिनिदाद में आयोजित किया गया। विश्व समुदाय के सामने हिंदी की व्यापक स्वीकृति के लिए ये प्रभावी प्रयास रहे हैं।

दूसरे वर्ग में, भारत के पड़ोसी देश हैं, जहां अनायास ही हिंदी, भाषा के रूप में विद्यमान है। इन देशों में नेपाल, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका, पाकिस्तान, चीन आदि देशों का समावेश हो सकता है।

तीसरे वर्ग में ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, बेल्जियम, चेकोस्लावाकिया, रूस, जापान आदि देशों को रखा जा सकता है। इन देशों में भारतीयों की संख्या काफी बढ़ रही है। व्यापार,रोजगार आदि क्षेत्रों में भारतीय अप्रवासियों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। साथ ही, इन देशों के हिंदी के विद्वान काफी उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं।

हिंदी के अध्ययन की सुविधा वर्तमान में, भारत से बाहर विश्व में कई विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है। एक सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका में 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी अध्ययन के केन्द्र हैं, जिनमें से 13 तो शोध स्तर के हैं। हाल ही में, अमेरिका की पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी ने एम.बी.ए. के छात्रों को हिंदी का दो वर्षीय कोर्स अनिवार्य कर दिया है, ताकि अमेरिका को हिंदुस्तान में व्यापार बढ़ाने में भाषा सम्बन्धी कठिनाइयां न हों।

हिंदी में कई विदेशी भाषाओं के शब्द इस तरह रच-बस गये हैं कि उन्हें हिंदी से अलग करना अब लगभग असम्भव सा हो गया है। विदेशी विद्वानों ने हिंदी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। साहित्य, संस्कृति और भाषा का अनन्य सम्बन्ध होता है। कई विदेशी साहित्यकारों ने हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया।

हिंदी भाषा और साहित्य के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले फादर कामिल बुल्के का योगदान अमर रहेगा। इनके द्वारा तैयार किया गया अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष सर्वाधिक ख्याति प्राप्त सन्दर्भ ग्रन्थ है।

डॉ. रूपर्ट स्नेल इंग्लैण्ड में रहकर हिंदी सेवा में जुटे हैं। रूपर्ट स्नेल ने सत्रहवें वर्ष में भारतीय शास्त्रीय संगीत सुना और हिंदी के माध्यम से आनन्द हासिल करने का निश्चय किया। 1974 में विशेष प्रवीणता के साथ हिंदी में बी.ए. किया और 1984 में हिंदी में पी.एच.डी. हासिल की। पहले हिंदी के व्याख्याता हुए और बाद में लंदन विश्वविद्यालय के 'स्कूल ऑफ ओरिएंटल एण्ड अफ्रिकन स्टडीज' में हिंदी के रीडर और विभागाध्यक्ष बने।

अंग्रेजों को भारत में हिंदी सिखाने के लिए 1782 में गिलक्रिस्ट की नियुक्ति की गयी थी। कलकत्ता (कोलकाता) में सेंट विलियम फोर्ड कॉलेज की स्थापना होने पर डॉ. गिलक्रिस्ट को हिंदुस्तानी विभाग का प्रथम प्रोफेसर नियुक्त किया गया। डॉ. मोनियर विलियम ने 1890 में 'हिंदुस्तानी प्राइमर' और 'प्रैक्टिकल हिंदुस्तानी ग्रमर' का 1892 में

रचना की। फेडरिक साइमन ग्रउन ने 1874 के आसपास ब्रज के कई कवियों की कविताओं का छंदबद्ध अनुवाद अंग्रेजी में किया। ग्रउन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक उपलब्धि तुलसीकृत रामचरित मानस का अंग्रेजी अनुवाद है, जो आज भी दुनिया में सबसे प्रामाणिक अनुवाद माना जाता है। प्रो. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर का जन्म 1929 में हुआ। ऑक्सफोर्ड और लंदन विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी का अध्ययन किया। उन्होंने अंग्रेजी हिंदी में पुस्तक लिखी 'मौखिक हिंदी अभ्यास'।

डॉ. आंदोलन स्मेकल चेकोस्लोवाकिया गणराज्य के नागरिक हैं। 18 अगस्त, 1928 को जन्मे डॉ. स्मेकल ने पार्ल्स विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए.किया और बाद में पीएच.डी. की उपाधि हासिल की। डॉ. स्मेकल भारत में चेक गणराज्य के राजदूत रहें। वे हिंदी जगत में अपनी कविताओं के लिए जाने जाते हैं। उनके आठ कवितासंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. स्मेकल ने 'गोदान' का चेक भाषा में अनुवाद भी किया है। वे भारतप्रेम और हिंदी समर्पण के लिए विख्यात रहे। वे हिंदी को अपनी दूसरी मातृभाषा के रूप में मानते रहे हैं।

जर्मनी के लोठार लुत्से हिंदी के विदेशी साहित्यकार के रूप में अत्यंत चर्चित नाम है। 7 सितंबर 1927 को साईलेशिया में जन्में डॉ. लोठार लुत्से हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष रहें। डॉ. लुत्से ने हिंदी कविताओं का जर्मन में अनुवाद किया। डॉ. लुत्से ने हिंदी छात्रों के लिए एक पाठ्य पुस्तक भी तैयार की। उन्होंने अशोक वाजपेयी और विद्या खरे की कविताओं का जर्मन में अनुवाद किया है।

रूस के डॉ. येवर्गनी चेलीशेव का जन्म 27 अक्तूबर, 1921 में हुआ। वे भारती साहित्य व संस्कृति के विद्वान रहे हैं। कविता में उन्हें विशेष रुचि रही। 'आधुनिक हिंदी कविता' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि से विभूषित हुए। उन्होंने रूसी और भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर लगभग 200 पुस्तकों की रचना की। रूस के ही एक अन्य हिंदी विद्वान पी. ए. वारान्निकोव हैं, जिन्होंने रामायण का रूसी भाषा में अनुवाद किया है।

प्रोफेसर मारिया बुस्की का जन्म पोलैण्ड में 1937 में हुआ। वे भारत में पोलैण्ड के राजदूत भी रहे। हिंदी और संस्कृत से पोलिश भाषा में सराहनीय अनुवाद कार्य उन्होंने किया। 1966 में बनारस विश्वविद्यालय से पीएच.डी. प्राप्त की। उन्होंने कई हिंदीसंस्कृत नाटकों के अनुवाद किये। साथ ही, मनु स्मृति, इडा स्मृति आदि का पोलिश में अनुवाद किया।

जापान में हिंदी को लोकप्रिय भाषा बनाने में निवाको कोईजुका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मिनाको ने हिंदी सिनेमा के माध्यम से जापान में हिंदी शिक्षा में क्रान्तिकारी सम्भावनाओं की तलाश की। टी.वी. और नाटकों के माध्यम से हिंदी शिक्षण की व्यापक सामग्री तैयार की। रामायण को हिंदी पाठ्य सामग्री के तौर पर तैयार किया गया। उनके नेतृत्व में भारत के प्रमुख शहरों में हिंदी नाटकों का सफल मंचन किया गया है। प्रोफेसर क्यूमा दोई ने जापानी हिंदी और हिंदीजापानी शब्दकोष का निर्माण कर दोनों भाषाओं को एक दूसरे के करीब ला दिया है। प्रो. दोह ने 'गोदान' का जापानी में अनुवाद किया है। इनके अलावा डॉ. तोजियो मिजेकेनी मूल रूप से हिंदी में कहानी लिखते रहे। उन्होंने पंजाबी भाषा में पी.एच.डी. की। प्रो. तोशियो तनाका ने भारत में हिंदी का अध्ययन किया और अब भी वे हिंदी के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

विदेशों में कई हिंदी विद्वानों ने हिंदी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कनाडा की डॉ. कैथरिन जी. हैन्सन जापान के प्रोफेसर क्योंमा डाई, डॉक्टर तोसियो मजाकिनी प्रोफेसर तोशियों तनाका इत्यादि कई नाम है हंगेरियन में अनुवाद कार्य भी किया है। चीन के प्रो.जिन डिंगहान ने हिंदी सीखी और रामचरित मानस का चीनी में अनुवाद किया। चीन के ही एक अन्य विद्वान डॉ. गीनशेंवा ने वाल्मीकि रामायण का चीनी अनुवाद किया। प्रो. जोर्जो मिलाएनेति ने हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण रीति कालीन कवियों का इतालवी में अनुवाद किया है।ब्रिटेन में हिंदी की तमाम संस्थाएं भी हैं।

हिंदी भाषा ने सभी भारतीयों को एक सूत्र में पिरोया है। अमेरिका में बेहतर आजीविका के लिए आये मूल भारतीयों में हिंदी के उत्कृष्ट रचनाकार भी हैं। हिंदी पत्रपत्रिकाओं के बारे में उनमें गहरी उत्कंठा लगी।

कनाडा में भी हिंदी भाषा और साहित्य को लेकर बहुत उत्साह है। डॉ. स्नेह ठाकुर 'वसुधा' नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रही हैं, जिसमें कविताकथा आदि के प्रकाशन के साथ हिंदी भाषा विषयक लेखों को भी प्रमुखता से स्थान दिया जाता है।

विश्व स्तर पर हिंदी साहित्य के माध्यम से जहां दूर-दराज तक फैले आप्रवासियों को आपस में जोड़ने का कार्य किया जा रहा है, वहीं आप्रवासियों की आन्तरिक अनुभूतियां, सांस्कृतिक विरासत, चिन्तन और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हिंदी अपनी सार्थक भूमिका निरंतर निभाती रही है। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि सम्प्रेषण की नव-नवीन तकनीक के साथ तालमेल स्थापित कर हिंदी की भूमिका को और अधिक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा हैं।

गीत संगीत एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के आदान-प्रदान में भी हिंदी का महत्व काफी बढ़ चला है आजकल हम काफी देश के संस्कृत समूहों को हमारे हिंदी भाषण के गानों पर ठुमके लगाते हुए देख सकते हैं।

वस्तुत: स्थिति यह है कि आज हिंदी एक अग्रणी भाषा है जिसको किसी भी तरीके से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है एवं विश्व मंच पर शीर्ष की भाषाओं में हिंदी का स्थान है एवं यथोचित यथोचित सम्मान दिया जाता है।

# हरित वित्त या ग्रीन फाइनेंस

सुमन पूनिया, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय एनसीआर - दिल्ली

**अवलोकन**

हरित वित्त या ग्रीन फाइनेंस, वे संरचित वित्तीय गतिविधि है, जिसे बेहतर पर्यावरणीय परिणामों को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया हो। हरित वित्त या ग्रीन फाइनेंस में विभिन्न प्रकार के ऋण, ऋण संरचनाएं और निवेश शामिल हैं जिनका उपयोग हरित पहल के विकास को बढ़ावा देने या अधिक पारंपरिक उद्यमों के जलवायु प्रभाव को कम करने या दोनों के संयोजन के लिए किया जाता है। हरित वित्त पोषण का मुख्य उद्देश्य पर्यावरणीय पहलुओं और कम जोखिम धारणाओं को आंतरिक बनाना है। हमारे प्रधानमंत्री ने हाल ही में घोषणा की है कि सीओपी26 जलवायु शिखर सम्मेलन में देश 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करेगा।

**ग्रीन फाइनेंस क्या है?**

- सार्वजनिक, निजी और गैर-लाभकारी क्षेत्रों से सतत विकास पहल के लिए कम कार्बन, टिकाऊ और समावेशी मार्गों की ओर एक हरित आर्थिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए,हरित वित्त उन वित्तीय साधनों को संदर्भित करता है,जिनकी आय का उपयोग ऐसी परियोजनाओं और पहलों, पर्यावरण उत्पादों और नीतियों के लिए किया जाता है।

**हरित वित्त का उद्देश्य:**

- हरित वित्त का उद्देश्य पर्यावरणीय बाह्यताओं को आंतरिक बनाना और जोखिम धारणाओं को कम करना है। बड़े पैमाने पर, आर्थिक रूप से मजबूत हरित वित्त प्रोत्साहन यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि हरित निवेश पारंपरिक निवेशों पर प्राथमिकता लेता है जो कि सतत विकास पैटर्न का समर्थन करते हैं।
- हरित वित्त संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) द्वारा उल्लिखित सभी सतत विकास मानदंडों को शामिल करता है और पर्यावरणीय उद्देश्यों की ओर बहने वाले निवेश की पारदर्शिता और दीर्घकालिक सोच को बढ़ावा देता है।

**ग्रीन फाइनेंस के क्या लाभ हैं?**

ग्रीन फाइनेंस न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि यह पर्यावरण के लिए बहुत फायदेमंद है। लाभ नीचे सूचीबद्ध हैं-

- हरित वित्त को व्यापक रूप से बढ़ावा देने के लिए नियमित कॉरपोरेट निवेश पर हरित या पर्यावरणीय प्रयासों को प्राथमिकता देना शामिल है।
- वित्त के इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने से खुलेपन को बढ़ावा मिलता है और पर्यावरणीय लक्ष्यों के लिए निवेश की एक स्थिर धारा को बढ़ावा मिलता है।
- इस तरह के वित्त पोषण के विस्तार के परिणामस्वरूप अधिक रोजगार और व्यवसाय के अवसर पैदा होंगे।
- यह सब अंततः मानव सुविधाओं और जीवन में सुधार के साथ-साथ प्रकृति को खतरे में डाले या नुकसान पहुंचाए बिना सतत विकास में परिणत होगा।

**हरित वित्त के अंतर्गत आने वाली परियोजनाएं नीचे सूचीबद्ध हैं:**

- परिपत्र आर्थिक पहल
- प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण
- ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा
- प्राकृतिक संसाधनों और भूमि का सतत उपयोग
- जैव विविधता का संरक्षण

**हरित वित्त पोषण से संबंधित चुनौतियाँ**

हरित वित्त से संबंधित कुछ चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

- अंतरराष्ट्रीय मानदंडों का अभाव और हरित वित्त की एक साझा अवधारणा, साथ ही सतत विकास के उद्देश्यों और राष्ट्रीय निवेश रणनीति की सर्वोच्च प्राथमिकताओं के बीच एक कमजोर संबंध
- हरित वित्त के लिए प्रत्यक्ष नियामक और कानूनी ढांचे का अभाव

**क्या जलवायु वित्त और हरित वित्त समान हैं?**

- जलवायु वित्त" हरित वित्त का एक उपसमूह मात्र है।
- अधिक सीमित अर्थ में "जलवायु वित्त" शब्द सार्वजनिक वित्त पोषण को संदर्भित करता है जो जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) के माध्यम से जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए बहुपक्षीय कार्यों का समर्थन करता है।
- यूएनएफसीसीसी के अलावा जलवायु वित्त के लिए एक उभरते हुए मानक ढांचे की स्वीकृति बढ़ रही है।

**हरित वित्त पोषण की रूपरेखा:-**

- आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 ने भारत में हरित वित्त पोषण बढ़ाने के लिए एक रूपरेखा का सुझाव दिया है, यह देखते हुए कि भारत अंतरराष्ट्रीय स्थायी वित्त परियोजनाओं में भाग लेता है।
- सर्वेक्षण में भारतीय रिजर्व बैंक और वित्त मंत्रालय की नियामक गतिविधियों पर भी जोर दिया गया।
- सरकार और केंद्रीय बैंक सार्वजनिक नीति के मामले में हरित वित्त को प्राथमिकता देने लगे हैं।
- हरित वित्तपोषण के उदाहरणों में हरित भवनों और अपशिष्ट प्रबंधन जैसी ऊर्जा-कुशल पहल शामिल हैं, जिसमें पुनर्चक्रण, कुशल निपटान और ऊर्जा रूपांतरण शामिल हैं। स्वच्छ परिवहन भी हरित वित्तपोषण की श्रेणी में आता है क्योंकि यह ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है।
- आर्थिक सर्वेक्षण ने इस बात पर जोर दिया है कि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से जुड़े वित्तीय जोखिम सूक्ष्म और मैक्रोप्रूडेंशियल निर्णय लेने दोनों के साथ मुद्दों को उठाते हैं।
- इस प्रकार की पहलों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, नए वित्तीय संस्थान और वित्तीय तंत्र जिनमें ग्रीन बॉन्ड और कार्बन मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स शामिल हैं, का गठन किया जा रहा है।
- इन जोखिमों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने और स्थायी वित्त और जलवायु जोखिम के क्षेत्र में नियामक उपायों का नेतृत्व करने के लिए, आरबीआई ने अपने विनियमन विभाग के तहत "टिकाऊ वित्त समूह" नामक एक नया अनुभाग स्थापित किया है।
- एक आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, यह समूह अंतरराष्ट्रीय मानक-सेटिंग एजेंसियों, अन्य केंद्रीय बैंकों, अन्य वित्तीय क्षेत्र के अधिकारियों और सरकार के साथ स्थायी वित्त या जलवायु जोखिम से जुड़े मामलों पर सहयोग करता है।
- इस प्रकार की पहलों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, नए वित्तीय संस्थान और वित्तीय तंत्र जिनमें ग्रीन बॉन्ड और कार्बन मार्केट

इंस्ट्रूमेंट्स शामिल हैं, का गठन किया जा रहा है।

### ग्रीन बांड

★ हरित परियोजनाएं जो अक्षय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, स्वच्छ परिवहन, या जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में टिकाऊ और सामाजिक रूप से जिम्मेदार हैं, विशेष रूप से हरित बांड के साथ धन या धनवापसी के लिए अभिप्रेत हैं।

★ पिछले पांच वर्षों में, ग्रीन बॉन्ड और विशेष रूप से जलवायु बॉन्ड के लिए बाजार में विस्फोट हुआ है क्योंकि निवेशकों को हरित ऋण साधनों के साथ पारिस्थितिक रूप से अनुकूल पहल के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

★ ग्रीन बॉन्ड और ऋण की लोकप्रियता के कारण, 2019 में जारी की गई राशि में लगभग 50% की वृद्धि हुई और 2020 तक यह 250 बिलियन अमरीकी डालर को पार कर गई।

### भारत में हरित वित्त

- भारत में, हरित वित्तपोषण पर ध्यान 2007 में शुरू हुआ।
- दिसंबर 2007 में प्रकाशित "कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सतत विकास और बैंकों की गैर-वित्तीय रिपोर्टिंग भूमिका" शीर्षक वाली एक अधिसूचना में, रिज़र्व बैंक सतत विकास के ढांचे में ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के महत्व पर प्रकाश डालता है।
- जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) को 2008 में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए नीति के व्यापक ढांचे की रूपरेखा तैयार करने के लक्ष्य के साथ बनाया गया था।
- भारत में हरित वित्तपोषण के प्रभारी कई एजेंसियों के लिए एक समन्वय निकाय के रूप में, 2011 में वित्त मंत्रालय के भीतर जलवायु परिवर्तन वित्त इकाई (सीसीएफयू) की स्थापना की गई थी।
- इस संबंध में 2012 के बाद से स्थिरता प्रकटीकरण आवश्यकताओं को अपनाना मुख्य रणनीतिक बदलाव था।
- इसके अतिरिक्त, रिज़र्व बैंक हरित वित्तपोषण गतिविधियों को सहायता और आगे बढ़ाने के लिए नीतिगत परिवर्तनों को सक्रिय रूप से लागू कर रहा है। 2015 में अपने प्राथमिकता क्षेत्र ऋण कार्यक्रम में लघु नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग को जोड़ा गया था।

### ग्रीन फाइनेंसिंग के लिए फंड

★ इस प्रकार की पहल के लिए धन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए वित्तीय साधन, जैसे कि ग्रीन बॉन्ड, कार्बन मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स (जैसे कार्बन टैक्स), और नए वित्तीय संस्थान (जैसे ग्रीन बैंक और ग्रीन फंड) बनाए जा रहे हैं।

★ राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा कोष (एनसीईएफ) और राष्ट्रीय अनुकूलन कोष (एनएएफ) जलवायु परिवर्तन के लिए हरित वित्तपोषण के मुख्य स्रोत हैं।

★ जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना ने आठ मिशन स्थापित किए, जिन्हें भारत सरकार से पैसा मिलता है।

★ वित्त मंत्रालय के पास अब एक जलवायु परिवर्तन वित्त इकाई (सीसीएफयू) है, जो जलवायु परिवर्तन वित्त पोषण से संबंधित सभी मुद्दों के लिए केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करती है।

### भारत में हरित वित्तपोषण पहल

- भारत में कई वित्तीय और आर्थिक प्रोत्साहन अपनाए गए हैं।
- ये प्रोत्साहन 2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता का 40% प्राप्त करने और 2005 के स्तर से नीचे 33 से 35% तक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की तीव्रता को कम करने के लिए पेरिस समझौते 2015 के तहत भारत के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए हैं।
- यूएनएफसीसीसी के वित्तपोषण वाहन, ग्रीन क्लाइमेट फंड का गठन 2010 में किया गया था।
- भारत ने धनी देशों को पेरिस समझौते के तहत जलवायु वित्त पोषण के लिए सालाना 100 अरब डॉलर की अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए प्रेरित किया है।
- अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को प्रोत्साहित किया जाता है, सरकार स्वचालित पद्धति के तहत 100 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देती है।
- प्रदर्शन उपलब्धि और व्यापार (पीएटी) प्रणाली: सरकार द्वारा लागू की गई पीएटी योजना का उद्देश्य 13 ऊर्जा-गहन क्षेत्रों में कार्बन उत्सर्जन को कम करना है।
- भारत का राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (आईएनडीसी): पेरिस समझौते के हिस्से के रूप में, जिस पर हस्ताक्षर करने वाले देशों ने 2015 में पुष्टि की, भारत ने विशिष्ट लक्ष्यों के साथ एक एनडीसी दायर किया।
- अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी उत्सर्जन) की तीव्रता को 2005 के स्तर से 2030 तक 33-55% कम करने के लिए
- 2030 तक, गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित ऊर्जा स्रोतों को विद्युत शक्ति की कुल स्थापित क्षमता का लगभग 40% होना चाहिए।
- 2030 तक, वन और वृक्षों के आवरण की मात्रा बढ़ाने के लिए और 2.5-3 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर अतिरिक्त कार्बन सिंक प्रदान करना।
- अक्षय ऊर्जा को प्रोत्साहन: परियोजनाओं के लिए सौर और पवन बिजली की अंतरराज्यीय बिक्री के लिए, सरकार ने अंतरराज्यीय प्रेषण प्रणाली (आईएसटीएस) शुल्क को समाप्त कर दिया है और अक्षय ऊर्जा पार्कों की स्थापना की है और अक्षय खरीद दायित्व (आरपीओ) और राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन के प्रस्ताव की व्यवस्था की है।

### निष्कर्ष

➢ ग्रीन फाइनेंसिंग में वृद्धि कई क्षेत्रों से होती है, उदाहरण के लिए, सहयोग के दायरे का विस्तार करना, वित्तीय बाजारों, बैंकों, निवेशकों, माइक्रोक्रेडिट संस्थानों, बीमा फर्मों और सरकारी क्षेत्र के साथ-साथ बहु-हितधारक सहयोग में महत्वपूर्ण खिलाड़ियों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया जाना चाहिए।

➢ अधिक से अधिक लोगों को ग्रीन बांड का उपयोग करना चाहिए।

➢ नीली अर्थव्यवस्थाओं के लिए वित्तपोषण जो जलवायु-स्मार्ट हैं और स्थायी प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं।

➢ सार्वजनिक क्षेत्र के वित्तपोषण के बारे में निर्णय लेना एसडीजी के पर्यावरणीय घटक के अनुरूप होना चाहिए।

# हिंदी और बांग्ला का अंतर्संबंध

अंकिता गुप्ता, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय मैसूरु

भारत एक ऐसा देश है, जहां भाषा केवल संवाद का साधन नहीं बल्कि संस्कृतिक पहचान और अपनेपन की प्रतीक है या यूं कहे की भाषा हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है और यह हमें एक खुबसूरत ढंग से एकता के रंगों में रंगती है। भाषा की विविधता के विषय में महात्मा गांधी ने लिखा है – "भारत के विविध भाषा उसके सांस्कृतिक धरोहर है और यह धरोहर उसे दुनिया में सबसे अनूठा बनाती है।" इसी क्रम में अगर हिंदी और बांग्ला भाषा की बात की जाए तो हम पाएंगे की हिंदी और बांग्ला दोनों ऐशिया उपमहाद्वीप की दो प्रमुख भाषाएं हैं और इनके बीच गहरा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई संबंध है । दोनों भाषाओं की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय भाषा से हुई है और दोनों ही भाषाएं समाज के सांस्कृतिक, साहित्यिक और ऐतिहासिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाती हैं। यह समझना रोचक है कि हिंदी और बांग्ला का विकास किस प्रकार एवं किस क्रम में हुआ तथा इसका अंतर्संबंध कितना व्यापक है। हिंदी और बांग्ला के संबंध की अगर बात करनी है तो हमें विभिन्न आयामों को देखना होगा क्योंकि इसकी व्यापकता को कुछ बिन्दुओं या शब्दों में समेटना असंभव है । इसके अंतर्संबन्ध को हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :** हिंदी और बांग्ला दोनों ही भाषा प्राचीन भारतीय भाषा संस्कृत से विकसित हुई हैं। लगभग आठवीं शताब्दी के आस-पास संस्कृत से पाली और पाली से प्राकृत भाषाओं का विकास हुआ जो आगे चलकर अपभ्रंश और फिर विभिन्न क्षेत्रीय भाषा में परिवर्तित हुईं, इसी प्रक्रिया में हिंदी और बांग्ला का भी जन्म हुआ । बांग्ला भाषा का उद्भव बंगाल क्षेत्र में हुआ जबकि हिंदी का उद्भव उत्तरी और मध्य भारत में हुआ। लेकिन दोनों भाषाओं का मूल स्त्रोत संस्कृत ही था तथा इस कारण उनकी संरचना में आज समानता देखने को मिलती है और यही कारण है कि आज हमें इसकी चर्चा करने की आवश्यकता पड़ रही है । मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन का हिंदी और बांग्ला भाषा पर प्रभाव पड़ा । इस आंदोलन ने हिंदी और बांग्ला भाषा में साहित्य और कविता के विकास को प्रोत्साहित किया। संत कवियों जैसे कबीर, तुलसीदास, विद्यापति, और चंडीदास ने स्थानीय भाषाओं में साहित्य का सृजन किया, जिससे आम जनता के बीच हिंदी और बांग्ला का प्रचार-प्रसार हुआ।

**भाषाई समानता :** हिंदी और बांग्ला के शब्दों, व्याकरण और उच्चारण में भी कई समानताएं हैं । दोनों भाषाओं के वर्णमाला का आधार ब्राह्मी लिपि है, हालांकि बांग्ला में बंगाली लिपि का प्रयोग होता है, जबकि हिंदी में देवनागरी लिपि का । शब्दों के उच्चारण में कुछ अंतर होते हुए भी, दोनों में संस्कृत के शब्दों का बड़ा प्रभाव देखा जा सकता है । उदाहरण के लिए, हिंदी का "माता" बांग्ला में "माँ" बन जाता है, लेकिन अर्थ वही रहता है ।संज्ञा और सर्वनाम में भी समानता देखी जा सकती है। जैसे हिंदी में "मैं", "तू", "हम", "तुम" और "वह" जैसे सर्वनाम का उपयोग होता है, वैसे ही बांग्ला में "आमी" (मैं), "तुइ" (तू), "आमरा" (हम) और "तोमरा" (तुम) का उपयोग किया जाता है। दोनों भाषाओं में ही कुछ व्याकरणिक नियम जैसे संज्ञा और विशेषणों का लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन, एक जैसी संरचना दर्शाते हैं।

**साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान :** हिंदी और बांग्ला दोनों ही साहित्यिक रूप से समृद्ध भाषाएँ हैं । बांग्ला में रवींद्रनाथ टैगोर का योगदान सर्वोपरि है, जिन्होंने बांग्ला साहित्य को विश्व स्तर पर एक नई पहचान दिलाई । उनके उपन्यास, कविताएँ और गीत, जैसे "गीतांजलि" और "रवींद्र संगीत" न केवल बांग्ला भाषा की समृद्धि को दर्शाते हैं, बल्कि हिंदी साहित्य पर भी उनका गहरा प्रभाव है । हिंदी साहित्य की लेखिका महादेवी वर्मा ने रवींद्रनाथ ठाकुर से प्रेरणा लेकर अपनी लेखनी में भारतीय संस्कृति और प्रकृति का जो वर्णन किया वह हिंदी साहित्य के छायावादी युग की पहचान बना। उदाहरण के रुप में रवींद्रनाथ की कविता जन-गण-मन और महादेवी वर्मा की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना और प्रकृति का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त हिंदी के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में भी बांग्ला साहित्य की परंपरा और प्रभाव देखा जा सकता है। बांग्ला साहित्य के शरतचंद्र चट्टोपाध्याय और मुंशी प्रेमचंद दोनो के यहां सामाजिक यथार्थ, महिला पात्रों का चित्रण, वर्ग संघर्ष, सुधारवादी दृष्टिकोण आदि विषयों में समानता देखने को मिलती है। साहित्य जगत में इन पर कई तुलनात्मक शोध भी किये गये हैं । इसके अतिरिक्त भक्ति काल में भी हिंदी और बांग्ला का सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा । चैतन्य महाप्रभु, जो भक्ति आंदोलन के एक प्रमुख संत थे, ने बंगाल में वैष्णव धर्म का प्रचार किया, और उनकी रचनाओं में हिंदी और बांग्ला का मिलाजुला रूप देखने को मिलता है। इसी प्रकार, हिंदी कवि तुलसीदास के रामचरितमानस का प्रभाव बंगाल के वैष्णव साहित्य पर पड़ा। इसके अतिरिक्त आधुनिक युग में हिंदी और बांग्ला दोनों में प्रयोगवादी, नई कविता, और प्रगतिवादी साहित्य का विकास हुआ । हिंदी के नागार्जुन और बांग्ला के सुभाष मुखोपाध्याय जैसे कवियों ने सामाजिक मुद्दों पर कविताएँ लिखीं । दोनों भाषाओं के कवियों और लेखकों ने स्वतंत्रता के बाद के भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को साहित्य में दर्शाया, जिससे हिंदी और बांग्ला साहित्य में समानताएँ उभर कर आईं।

**बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय और "वंदे मातरम्" का प्रभाव** - बांग्ला के महान लेखक बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास "आनंदमठ" में "वंदे मातरम्" नामक गीत लिखा, जो स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक बन गया। यह गीत हिंदी और बांग्ला दोनों भाषाओं में लोकप्रिय हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक प्रेरणास्रोत बना। "वंदे मातरम्" ने हिंदी और बांग्ला के साहित्यिक संबंध को और मजबूत किया और स्वतंत्रता संग्राम में एकता की भावना को बढ़ावा दिया।

**प्रेमचंद और बांग्ला साहित्य का अंतर्संबंध** - प्रेमचंद हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार थे, जिनकी कृतियाँ बांग्ला में अनूदित हुईं। प्रेमचंद का यथार्थवादी दृष्टिकोण बांग्ला साहित्य में बंकिम चंद्र और

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय जैसे लेखकों के साथ मेल खाता है । प्रेमचंद के उपन्यासों में भारतीय समाज, गरीबी, और ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण है, जो बांग्ला साहित्य के लेखकों को प्रेरित करता है । प्रेमचंद की रचनाओं में शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यासों का प्रभाव भी देखा जा सकता है, जिससे हिंदी और बांग्ला साहित्य का गहरा संबंध प्रकट होता है। उदाहरण के लिए शरतचंद्र के उपन्यासों में श्रीकांत और देवदास समाज की विडंबना को दर्शाते हैं तो वहीं दूसरी ओर प्रेमचंद के उपन्यासों में गोदान एंव गबन इस श्रेणी में आते है। नारी पात्रों में देखा जाए तो हम पाएंगे कि शरतचंद्र के देवदास की पारो और प्रेंचमद की रचना निर्मला की मुख्य पात्र दोनों ही सामाजिक व्यवस्थाओ के कारण पीड़ित हैं । शरतचंद्र की बिंदुर छेले और प्रेमचंद की गोदान में पात्रों की भावनात्मक उलझनों और उनकी नैतिकता के संघर्ष में समानता देखी जा सकती है। इसके साथ दोनों लेखकों ने जाति प्रथा, स्त्री अधिकार, और समाज में व्याप्त अन्याय जैसे मुद्दों को उठाया। उदाहरणस्वरूप शरदचंद्र का उपन्यास चरित्रहीन और प्रेमचंद का प्रेमाश्रम दोनों उपन्यासों में समाज की रूढ़िवादिता पर कटाक्ष मिलता है।

सिनेमा और नाटक में अंतर्संबंध - हिंदी और बांग्ला नाटक और सिनेमा में गहरा अंतर्संबंध है । बांग्ला सिनेमा का यथार्थवादी दृष्टिकोण, विशेषकर सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और बिमल रॉय जैसे निर्देशकों के कार्यों ने हिंदी सिनेमा को गहराई से प्रभावित किया है । शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की देवदास और रविंद्रनाथ टैगोर की कृतियों का हिंदी फिल्मों में अनुवाद हुआ, जो बंगाल की सांस्कृतिक संवेदनाओं को हिंदी दर्शकों तक लाया । कई बंगाली कलाकार, संगीतकार और निर्देशक हिंदी सिनेमा में सक्रिय रहें, जैसे बिमल रॉय, एस.डी. बर्मन, और उत्तम कुमार, जिन्होंने दोनों भाषाओं के सिनेमा के बीच एक कलात्मक सेतु का निर्माण किया। इस तरह दोनों ने एक-दूसरे को सृजनात्मक रूप से समृद्ध किया ।

अनुवाद साहित्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान - हिंदी और बांग्ला साहित्य में एक दूसरे के साहित्यिक कार्यों का अनुवाद भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रवींद्रनाथ टैगोर, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद हुआ, वहीं प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन, और महादेवी वर्मा की रचनाओं का बांग्ला में अनुवाद किया गया। इस अनुवाद कार्य ने दोनों भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे के करीब लाने का कार्य किया और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया ।

धार्मिक और सांस्कृतिक अंतर्संबंध – भारतीय उपमहाद्वीप साझा सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का एक अद्भूत उदाहरण है । हिंदी और बांग्ला दोनों समाजों में रामायण और महाभारत की कहानियाँ अत्यधिक लोकप्रिय हैं और इनके आधार पर साहित्य और धार्मिक परंपराओं का विकास हुआ है। हिंदी में तुलसीदास ने "रामचरितमानस" की रचना की, जिसने राम की गाथा को हिंदी भाषी क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाया। इसी प्रकार बांग्ला में कृतिवास ओझा ने "कृतिवासी रामायण" की रचना की, जो बंगाल में रामायण की एक प्रमुख कृति है।हिंदी और बांग्ला भाषी क्षेत्रों में धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ भी समान हैं। बंगाल और उत्तरी भारत में दुर्गा पूजा, दीपावली, और होली जैसे त्योहार धूमधाम से मनाए जाते हैं। धार्मिक ग्रंथों, रीति-रिवाजों, और लोक कथाओं के माध्यम से दोनों क्षेत्रों में सांस्कृतिक समानता देखने को मिलती है। इसके अलावा, भारतीय पौराणिक कथाएँ, महाभारत और रामायण की कहानियाँ दोनों भाषाओं में समान रूप से लोकप्रिय हैं और इन्हीं पर आधारित साहित्य का विकास हुआ है।

हिंदी और बांग्ला भाषा के बीच वर्तमान चुनौतियाँ और संभावनाएँ - हालाँकि हिंदी और बांग्ला में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत हैं, लेकिन वर्तमान में कुछ चुनौतियाँ भी हैं । भारत के विभाजन के बाद बांग्ला भाषा का भी विभाजन हुआ और अब एक हिस्सा बांग्लादेश की आधिकारिक भाषा बन चुका है । इससे दोनों के सांस्कृतिक और भाषाई संबंधों में एक प्रकार का अंतर भी आया है । इसके अलावा, दोनों भाषाओं के विकास के लिए अलग-अलग शैक्षणिक और साहित्यिक नीति अपनाई जा रही है, जो भविष्य में एक अलग पहचान स्थापित कर सकती है । हालांकि, वैश्वीकरण के इस युग में दोनों भाषाओं के बीच सहयोग की संभावनाएं भी बढ़ी हैं । हिंदी और बांग्ला भाषी लोग आजकल विभिन्न मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर एक दूसरे के साथ जुड़ रहे हैं।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि हिंदी और बांग्ला का अंतर्संबंध अत्यंत घनिष्ठ हैं, क्योंकि दोनों न केवल एक ही भाषा परिवार से हैं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से भी गहराई से जुड़ी हुई भी हैं । उक्त भाषाओं का साहित्यिक विकास एक-दूसरे को प्रेरित और प्रभावित करता रहा है, जिससे भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य को समृद्धि मिली है । बंगाल पुनर्जागरण से लेकर हिंदी साहित्यिक आंदोलनों तक, दोनों भाषाओं ने एक-दूसरे के साहित्य और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है । वर्तमान में भी दोनों भाषाओं के बीच अनुवाद कार्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जारी है, जो उनके अंतर्संबंध की जीवंतता को दर्शाता है । हिंदी और बांग्ला के अंतर्संबंध को काफी हद तक ये पंक्तियां साकर करती हैं:

देश एकता बहुत जरूरी<br>
आपस में मत रखना दूरी<br>
जाति धर्म का भेद न पालो<br>
समरसता में खुद को ढालो<br>
आपस में अब कभी न लड़ना<br>
मनमुटाव में कभी न पड़ना।

| शब्द | उच्चारण | उद्भव | अर्थ |
|---|---|---|---|
| Reglement | Reh-gleh-mohn | फ्रेंच | कानून |
| Behorde | Bay-hohr-deh | जर्मनी | प्राधिकरण |
| Caveat | kav-ee-at | लैटिन | सावधानी |
| Geschaft | Gesh-aft | जर्मनी | व्यवसाय |
| Sub Judice | sub joo-dee-see | लैटिन | न्यायाधीन |
| Hypothek | Hy-poh-tehk | जर्मनी | गिरवी ऋण |
| Ultra Vires | ul-truh-vy-reez | लैटिन | अधिकार से बाहर |
| Hail | Ha-il | जर्मनी | नमस्कार / अभिवादन |
| Virement | Vee-reh-mohnt | फ्रेंच | हस्तांतरण |
| Carpe Diem | kaa-pay-dee-em | लैटिन | दिन का लाभ उठाओ |
| Compte courant | Kohnt koor-ahnt | फ्रेंच | चालू खाता |
| Fare thee well | Fare -thee- wel | मध्यकालीन अंग्रेजी | अलविदा |
| Bonafide | boh-nuh-fide | लैटिन | प्रामाणिक |
| Forsooth | For-soh-oth | मध्यकालीन अंग्रेजी | निश्चित रूप से |
| Force majeure | fose ma-zhuh | फ्रेंच | अप्रत्याशित घटना |
| Urlaub | Oor-lowb | जर्मनी | अवकाश |
| Bonjour | Bohn-zhohr | प्राचीन फ्रेंच | सुप्रभात |
| Malafide | Ma-la-fi-de | लैटिन | दुर्भावना से |
| Gestion | Zhehs-tee-ohn | फ्रेंच | प्रबंधन |

संकलनकर्ता
पी राजशेखर
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु

नगेन्द्र कुमार सिंह, प्रबन्धक, केन्द्रीय कार्यालय

समसामयिक दौर में भारतीय बैंकिंग उद्योग वैश्विक बैंकिंग जगत का मार्ग प्रशस्त कर रहा है । पिछले वित्तीय वर्ष में सभी क्रिटिकल पैरामीटरों में हमारे देशीय बैंकों का प्रदर्शन अनुकरणीय रहा । वैश्विक उथल-पुथल, उच्च मुद्रास्फीति, बढ़ती हुई भू-राजनीतिक जोखिम और ब्याज-दर में बढ़ोत्तरी होने के बावजूद हमारे बैंकों ने अच्छा मुनाफा दर्ज़ किया । आज बैंक मुख्य पैरामीटरो में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, यानी कुल व्यवसाय, निवल ब्याज मार्जिन (एनआईएम) में सुधार, अग्रिम पोर्टफोलियो का बढ़ना, निवल ब्याज आय में बढ़ोत्तरी, खराब ऋण में गिरावट और उच्चतर निवल लाभ दर्ज़ करना । यदि इस कामयाबी में बैंकों की कासा और रिटेल की हिस्सेदारी भी अच्छे अंकों के साथ जुड़ जाए तो भारतीय बैंकों का तुलन-पत्र अतुलनीय होगा । तथापि, पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में वित्तीय वर्ष 2023-24 में बैंक अपने कुल जमाओं में कासा का शेयर बढ़ाने में असफल रहा है और रिटेल व्यवसाय में भी सिर्फ 17.7% का वर्ष-दर-वर्ष ग्रोथ देखा गया है ।

प्रचलित धारणा है कि जमा का अर्थ सिर्फ मियादी और सावधि जमा होता है । परंतु बैंकों में जमा खाते कई प्रकार के होते हैं, यथा बचत खाता, चालू खाता, मियादी जमा, सावधि जमा, जीरो बैलेंस खाता, पीपीएफ खाता, सुकन्या समृद्धि खाता, वरिष्ठ नागरिकों के लिए खाता, महिला खाता आदि । बचत खाता, जमा खाता के अंतर्गत सबसे प्रचलित है । बचत खाता एक सामान्य खाता है, जो प्राय: सभी नागरिक के पास होना चाहिए है और कासा जमा में इसका वृहत्त योगदान रहता है । इस प्रकार के खाते गैर-व्यवसायिक होते हैं । दूसरी तरफ, चालू खाता उद्यमी, निगम और सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों द्वारा खोला जाता है । इस प्रकार के खाते व्यवसायिक उद्देश्य के लिए खोले जाते हैं और उक्त खाते के परिचालन के लिए उच्च शेष राशि बैंकों द्वारा सेवा प्रदान करने के लिए निर्धारित की जाती है ।

बैंकिंग जगत के लिए छोटे बचत खाते रॉ मट्रियल का काम करती है, चूंकि इसपर बैंक द्वारा कम ब्याज देय होता है । इस तरह के बचत खाते ग्राहक से प्राप्त करने के लिए बैंक बहुत सारी योजनाएं लेकर आती हैं । बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य और ग्रोथ पर विचार करने के लिए एनआईएम और जमा की लागत दो मुख्य पैरामीटर हैं, कासा का प्रतिशत अधिक होने पर उक्त दोनों पैरामीटर को नियंत्रित किया जा सकता है ।

**कासा जमा बढ़ाने के लिए रणनीति:**

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक को कम-लागत वाली चालू और बचत खाता खोलने के लिए आक्रामक रणनीति बनानी चाहिए । बैंक नवोन्मेषी तरीकों से कासा जमा कैनवास कर सकती है यानी विक्रेता एजेंट को कार्य सौंपकर, कर्मचारियों को भत्ते और प्रोत्साहन आदि देकर । कासा जमा बढ़ाने के लिए निम्नलिखित रणनीतियां बनाने पर विचार किया जा सकता है:

**1. चालू खाता अधिक खोलना:** बैंक अपना फोकस बचत खाता की अपेक्षा चालू खाता पर अधिक कर करें । बैंक अपनी चालू जमाएं बढ़ाने के लिए दमदार रणनीति बनाएं, जिसमें कोई ब्याज का लागत नहीं हो । यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि मियादी जमा में अधिक ब्याज देने पर बचत एवं चालू खाते में राशि रखवाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है ।

**2. ग्राहकों के साथ मधुर संबंध स्थापित करना:** बैंक ग्राहक के शिकायतों के निराकरण के लिए अधिक से अधिक संपर्क अधिकारी नियुक्ति करें । वे संपर्क अधिकारी सभी कॉरपोरेट एवं एमएसएमई ग्राहकों के समाधान का निराकरण कर, उनसे मधुर संबंध स्थापित कर सकते हैं । जिससे कि ग्राहक के साथ लंबे समय तक कारोबार किया जा सके ।

**3. वेतन खाता पर अधिक विश्वास दिखाना:** वेतन खाते अधिक से अधिक बैंक में लाने का प्रयास करें । वेतन खाते आय के स्थिर स्त्रोत है, जिससे बैंक के समेकित जमा पोर्टफोलियो में वृद्धि देखने को मिलता है । बैंक शाखा स्तर पर वेतन खाते अधिक से अधिक ऑनबोर्ड करने के लिए टीम भावना के साथ कार्य कर स्कते हैं ।

**4. ग्राहकों को मोबाइल ऐप्लिकेशन संबंधी जागरूक करना:** बैंक अपनी मोबाइल आधारित ऐप्लिकेशन निर्बाध बैंकिंग एवं बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए नियमित रूप से अपग्रेड करते रहते हैं । लगभग सभी बैंकों ने अपनी मोबाइल आधारित ऐप्लिकेशन को अद्यतित कर लिया है और ग्राहकों को सभी बैंकिंग आवश्यकताओं के वन-स्टॉप सॉल्यूशन प्रदान कर रहे हैं । ग्राहकों को मोबाइल ऐप उपयोग करने के लिए शिक्षित किया जा सकता है ।

**5. लुभावन ऑफर एवं योजनाएं:** ग्राहक प्राय: विशेष ऑफर और योजनाओं के विमोचन से प्रभावित होते हैं । ऐसे योजना चलाएं जिसमें ग्राहकों को खाते में एकमुश्त राशि रखने पर, विशेष ऑफर दिये जाएंगे यानी दुर्घटना होने पर बीमा राशि, चेक सुविधा, डेबिट कार्ड के एएमसी में रियायत, क्रेडिट कार्ड जारी करना, ऋण लेते समय प्रसंस्करण शुल्क में रियायत आदि ।

**6. पेपरलेस खाता खोलना:** एकाउंट एग्रीगेटर की सहायता से ग्राहकों का डिजिटल ऑनबोर्डिंग अधिक से अधिक हो सकता है । फिनटेक कंपनियों आदि की सहायता इसमें ली जा सकती है । केवाइसी प्रक्रिया टैब या डिजिटल के अन्य चैनलों से पूरी की जाए ।

**7. कासा इनेबलर:** कासा शेयर में चालू जमा का महत्व बढ़ता देख, बैंक कासा इनेबलर यानी पीओएस मशीन, नकद प्रबंधन सेवा (सीएमएस), इंटरनेट पेमेंट गेटवे (आईपीजी) आदि को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दें । इससे कारोबार करने में आसानी होगी और 360 डिग्री पर बैंकिंग लेन-देन देखा जा सकता है ।

अब विषय के दूसरे पक्ष यानी रिटेल ऋण किस तरह से बैंकों को मजबूत बनाने में अपनी भूमिका अदा कर रहा है, उसे समझने का प्रयास करते हैं । रिटेल ऋण क्या है ? रिटेल ऋण किसी वैयक्तिक को वाणिज्यिक बैंकों द्वारा संपत्ति खरीदने, वाहन खरीदने या किसी अन्य

आस्ति यानी आवश्यक इलेक्ट्रॉनिक आदि खरीदने के लिए दिया जाता है । रिटेल ऋण उन्हीं वैयक्तिक को दिया जाता है, जिनका क्रेडिट स्कोर अच्छा होता है । रिटेल ऋण के विभिन्न प्रकारों में सबसे महत्वपूर्ण आवास ऋण है । घर खरीदना एक खर्चीला काम है, मध्यम वर्गीय लोग घर खरीदने के लिए एकबार में एकमुश्त राशि अदा करने में सक्षम नहीं होते हैं । अतः इस परिस्थिति में बैंक ऋण देता है और उधारकर्ता उसके एवज में ईएमआई अदा करता है । रिटेल ऋण के चार प्रमुख प्रकार निमन्वत हैं:

**क) आवास ऋण:** यह स्वीकार करना होगा कि भारत में अब भी रियल एस्टेट महंगा है, और किसी भी व्यक्ति को घर खरीदने के लिए राशि बचत करते हुए वर्षों लग जाएंगे । इस स्थिति में रिटेल ऋण के अंतर्गत आने वाला आवास ऋण खूब प्रचलित है ।

**ख) शिक्षा ऋण:** बैंक द्वारा इस प्रकार के ऋण छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए दिया जाता है, उन्हें जो महंगी शिक्षा के लिए फीस भुगतान करने में असक्षम हैं । शिक्षा ऋण की राशि विदेश में शिक्षा प्राप्त करने, ट्यूशन फीस, हॉस्टल खर्च एवं अन्य खर्च अदा करने के लिए दिया जाता है ।

**ग) वाहन ऋण:** जब कोई व्यक्ति नई कार या दो पहिया खरीदने के लिए सोचता है, तो बैंक उसे वाहन ऋण दे सकता है । इस ऋण के तहत कुल राशि के कुछ भाग डाउन पेमेंट के रूप में लिया जाता है और शेष बची हुई राशि को किस्तों में अदा करने के लिए बैंक ईएमआई बना देती है ।

**घ) वैयक्तिक ऋण:** यह ऋण बहुतेरे कारणों यानी यात्रा, विवाह, मेडिकल खर्च में तत्काल वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए दिया जाता है ।

खुदरा ऋण उद्योग ग्राहकों को एक बार में पूरी राशि अदा किए बिना आवश्यक आस्ति खरीदने में सक्षम बना रहा है । बैंक इस तरह के ऋण देने के पहले खूब सावधानी बरत रही है । समय से ऋण की राशि का चुकौती होना, न सिर्फ बैंक बल्कि अर्थव्यवस्था के लिए भी अच्छा होता है ।

**खुदरा ऋण की पात्रता:**

**अ) वेतनभोगी:** खुदरा ऋण के लिए सबसे सॉफ्ट टार्गेट वेतनभोगी होते हैं । वेतनभोगी होने से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि ग्राहक को नियमित वेतन मिलती है और वह समय से आयकर रिटर्न भी फ़ाइल करता होगा । बैंक ऋण देते समय वेतन पर्ची के साथ २ वर्षों का आयकर रिटर्न भी देखती है ।

**आ) क्रेडिट स्कोर:** इस ऋण के लिए क्रेडिट स्कोर का होना अनिवार्य है । लगभग सभी बैंकों ने खुदरा ऋण के लिए लगभग 680 क्रेडिट स्कोर निर्धारित की है ।

**कारोबार समृद्धि में खुदरा ऋण का योगदान:**

**क) सुरक्षित ऋण :** रिटेल ऋण की गिनती सुरक्षित ऋण में की जाती है । इस तरह के ऋण की खराब होने की संभावना कम होती है । इस ऋण की खास बात है कि इसमें प्राथमिक जमानत बैंक के पास मौजूद होती है । ऐसे ऋण के जरिए बैंक उत्तम क्वालिटी की आस्ति निर्माण करते हैं ।

**ख) क्रेडिट पोर्टफोलियो मे वृद्धि :** बैंक सतत रूप से प्रयास करता है कि उसके अग्रिम पोर्टफोलियो में वृद्धि होता रहे । चूंकि अग्रिम पोर्टफोलियो से अधिक ब्याज कमाया जा सकता है । इस पोर्टफोलियो का एनआईआई की बढ़ोत्तरी में महत्वपूर्ण योगदान होता है । रिटेल ऋण से अधिक ब्याज मिलता है और इस तरह के ऋण बैंक के लिए काफी फायदेमंद होते हैं ।

**ग) तुलन-पत्र को मजबूती देना :** बैंक के तुलन-पत्र को मजबूती प्रदान करने में कासा और अग्रिम का विशेष योगदान होता है । जिस बैंक का जितना अधिक बिजनेस मिक्स रहेगा, वह उतना ही अधिक परिचालन लाभ दिखाने में सक्षम होगा । अच्छी गुणवत्ता वाली आस्ति का जिक्र बैलेंश शीट में होना शुभमय होता है । रिटेल ऋण क्रेडिट पोर्टफोलियो बढ़ाने के साथ-साथ, बैंक के तुलन-पत्र को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।

**निष्कर्षत:** कह सकते हैं कि बैकों के लिए जितनी आवश्यक कम लागत वाली जमाएं यानी कासा है, उतनी ही जरूरी प्राथमिक जमानत वाली रिटेल ऋण है । इन दोनों की प्रतिशतता में वृद्धि से किसी भी बैंक के कारोबार में चार चांद लग जाएंगे । आज बैंकों के उच्च प्रबंधन ने कासा और रिटेल दोनों पोर्टफोलियो में सकारात्मक परिणाम देखने के उद्देश्य से अपने मुख्यालय में एकल समर्पित विभाग गठित किये हैं । नए-नए आकर्षक ऑफर एवं योजनाएं ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में टिके रहने के लिए नित्य प्रतिदिन लाये जा रहे हैं । बैंक रिटेल और कासा संबंधी अपने लक्ष्य को साधने के लिए रणनीति बनाते समय उपर्युक्त सुझावित मदों पर विचार कर सकते हैं ।

## केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ

## केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ

# क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ

अहमदाबाद

बड़ौदा

भोपाल

ब्रह्मपुर

चंडीगढ़

कोयंबत्तूर

देहरादून

दिल्ली

एरणाकुलम

ईरोड

गोवा

गुवाहाटी

हैदराबाद

जयपुर

काँचीपुरम

# इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

बैंक द्वारा प्रकाशित भाषा संगम पुस्तक का विमोचन करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री माननीय अमित शाह

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण करते हुए हमारे एमडी व सीईओ श्री अजय कुमार श्रीवास्तव

## जनवरी 2025 पौष / माघ 2081

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

## फरवरी 2025 माघ / फाल्गुन 2081

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | |

## मार्च 2025 फाल्गुन / 2080 - चैत्र 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | 31 | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

## अप्रैल 2025 चैत्र / बैशाख 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | | | |

## मई - 2025 बैशाख / ज्येष्ठ 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

## जून 2025 ज्येष्ठ / आषाढ़ 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

## जुलाई 2025 आषाढ़ / श्रावण 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

## अगस्त 2025 श्रावण / भाद्रपद 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

## सितम्बर 2025 भाद्रपद / आश्विन 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

## अक्तूबर 2025 आश्विन / कार्तिक 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

## नवम्बर 2025 कार्तिक / मार्गशीर्ष 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

## दिसम्बर 2025 मार्गशीर्ष / पौष 2082

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरू | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

# क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियाँ

लखनऊ

मदुरै

मेरठ

मुंबई

मैसूरु

नागपुर

एनसीआर - दिल्ली

पटना

पुणे

रायपुर

सिलीगुड़ी

तंजाऊर

तिरुनेलवेली

वेल्लूर

वाराणसी

शुभम दीक्षित, प्रबंधक, केन्द्रीय कार्यालय

भारत का अपने समय का सबसे बड़ा शोमैन यानी अनाड़ी, जोकर, प्यासा, दीवाना, श्री 420, बेबफ़ा यानी राज कपूर । आज हम बात करने जा रहे हैं हिन्दी सिनेजगत के उस सितारे की जिसकी चमक न केवल हिंदुस्तान में, बल्कि विदेशों की सरजमीं पर भी उजाले बिखेरती रही है । राज कपूर – एक नाम जिसके अभिनय की छाप आज भी उतनी ही पुख्ता है; एक नाम जिसकी 5 दशक पुरानी फिल्में आज भी प्रासंगिक हो उठती हैं; एक नाम जिसके काम ने कई पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध किया; एक नाम जिसके निर्देशन का आज भी लोहा माना जाता है; एक नाम जिसके नगमों को आने वाली कई नस्लें गुनगुनाती रहेंगी । आने वाले कुछ महीनों में हम इस महानायक की जन्म शताब्दी सालगिरह माना रहे होंगे, तो क्यूँ न इस मुक़द्दस मौके से पहले इस सिनेजादूगर की ज़िंदगी के कुछ लम्हों को, उसके संघर्षों को, उसके शब्दों को, उसके अनुभवों को इस लेख के माध्यम से उसका सुप्रसिद्ध गीत "आवारा हूँ... या गर्दिश में हूँ आसमान का तारा हूँ..." गुनगुनाते हुए एक छोटी सी श्रद्धांजलि दी जाए ।

राज कपूर भारतीय सिनेमा के ऐसे दिग्गज अभिनेता थे जिसे असाधारण शोमैन, एक प्रेमी, एक आदर्शवादी, एक संत और एक सुधारक की ख्याति प्राप्त है । एक बेहतरीन निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, एडिटर, गीतकार और कहानीकार के रूप में उनका ऐसा प्रभुत्व था कि उन्होंने कुछ फिल्में ऐसी बनाईं जिन्हें दुनिया में कहीं बनी फिल्मों से ज्यादा देखा गया । उन्होंने न केवल फिल्में बनाईं, बल्कि मुख्यधारा के फिल्मी दर्शक वर्ग को भी उस समय तैयार किया, जब बाजार में किसी ने बॉलीवुड का नाम तक नहीं सुना था । विरासत में मिली सिनेमाई परंपरा के साथ काम करते हुए उन्होंने उसमें बदलाव किए, नई नई चीजों को जोड़ा और अलग मोहक रोमांस से भरपूर और जबर्दस्त लोकप्रिय फिल्मों का निर्माण किया।

स्वनामसिद्ध कपूर परिवार में जन्में राज कपूर की पारिवारिक पृष्ठभूमि की बात तो क्या ही की जाए मगर मैं यहाँ एक तथ्य के साथ उनका परिचय कुछ इस तरह देना चाहूँगा कि उनका जन्म पहली सवाक फिल्म "आलम आरा" के नायक पृथ्वीराज कपूर के घर अविभाजित भारत के पेशावर में स्थित कपूर हवेली में 14 दिसंबर 1924 को हुआ था । राज कपूर की माता का नाम राम सरनी कपूर था, जो एक कुशल गृहणी थीं । अपने बचपन के बारे में चर्चा करते हुए राज कपूर एक इंटरव्यू में खुद कहते हैं कि "मेरा अपने बचपन की सबसे पहली यादों में अपने माता-पिता से गहरे लगाव का संबंध है । यह स्वाभाविक भी था । इस बात के मद्देनजर कि मेरा जन्म हुआ तो मेरे पिता सिर्फ 18 के थे और माँ 16 वर्ष की । उम्र का फर्क हम लोगों में इतना कम था कि माता-पिता मुझ पर कभी भी अपना रोब गाँठने में सफल न हो सके । अगर कहा जाए कि मैं लाड़ प्यार में बिगड़ा हुआ एक बच्चा था, तो कोई बड़े बात नहीं होगी ।"

अगर राज कपूर पढ़ाई लिखी की बात की जाए तो वहाँ खर्च करने के लिए बहुत कम ही शब्द मिलते हैं, क्योंकि राज कपूर की परंपरागत पढ़ाई कभी स्कूल की दहलीज़ लांघ कर कॉलेज की चहारदीवारी में प्रवेश न कर सकी । मगर अपनी स्कूलिंग से जुड़ा एक रोचक किस्सा राज कपूर कुछ इस तरह साझा करते हैं, "मुझे अपने प्रिंसिपल सोअर्स याद हैं । वे लैटिन के अध्यापक भी थे और उन दिनों लैटिन द्वितीय भाषा थी । परीक्षाओं के दौरान जब लैटिन का पेपर देना पड़ा तो मैंने लिखा – लैटिन एक मृत भाषा है, गड़े मुर्दे क्यूँ उखाड़ें ? मुझे सौ में से एक नंबर मिला और वह भी सम्मनार्थ । प्रिंसिपल सोअर्स ने मुझे अपने रूम में बुला कर कहा – बदकिस्मती कि मैं तुम्हारी शैक्षणिक योग्यता के बारे में कुछ नहीं कह सकता । तुम और कई मायनों में अव्वल हो और पूरी दुनिया तुम्हारे सामने है । प्रिंसिपल सोअर्स की वो बात मेरे जेहन में सदा के लिए बस गई ।" ज़ाहिर है कि राज कपूर ने फिर दोबारा स्कूल का रुख नहीं किया । जानकारी के लिए यहाँ जोड़ना चाहूँगा कि हमारा शोमैन बमुश्किल से नौवीं कक्षा तक ही पास कर सका । लेकिन एक चीज़, जो सबसे अधिक मायने रखती थी, वह थी अपने हुनर की पहचान और उस दिशा में खुद को तराशना । राज कपूर को परंपरागत शिक्षा के बदले अगर दक्षता के पैमाने पर नापा जाए तो एक यह सीख है कि अपनी सीमाओं को पहचानो और निरंतर उनका अतिक्रमण करने के लिए प्रयासरत रहो, अपनी साधना में खुद को इतना साधो, अपने तप के ताप में खुद को इतना तपाओ कि परिणाम स्वरूप निकले कुन्दन की चमक को कोई अनदेखा न कर सके ।

राज कपूर अपने माता-पिता के साथ 1927 में मुंबई आ गए जहां

उनकी अगली पारी की शुरुआत होनी थी । उनके पिता ने अपने अभिनय की जो शुरुआत एक अवैतनिक एक्स्ट्रा के रूप में की थी वो यूं ही कायम नहीं रही और जल्द ही अपने हुनर के चलते उन्होंने अपनी मुकम्मल जगह कमा ली । राज कपूर ने अपने पिता की छत्रछाया में ही अपने हुनर को तराशा और निखारा । वे खुद कहते हैं "मेरे पिता ने मुझे नाटक और मंच से अवगत करवाया और उसी मंच से मैं धीरे-धीरे पर्दे तक पहुँच गया" ।

राज कपूर का बचपन काफी हादसों से भरा रहा जिसमें उनके दो भाइयों का काल के गाल में समा जाना शामिल था । पृथ्वीराज कपूर (राज कपूर के पिता) अपने एक संस्मरण में लिखते हैं, "जब राज सात वर्ष का था, उस समय शाम को स्टूडियो में हमारे एक नौकर के साथ आया, जहां मैं शूटिंग कर रहा था और उसने बताया कि उसका भाई बिंदू (रविंदर) बहुत बीमार है । वह इससे ज्यादा एक शब्द भी नहीं बोल पाया, मगर उसकी माँ ने टैक्सी भेजी थी जो उस समय के लिए विलासिता की बात थी । मैं समझ गया कुछ न कुछ गंभीर घटना घटी है । बाद में पता चला कि पड़ोसी के घर खेलने गए बिंदू ने चूहे मारने की मीठी गोलियां खा लीं और वो नहीं रहा । इस हादसे के पंद्रह दिनों के भीतर ही मेरा दूसरे बेटा देवेंद्र अत्यधिक बुखार के चलते बीमार पड़ गया और वह भी नहीं रहा । मैं उन दोनों बच्चों के चेहरे आज तक भुला नहीं पाया हूँ और न ही राज के उस दिन वाले चेहरे को, जब वो स्टूडियो आया था" । इन हादसों ने राज कपूर के बचपन की बुनियाद हिला कर रख दी ।

सन 1935 में बॉम्बे टॉकीज़ में बनी फ़िल्म 'इंकलाब' में मात्र 11 वर्ष की उम्र में राजकपूर ने अभिनय किया । उस समय वे बॉम्बे टॉकीज़ स्टुडिओ में सहायक (हैल्पर) का काम करते थे जिसके लिए उनके पिता ने ही बात की थी । बॉम्बे टॉकीज़ में काम पर लगवाने के लिए उनके पिता ने दो शर्तें रखें थीं । पहली ये कि राज कपूर को कोई वेतन नहीं मिलेगा और दूसरी ये कि उसके साथ स्टुडिओ में वैसे ही व्यवहार किया जाएगा जैसा एक सामान्य कर्मचारी के साथ किया जाता है, न कि पृथ्वीराज कपूर के बटे जैसा । उन दिनों में राज कपूर को पिता से केवल 30 रूपये प्रति माह जेब खर्च के लिए मिलते थे । हालांकि दोपहर का खाना घर से ले जाने या अपने जेब खर्च के हिसाब से स्टुडिओ के आस पास ही कुछ खा लेने का विकल्प उनके पास था ।

बाद में राज कपूर केदार शर्मा के साथ क्लैपर ब्वॉय का काम करने लगे । कुछ लोगों का मानना है कि उनके पिता पृथ्वीराज कपूर को विश्वास नहीं था कि राज कपूर कुछ विशेष कार्य कर पायेगा, इसीलिये उन्होंने उसे सहायक या क्लैपर ब्वॉय जैसे छोटे काम में लगवा दिया था । परन्तु, पृथ्वीराज कपूर के साथ रहने वाले एवं बाद के दिनों में राज कपूर के निजी सहायक एवं सहयोगी निर्देशक वीरेन्द्रनाथ त्रिपाठी बताते हैं " पृथ्वीराज हमेशा कहते थे राज पढ़ेगा-लिखेगा नहीं, पर फिल्मी दुनिया में शानदार काम करेगा। आज केदार ने उसे मेरा बेटा होने की वजह से काम दिया है, लेकिन एक दिन वह भी होगा जब लोग राज को पृथ्वीराज का बेटा नहीं बल्कि पृथ्वीराज को राज कपूर का बाप होने के कारण जानेंगे ।" कुछ ही समय बीता और प्रसिद्ध निर्देशक केदार शर्मा ने राज कपूर के भीतर की अभिनय क्षमता और लगन को पहचाना और उन्होंने राज कपूर को सन 1947 में अपनी फ़िल्म 'नीलकमल' में नायक (हीरो) की भूमिका दे दी ।

नायक के रूप में राज कपूर का फ़िल्मी सफ़र 'हिन्दी सिनेमा की वीनस' मानी जाने वाली सुप्रसिद्ध अभिनेत्री मधुबाला के साथ आरंभ हुआ । नरगिस के अतिरिक्त मधुबाला के साथ ही राज कपूर ने सबसे अधिक फिल्मों में नायक की भूमिका की है । परंतु, इनमें सफल केवल 'नीलकमल' ही हुई । एक समय में अन्य फिल्मों की असफलता के कारण उन्हें भुला दिया गया पर 1948 में प्रदर्शित 'आग' वह पहली फिल्म थी जिसमें अभिनेता के साथ साथ निर्माता-निर्देशक के रूप में भी राज कपूर सामने आये । हालाँकि यह फिल्म सफल नहीं हो पायी ।

'आग' के बाद 1949 में राज कपूर 'बरसात' फिल्म में अभिनेता के साथ-साथ निर्माता-निर्देशक के रूप में भी पुनः उपस्थित हुए और इस फिल्म ने सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए । इस फिल्म की लगभग पूरी टीम ही नयी थी । संगीतकार नये थे- शंकर-जयकिशन । गीतकार नये थे- हसरत जयपुरी और शैलेन्द्र । लेखक भी नए थे - रामानन्द सागर । फिल्म की नायिका भी नयी थी- निम्मी । इतना ही नहीं राधू कर्मकार, एम.आर. अचरेकर और जी.जी. मायेकर जैसे नये टैक्नीशियनों की पूरी टीम थी । इन कारणों से लोग कहते थे 'आग' में जो कुछ जलने से रह गया है वह 'बरसात' में बह जाएगा । लेकिन राज कपूर ने किसी की बातों पर ध्यान नहीं दिया । सिर्फ एक वर्ष के समय में 'बरसात' बन कर पूरी हो गयी और 1949 में 'बरसात' के प्रदर्शन के साथ ही हिन्दी सिनेमा में एक नया अध्याय जुड़ गया । शंकर-जयकिशन, शैलेन्द्र, हसरत जयपुरी, रामानन्द सागर, निम्मी और सारे टैक्नीशियन रातों-रात चोटी पर पहुँच गये । 'बरसात' का संगीत देश-काल की सीमाओं को लाँघ गया । चारों ओर मुकेश और लता के गाये हुए गीतों की धुन थी । गायिका लता मंगेशकर की पहचान भी 'बरसात' फिल्म में ही मुख्यतः बन पायी ।

'बरसात' की प्रचंड सफलता का यह परिणाम था कि इसके अगले वर्ष अर्थात् सन 1950 में नायक के रूप में राज कपूर की छह फिल्में आयीं । सन 1951 में प्रदर्शित 'आवारा' हिन्दी सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ । इसने राज कपूर को नायक के रूप में नयी और अलग पहचान दी । 'आवारा' ने ही फिल्मकार के रूप में एक दृष्टिकोण दिया; और 'आवारा' ने ही उनकी फिल्मों को सामाजिक यथार्थ के धरातल पर ला खड़ा किया । इस आवारा ने

महबूब, केदार शर्मा, नितिन बोस, विमल राय, महेश कौल, वी शांताराम जैसे महामहिमों के रहते अपनी फिल्म 'आवारा' से साबित कर दिया कि वह हर मोर्चे पर बड़े-बड़े दिग्गजों के हौसले पस्त कर सकता है।

सन 1953 राज कपूर के लिए दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष साबित हुआ। इस वर्ष उनकी आर.के. फिल्म्स की तीन फिल्में रिलीज हुईं-- 'आह' 'धुन' और 'पापी'। ये तीनों ही फिल्में असफल रहीं। हालाँकि इनमें से 'आह' की असफलता एक आश्चर्यजनक बात थी। सुप्रसिद्ध फिल्म समालोचक प्रहलाद अग्रवाल के अनुसार, "अपने दौर की सभी विशेषताओं को लिए हुई थी 'आह'। इसका संगीत तो बेहद लोकप्रिय हुआ था। उसकी गुरुता और मोहनी-शक्ति 'बरसात' और 'आवारा' से उन्नीस नहीं, बीस थी। 'राजा की आएगी बारात, रंगीली होगी रात, मगन मैं नाचूँगी', 'आजा रे अब मेरा दिल पुकारा' और 'जाने न नज़र पहचाने जिगर' आदि गीत बेहद लोकप्रिय हुए थे"। सन 1953 की इन तीनों फिल्मों की असफलता से राज कपूर की लोकप्रियता को गहरा धक्का लगा।

राज कपूर के पास 1953 के समय और कोई फिल्म नहीं थी। लेकिन वे हार मानने वाले व्यक्तित्व नहीं थे। 'आह' की असफलता के तुरंत बाद आर.के. फिल्म्स के अंतर्गत एक ऐसी फिल्म बनायी गयी जिसने पूरे फिल्म उद्योग को चौंका दिया। यह फिल्म थी 'बूट पॉलिश', जिसमें राज कपूर स्वयं नायक भी नहीं थे। बाल फिल्मों की सफलता हमेशा ही संदिग्ध रही है। परन्तु राज कपूर के महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व के अनुरूप 'बूट पॉलिश' एक ऐसा करिश्मा साबित हुई जिसने उनकी प्रतिष्ठा पर लगे धक्के के एहसास तक को नष्ट कर दिया। दो साल बाद सन 1955 में आर.के. फिल्म्स की 'श्री 420' ने फिर से राज कपूर को सबसे बढ़कर बना दिया। इस फिल्म को सफलता तो मिली ही, देश-विदेश में सराहना भी हुई।

सन 1956 राज कपूर के जीवन का महत्त्वपूर्ण वर्ष रहा। इसी वर्ष वे कलात्मक ऊँचाइयों के चरमोत्कर्ष तक पहुँचे। वे हिन्दी सिनेमा में अपने ढंग का अलग व्यक्तित्व बन गये, जिसका कोई मुकाबला नहीं था। इस वर्ष उनकी दो फिल्में प्रदर्शित हुईं- 'जागते रहो' और 'चोरी-चोरी'। इनमें से व्यावसायिक दृष्टि से 'चोरी-चोरी' अधिक सफल रही थी तथा अत्यधिक लोकप्रिय भी। 'जागते रहो' को कार्लोरीवेरी अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ग्रैंड प्रीं' पुरस्कार भी मिला। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होने के उपरान्त हिन्दी दर्शक इस फिल्म का नाम सुनकर चौंके और दोबारा प्रदर्शित होने पर पहले की अपेक्षा 'जागते रहो' को अधिक सफलता प्राप्त हुई। उस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी भारतीय फिल्म को इतना बड़ा पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ था। फिल्म विशेषज्ञ एवं लेखक प्रदीप चौबे के अनुसार, "ऑस्कर अवार्ड यदि सचमुच ही वैश्विक श्रेष्ठता का मापदण्ड हो तो जागते रहो आज भी उसकी हकदार है। हालांकि भारतीय सिनेमा के वातावरण को इस सबकी जरूरत नहीं क्योंकि पुरस्कारों की नियति खुद भी बहुत दरिद्र होती आयी है। उधर राजकपूर को भी शायद ही कभी पुरस्कारों की लालसा रही हो"।

1956 में नरगिस के अलग हो जाने के बाद 1959 में आकर 'अनाड़ी' ने राज कपूर को फिर अनोखे रूप में प्रस्तुत किया। निराशा का एक दौर समाप्त हुआ और सृजनात्मकता का नया अध्याय आरंभ हुआ। इसमें उत्कृष्ट अभिनय के लिए राज कपूर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का 'फिल्मफेयर पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ। सन 1960 में राज कपूर की तीन फिल्में प्रदर्शित हुईं-- 'छलिया', 'श्रीमान् सत्यवादी' तथा 'जिस देश में गंगा बहती है'। इनमें से 'श्रीमान् सत्यवादी' असफल साबित हुई, जबकि भारत-पाक-विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित 'छलिया' सफल हुई। 'जिस देश में गंगा बहती है' का निर्माण भी राज कपूर ने ही किया था इसके लिए तो राज कपूर को तो सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का 'फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार' मिला ही, इस फिल्म को भी सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का 'फिल्म फेयर पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

26 जून 1969 को अखिल भारतीय स्तर पर 'संगम' प्रदर्शित हुई। इसके 100 से अधिक प्रिंट एक साथ रिलीज किये गये थे। यह निर्माता, निर्देशक तथा अभिनेता सभी रूपों में राज कपूर की पहली रंगीन फिल्म थी। 'संगम' में राज कपूर अपनी बहुआयामी प्रतिभा के साथ उपस्थित हुए। 'संगम' के निर्माता, निर्देशक, संपादक और नायक वे स्वयं थे। इस फिल्म के लिए उन्हें 'फ़िल्मफ़ेयर सर्वश्रेष्ठ निर्देशक पुरस्कार' और 'फ़िल्मफ़ेयर सर्वश्रेष्ठ सम्पादक पुरस्कार' भी प्राप्त हुए। यद्यपि यह राज कपूर की पहली फिल्म थी जिसमें कोई संदेश नहीं था; फिर भी रागात्मक सम्मोहन, नयनाभिराम दृश्यांकन और मधुर संगीत ने मिलकर इसे घनघोर लोकप्रिय बना दिया। भारत में ही नहीं, यूरोप के अनेक देशों में भी 'संगम' को बहुत सफलता मिली और 'संगम' ने राज कपूर को एशिया का सबसे बड़ा शो मैन बना दिया।

सन 1966 में राज कपूर तथा वहीदा रहमान अभिनीत 'तीसरी कसम' प्रदर्शित हुई। यह हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कथाकार फणीश्वर नाथ 'रेणु' रचित इसी नाम की लम्बी कहानी पर केंद्रित थी। इसका निर्माण कवि-गीतकार शैलेन्द्र ने किया था। साहित्यिक कृति पर बनी फिल्म होने के चलते आरंभ में इसे मुश्किल से वितरक मिले और बॉक्स ऑफिस पर भी आरंभ में इसे सफलता नहीं मिली। इसी दुःख में शैलेन्द्र दुनिया से चल बसे। परंतु बाद में लोगों ने इसका महत्व समझा और सिनेमा हॉल हाउसफुल रहने लगे। यह वह फिल्म थी जिसमें राज कपूर ने अपने जीवन की सर्वोत्कृष्ट भूमिका अदा की; हालाँकि इस फिल्म के लिए पारिश्रमिक स्वरूप उन्होंने अपने मित्र कवि-गीतकार शैलेन्द्र से मात्र एक रुपया लिया था। 'तीसरी कसम' यदि एकमात्र नहीं तो

चन्द उन फिल्मों में से है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया हो। 'तीसरी कसम' को बाद में 'राष्ट्रपति स्वर्ण पदक' मिला, बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फिल्म और कई अन्य पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया। मास्को फिल्म फेस्टिवल में भी यह फिल्म पुरस्कृत हुई लेकिन शैलेन्द्र दुनिया-ए-फ़ानी से विदा ले चुके थे।

सन 1970 के दिसंबर में आर.के. फिल्म्स की अपने समय की सबसे महँगी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' अखिल भारतीय स्तर पर एक साथ प्रदर्शित हुई। यह राज कपूर के जीवन की सबसे महत्त्वाकांक्षी फिल्म थी, जो बुरी तरह से फ्लॉप हुई। मेरा नाम जोकर जब पहली बार रिलीज हुई तो इसका रनिंग टाइम 4 घंटे 43 मिनट था। दो सप्ताह बाद ही इसे संपादित कर 4 घंटे 9 मिनट का किया गया। 1986 में पुनः संपादित में इसे काफी छोटा कर लगभग 3 घंटे (178 मिनट) का संस्करण तैयार कर रिलीज़ किया गया। यह संस्करण व्यवसाय की दृष्टि से बहुत सफल रहा। इसमें सबसे अधिक फुटेज तीसरे भाग के ही काटे गये थे। कहानी तो वही थी, सिर्फ दूसरे और तीसरे भाग की लंबाई कम कर दी गयी थी। 'मेरा नाम जोकर' के साथ ही राज कपूर ने नायक के रूप में फिल्मों से विदा ले ली। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में चरित्र अभिनेता के रूप में भूमिकाएँ निभायीं।'वकील बाबू' उनके द्वारा अभिनीत अंतिम फिल्म थी।

'मेरा नाम जोकर' जैसी क्लासिक फिल्म की व्यावसायिक असफलता तथा अपनी व्यावसायिक क्षमता के प्रति लोगों की आशंकाओं को निराधार साबित करते हुए राज कपूर ने स्वनिर्मित 'बॉबी' फिल्म के द्वारा सिद्ध कर दिया राज कपूर अभी भी जवान है। बॉबी सन 1973 में प्रदर्शित हुई जो बॉक्स आफिस पर सुपरहिट हुई। इस फ़िल्म ने उस समय व्यावसायिक सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये। बॉबी फ़िल्म की सफलता के बाद राज कपूर ने अगली फ़िल्म 'सत्यम शिवम सुन्दरम' बनायी जो कि फिर एक बार हिट हुई। परंतु इसने दर्शकों और कला पारखियों को निराश ही किया।

जितनी आकांक्षाएँ 'सत्यम शिवम सुन्दरम' लेकर पैदा की गयी थीं, उन पर यह पूरी नहीं उतरी। हालाँकि उन्होंने इस फिल्म पर पानी की तरह पैसा बहाया। इस फ़िल्म के क्लाइमेक्स में बाढ़ का दृश्य था जिसे फ़िल्माने के लिये उन्होंने अपने खर्च से नदी पर बांध बनवाया और नदी में भरपूर पानी भर जाने के बाद बांध को तुड़वा दिया जिससे कि बाढ़ का स्वाभाविक दृश्य फ़िल्माया जा सके। यही कारण है सत्यम्' के बाढ़-दृश्य इतने प्रामाणिक इसलिए लगते हैं। दरअसल वे दृश्य बहुत खतरा उठा कर शूट किए गए थे, क्योंकि बाढ़ का तेज बहाव यूनिट के सदस्यों को मुसीबत में डाल सकता था। स्वयं राज कपूर कमर तक पानी में खड़े रहकर काम किया। जब बाढ़ का पानी उतर गया, तब देखा कि 'सत्यम्' के लिए लगाया पूरा गाँव बह गया- मन्दिर का विशाल सेट लगभग नष्ट हो गया है। राज कपूर ने उस समय भी शूटिंग की जब बाढ़ का पानी उतार पर था, क्योंकि फिल्म में उन दृश्यों की भी आवश्यकता थी।

'सत्यम् शिवम् सुंन्दरम्' के बाद राज कपूर ने 'प्रेम रोग' का निर्माण किया। इसका निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया। आरंभ में इस फिल्म की सफलता की गति काफी धीमी रही। इसके विरुद्ध प्रचार भी खूब हुआ था, परंतु धीरे-धीरे यह सँभलती चली गयी और सफल हो गयी। यद्यपि इसकी व्यापारिक सफलता चामत्कारिक नहीं थी, परंतु अनेक दृष्टियों से इस फिल्म को काफी महत्वपूर्ण थी। यह न केवल विधवा-विवाह की समस्या पर आधारित थी, वरन् मूलतः यह औरत के बारे में तत्कालीन सामंती सोच पर बहुत से सूक्ष्मता से प्रहार करने वाली फिल्म थी। स्त्री के अक्षत कौमार्य की रुढ़िगत महत्ता को अत्यंत कलात्मकता के साथ इसमें तोड़ा गया है।

सन 1985 में रणधीर कपूर द्वारा निर्मित तथा राज कपूर द्वारा निर्देशित फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' प्रदर्शित हुई। यह वह समय था जब पिछले कुछ वर्षों में फिल्म उद्योग के प्रायः सभी हिन्दी फिल्म निर्माता चमत्कारी सफलता का मुंह देखने के लिए तरस गये थे। राजीव कपूर की इससे पहले की सारी फिल्में फ्लॉप हो चुकी थीं। लेकिन जब यह फिल्म रिलीज हुई तो इसने सफलता का नया कीर्तिमान रच दिया। फिल्म के एक दृश्य में पहाड़ों में रहने वाले एक लड़की के निर्द्वन्द्व तथा उन्मुक्त जीवन को दर्शाने के लिए दिखलाये गये छोटे से उन्मुक्त दृश्य पर कुछ लोगों ने काफी हो हल्ला मचाया; परंतु इस फिल्म को देखने के लिए उमड़ी पारिवारिक दर्शकों की भारी भीड़ तथा उसमें भी महिलाओं की प्रभूत संख्या ने सबके मुंह बंद कर दिये।

राम तेरी गंगा मैली बनाने के बाद वे 'हिना' के निर्माण में लगे थे जिसकी कहानी भारतीय युवक और पाकिस्तानी युवती के प्रेम-सम्बन्ध पर आधारित थी। 'हिना' के निर्माण के दौरान ही 02 जून 1988 को राज कपूर की मृत्यु हो गयी और उस फ़िल्म को उनके बेटे रणधीर कपूर ने पूरा किया। राज कपूर को संगीत की बहुत अच्छी समझ थी। साथ ही साथ वे यह भी अच्छी तरह से जानते थे कि किस तरह के संगीत को लोग पसंद करते हैं। यही कारण है कि आज तक उनके फ़िल्मों के गाने लोकप्रिय हैं। शंकर जयकिशन जैसे प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंचने वाले संगीतकार को उन्होंने ही अपनी फ़िल्म 'बरसात' में पहली बार संगीत-प्रस्तुतीकरण का अवसर दिया था। फ़िल्म बरसात से राज कपूर ने अपनी फिल्मों के गीत-संगीत के लिए एक प्रकार से एक टीम बना ली थी जिसमें उनके साथ गीतकार शैलेन्द्र तथा हसरत जयपुरी, गायक मुकेश और संगीतकार शंकर जयकिशन शामिल थे जिन्होंने बहुत लम्बे अरसे तक एक साथ मिल कर काम किया।

प्रेमचंद गुप्ता, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय गोवा

केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर 14 और 15 सितंबर 2024 को नई दिल्ली के भारत मंडपम में हिन्दी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन का चौथा संस्करण था । पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2021 में वाराणसी में, दूसरा 2022 में सूरत,गुजरात में और तीसरा 2023 में पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित किया गया था। इस दो दिवसीय सम्मेलन में केंद्र सरकार के विभिन्न उपक्रमों, भारत सरकार के कार्यालयों, बैंकों के हिन्दी अधिकारी, हिन्दी सेवी तथा भारतीय भाषा के विद्वान वक्ता, शासन, प्रशासन, मीडिया एवं सिनेमा से जुड़े विचारकों एवं लेखकों ने भाग लिए तथा विभिन्न सत्रों में अलग-अलग विषयों पर अपने ओजस्वी विचार भी व्यक्त किए ।

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के प्रथम दिन उद्घाटन सत्र में केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह , राज्य सभा के उप सभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार , भारत सरकार गृह मंत्रालय की राजभाषा सचिव सुश्री अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव सुश्री मीनाक्षी जौली तथा मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य विभूतियों एवं देश के हर कोने से पधारे शीर्षस्थ कार्यपालकों एवं राजभाषा कर्मियों की उपस्थिति में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तथा मंचासीन विभूतियों द्वारा दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया गया । साथ ही यहाँ हाल में विभिन्न प्रकाशनों, बैंकों एवं अन्य संस्थाओं द्वारा राजभाषा क्रिया कलापों से संबंधित प्रदर्शनियाँ लगायी गई थीं, जो काफी दर्शनीय थीं तथा इनका माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह सहित अन्य मंत्रीगण, गणमान्य अतिथियों तथा हिन्दी प्रेमियों द्वारा अवलोकन किया गया । इस प्रदर्शनी में इण्डियन ओवरसीज़ बैंक ने भी अपना स्टॉल लगाया था, जिसमे बैंक द्वारा प्रकाशित विभिन्न पत्रिकाओं, राजभाषा प्रशिक्षण सामग्री, भाषा संगम तथा बैंक उत्पाद से संबंधित विभिन्न सामग्रियों को प्रदर्शित किया गया था ।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने राजभाषा हीरक जयंती समारोह और चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को संबोधित किया। गृह मंत्री जी ने राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर विशेष रूप से तैयार किए गए 'राजभाषा भारती' पत्रिका के हीरक जयंती विशेषांक का लोकार्पण किया तथा हीरक जयंती को यादगार बनाने के लिए एक स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का लोकार्पण भी किया, इसके साथ ही भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया।

अपने संबोधन में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि पिछले 75 साल की यात्रा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कर इसके माध्यम से देश की सभी स्थानीय भाषाओं को जोड़ते हुए अपने संस्कार, संस्कृति, भाषाओं, साहित्य, कला और व्याकरण को संरक्षित और संवर्धित करने की यात्रा रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी की 75 वर्षों की यह यात्रा अब अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के अंतिम पड़ाव पर खड़ी है और आज का दिन हिंदी को संपर्क, जन भाषा, तकनीक और अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने का दिन है।

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि जो स्वराज, स्वधर्म और स्वभाषा को समाहित नहीं करता वो अपनी आने वाली पीढ़ियों को गुलामी से मुक्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि स्वराज की व्याख्या में ही स्वभाषा समाहित है। जिसे देश और जनता अपनी भाषाओं की रक्षा नहीं कर सकती वह अपने इतिहास, साहित्य तथा संस्कारों से कट जाती है और उनकी आने वाली पीढ़ियां गुलामी की मानसिकता के साथ आगे बढ़ती हैं। उन्होंने कहा कि बच्चे की अभिव्यक्ति, सोचने, समझने, तर्क, विश्लेषण और निर्णय पर पहुंचने की प्रक्रिया की सबसे सुगम भाषा उनकी मातृभाषा होती है। इसी कारण प्रधानमंत्री मोदी जी ने मातृभाषा में शिक्षा पर बहुत बल दिया है।

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि हमारी भाषाओं को अगर कोई बचा सकता है तो वो केवल माताएं ही बचा सकती हैं। माननीय गृह मंत्री जी ने सभी अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे अपने बच्चों के साथ अपनी मातृभाषा में ही बात करें। उन्होंने कहा कि अगर हम ये करते हैं तो हमारी भाषाओं को कोई समाप्त नहीं कर सकता। हमारी भाषाएं चिरकाल तक देश और दुनिया की सेवा करती रहेगीं।

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने का हमारा रोडमैप आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री जी ने दुनिया के बड़े से बड़े मंच पर विश्वास और गौरव के साथ हिंदी में अपना संबोधन देकर हिंदी की स्वीकृति को बढ़ाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि जब पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को हिंदी में संबोधित किया था तब पूरी दुनिया अचंभित रह गई थी। माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि आज हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बन चुकी है और 10 से अधिक देशों की द्वितीय भाषा भी बन चुकी है। हिंदी अब अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि भारत की भाषाएं हिंदी से ही मजबूत हो सकती हैं और हिंदी भी भारतीय भाषाओं से ही मजबूत हो सकती है।

## वर्ष 2023-24 के राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के तहत वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा नीति के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के परिणाम स्वरूप राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालयों, विभागों,सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, भारत सरकार के बोर्ड/ स्वायत निकाय/ट्रस्ट सोसाइटी, राष्ट्रीयकृत बैंकों (केवल मुख्यालयों) को तथा उनके द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के रूप में माननीय केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी तथा मंचासीन विशिष्ट अतिथिगण द्वारा पुरस्कार विजेता संस्था के शीर्षस्थ अधिकारियों को शील्ड प्रदान की गई।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक का परचम एक बार फिर से लहराया तथा बैंक को कार्यान्वयन हेतु राष्ट्रीयकृत बैंक/ वित्तीय संस्थान की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार बैंक के प्रबंध निदेशक व सीईओ श्री अजय कुमार श्रीवास्तव ने माननीय केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर कमलों से ग्रहण किया। साथ ही इण्डियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भाषा संगम" का विमोचन भी माननीय केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी, राज्य सभा के उप सभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह, मंचासीन विभूतियों , माननीय एमडी व सीईओ महोदय राजभाषा विभाग के महा प्रबंधक महोदय श्री रेयाजुल हक द्वारा किया गया।

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के लिए आयोजित लोगो प्रतियोगिता में श्री नगेन्द्र कुमार सिंह, प्रबंधक राजभाषा, केंद्रीय कार्यालय को तृतीय पुरस्कार, केंद्रीय गृहराज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय तथा सचिव राजभाषा सुश्री अंशुली आर्या के कर कमलों से प्राप्त हुआ। यह इण्डियन ओवरसीज़ बैंक को गौरवांवित करने वाला एक अद्भुत क्षण था। इससे पूरा राजभाषा परिवार आहलादित है।

### माननीय मंत्रीगण एवं विशिष्ट विभूतियों द्वारा सम्बोधन :

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद हिन्दी के माननीय मंत्री गण एवं विशिष्ट विभूतियों द्वारा देशभर से पधारे हिन्दी भाषा के विद्वतजनों तथा भारत सरकार के कार्यालयों , बैंकों, वित्तीय संस्थानों के शीर्षस्थ कार्यपालकों को संबोधित किया गया। इस अवसर पर दक्षिण भारत, तमिलानाडु से पधारे हिन्दी सेवी एवं भाषाविद डॉ. एम गोविंद राजन, हिन्दी के प्राख्यात विद्वान प्रोफेसर एस राजू ने क्षेत्रीय भाषाओं तथा हिन्दी के संबंधों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास करें तथा इन्हें साथ लेकर चलें। हिन्दी के प्रखर एवं वीर रस के कवि डॉ हरिओम पवार ने भी इस बात पर जोर दिया कि जब तक माननीय सुप्रीम कोर्ट में बहस एवं फैसले दिये जाना हिन्दी में शुरू नहीं होती तब तक हिन्दी के पूरी तरह से विकास के रास्ते में बाधा बनी रहेगी। साथ ही डॉ हरिओम पवार जी ने अपनी देश भक्ति पर आधारित कविता से उपस्थित हिन्दी प्रेमी जन-समूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। राज्यसभा के उप सभापति श्री हरवंश नारायण सिंह जी ने हिन्दी दिवस के अवसर पर उपस्थित जन-समूह को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास एवं इसके विस्तार पर अपना प्रेरक वक्तव्य दिया।

अंत में संयुक्त सचिव डॉ मीनाक्षी जौली, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में मंचासीन समस्त मंत्रीगण एवं विशिष्ट अतिथियों का आभार प्रकट किया साथ ही बैंकों, उपक्रमों, भारत सरकार के अन्य संस्थाओं के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के अधिकारियों सहित सभागार में उपस्थित सभी विद्वत जनों का धन्यवाद तथा आभार प्रकट किया और इस धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस सत्र का समापन हुआ।

### सम्मेलन में हिंदी की प्रगति पर गहन विचार-मंथन

सम्मेलन के पहले दिन 14 सितंबर को मध्याहन भोजन के बाद के सत्र में 'राजभाषा हीरक जयंती- 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति' पर गहन विचार विमर्श किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में श्री हरिवंश, उप सभापति राज्यसभा, डॉ सुधांशु त्रिवेदी, संसद सदस्य राज्य सभा तथा श्री अजय कुमार मिश्रा, पूर्व गृह राज्य मंत्री ने अपने ओजस्वी सम्बोधन एवं विचारों से उपस्थित जन-समूह को प्रेरित किया।

वही दूसरी ओर 'भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी' विषय पर लोकप्रिय हिंदी कवि एवं व्याख्याता डॉ. कुमार विश्वास ने संबोधित किया तथा अपने गीतों एवं कविताओं के माध्यम से उपस्थित जन-समूह का मनोरंजन करने के साथ-साथ उक्त विषय पर अपने ज्वलंत विचारों से प्रभावित भी किया।

15 सितंबर को सम्मलेन के दूसरे दिन 'भाषा शिक्षण में शब्दकोश की भूमिका एवं देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य' विषय पर देश के प्रसिद्ध भाषाविद् और कोशकारों जैसे- प्रो.विमलेश कान्ति वर्मा, प्रो.एस तंकमणि अम्मा, प्रो. गिरीश नाथ झा-अध्यक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, प्रो. सुनील बाबू राव कुलकर्णी –निदेशक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, डॉ इसपाक अली, लेखक एवं शिक्षाविद, बेंगलरू ने भी अपने विचार साझा किये तथा सभी ने माना कि 'भाषा शिक्षण एवं इसके विस्तार में शब्दकोश एवं देवनागरी लिपि की महत्वपूर्ण भूमिका शामिल है।

'तकनीक के दौर में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' के योगदान' विषय पर माननीय केन्द्रीय गृह

राज्यमंत्री श्री नित्यानंद राय सहित पीएसयू, भारत सरकार के कार्यालय तथा अनेक बैंकों के शीर्षस्थ कार्यपालकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव ने अपने सम्बोधन में कहा कि 'तकनीक के दौर में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में 'नराकास' महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। नराकास राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपने सदस्य कार्यालयों को न केवल सशक्त मंच प्रदान करती है बल्कि सदस्य कार्यालयों में समिति राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही कठिनाईयों का भी समुचित समाधान करती है।

**भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023, एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023**

उपर्युक्त विषय पर माननीय केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, प्रसिद्ध लेखक एवं कवि प्रो.संगीत रागी तथा भारत के सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता ने अपने विचार रखे तथा सभी वक्ताओं का मानना था कि नए कानूनों में ऐसे कई प्रविधान किए गए हैं, जो न्याय की अवधारणा को मजबूत करते हैं। समयबद्ध न्याय के लिए पुलिस व कोर्ट के लिए सीमाएं भी निर्धारित की गई हैं। अब न्यायालय में लंबित आपराधिक मामलों को वापस लेने के लिए पीड़ित को कोर्ट में अपनी बात रखने का पूरा अवसर मिलेगा। न्यायालय पीड़ित को सुनवाई का अवसर दिए बिना मुकदमा वापस लेने की सहमति नहीं देगा। इन कानूनों से न्याय प्रणाली में सुधार होगा, नागरिकों की सुरक्षा बढ़ेगी और उभरती चुनौतियों का मजबूती से सामना किया जा सकता है।

**हिन्दी भाषा के विकास का सशक्त माध्यम:**

भारतीय सिनेमा विषय पर आधारित सत्र में सिनेमा जगत के अभिनेता श्री अनुपम खेर ने प्रख्यात निर्देशक और अभिनेता श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी जी से तथा देश के हर कोने से आए लगभग 10000 हिन्दी प्रेमियों और प्रतिनिधियों से "भाषा के विकास का सशक्त माध्यम भारतीय सिनेमा " विषय पर बातचीत की तथा सभी से एक निवेदन किया कि जितना हो सके अपने बच्चों से घर में हिन्दी में बात करें इससे हिन्दी भाषा का विकास, प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण भी होगा।

इस प्रकार हिन्दी दिवस समारोह 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में विविध विषयों पर विचार विमर्श तथा मंथन

विचार हुआ और इस अमृत कलश से आने वाले समय में क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी का भी समावेशी विकास एवं विस्तार होगा।

# मान सहित हिंदी को अपनाना

भावों की मुस्कान अगर चाहो
हिंदी के गलियारे में आओ

भारतेंदु जी ने निज भाषा का
प्राण और प्रण से उत्थान किया
निज भाषा के ज्ञान बिना साथी
मिटे न हिय का शूल बखान किया
अपनी भाषा से ही उन्नति है
यह सच जन-जन को है समझाना

मिश्र, शुक्ल, द्विवेदी का दिल तो
हिंदी का अनमोल बगीचा है
पंत, निराला और महादेवी
सबने संकल्पों से सींचा है
उस उपवन के फूलों से हर पल
वाणी के संवेदन महकाना

यूँ तो अनगिनत भाषाएँ जग में
अपनी हिंदी जैसी और कहाँ
हो समान लिखना, पढ़ना, कहना
ऐसी वैज्ञानिक लिपि और कहाँ
स्वर-व्यंजन अभिमंत्रित हों जैसे
उस प्यारी हिंदी के गुण गाना

सहज, सरल उच्चारण ही इसका
भाषाओं में मान दिलाता है
खेतों- खलिहानों से संसद तक
इसके रथ का ध्वज लहराता है
पंछी तक भी निज कलरव करते
मानव होकर भूल नहीं जाना

अब तो अखिल विश्व में हिंदी ने
अपनी स्वीकार्यता बढ़ाई है
हर स्तर पर अपने घर में भी
इसकी शुभग चाँदनी छाई है
यदि अपना अस्तित्व बचाना है
मान सहित हिंदी को अपनाना है

**भारत भूषण**
वरिष्ठ प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून

मुकुल व्यास, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

मानवीय जीवन की आधारशिला भाषा को माना जाता है। मानव जीवन का प्रत्येक पहलू भाषा की ही देन है। भाषा के अभाव में मानव मृतप्राय ही माना जाएगा। विचार, अभिव्यक्ति, कला, संस्कृति, साहित्य, सामाजिक परंपराओं का निर्वहन करने का एकमात्र माध्यम है – "भाषा"। भाषा इन सभी के संरक्षण व संवर्धन का सशक्त व श्रेष्ठ साधन के रूप में सदियों से स्थापित है। भाषा और मनुष्यता का संबंध आंतरिक व आत्मीय होता है। सभ्यता की सीढ़ियों पर आरोहण हेतु भाषा का अवलंबन अत्यावश्यक है। मानव के समाजीकरण एवं वयस्क जीवन की तैयारी सभी समाजों में अबाध रूप से जारी रहती है। आचार-विचार, व्यवहार, संस्कार भाषा के विभिन्न सोपान हैं जो मनुजता को पोषित करते हैं। सभ्यता की सीढ़ियों पर आरोहण हेतु भाषा का अवलंबन अत्यावश्यक होता है। संप्रेषण एवं संवाद का एकमात्र सुचालक भाषा ही है। व्यक्ति के समस्त विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम एवं आधार भाषा पर ही निहित है। भाषा के अभाव में विचार अपना अस्तित्व खो देता है। भाषा एक सुनिश्चित कूट चिन्हों व ध्वनियों के मार्ग से होकर हृदय की गहराइयों तक पंहुचती है। भाषा का प्रभाव बच्चों के प्रारंभिक (बुनियादी) शिक्षा पर सबसे अधिक होता है। शिक्षा के विभिन्न आयामों को भाषा के माध्यम से ही एकीकृत किया जाता है। भाषा के कारण ही बच्चा स्वयं को समाज के साथ संबंध स्थापित कर पाने में सफल होता है। यदि हम मातृभाषा को बच्चे के अस्तित्व की केंद्रीय धुरी कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मनुष्य के जीवन में उसकी अपनी भाषा की भूमिका केंद्रीय और विशेषकर होती है। मनुष्य अपने वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। वह इनके अवयवों को निकटता से दृष्टिगोचर करता है और उसे आत्मीयता के साथ ग्रहण भी करता है। वह अपनी भावनाओं को अपने वातावरण के घटनाक्रमों से समायोजित करते हुए अभिव्यक्त भी करता है। अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए मनुष्य को भाषा की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्येक मनुष्य का अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति अगाध आत्मिक संबंध होता है। मनुष्य का परिवार, समाज और स्वयं से आत्मीय संबंध अपनी भाषा के कारण ही प्रगाढ़ होता है।

इसके अलावा, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी के महत्व को तेज़ी से पहचान रही हैं क्योंकि वे विशाल भारतीय बाज़ार में अपना दबदबा बना रही हैं। इसलिए, स्कूलों की ज़िम्मेदारी है कि वे छात्रों को ऐसी दुनिया के लिए तैयार करें जहाँ हिंदी की प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है। छात्रों के लिए हिंदी क्यों महत्वपूर्ण है, यह समझना सिर्फ़ अकादमिक ज़रूरतों से कहीं बढ़कर है।

- **सांस्कृतिक संबंध व पहचान :**

हिंदी सिर्फ़ एक भाषा नहीं है; यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रवेश द्वार है। हिंदी सीखकर छात्र दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता, साहित्य, संगीत और इतिहास से जुड़ सकते हैं। यह जुड़ाव गर्व और पहचान की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे छात्रों को अपनी जड़ों को समझने और भारतीय संस्कृति की विविधता की सराहना करने में मदद मिलती है।

- **उन्नत संज्ञानात्मक कौशल :**

हिंदी या कोई भी अन्य भाषा सीखने से संज्ञानात्मक क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। द्विभाषी छात्र अक्सर बेहतर समस्या-समाधान कौशल, बेहतर स्मृति और उन्नत आलोचनात्मक सोच प्रदर्शित करते हैं। हिंदी, अपनी अनूठी लिपि और भाषाई संरचना के साथ, मस्तिष्क को ऐसे तरीकों से चुनौती देती है जो संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देती है।

- **शैक्षणिक और कैरियर के अवसर :**

हिंदी में प्रवीणता से कई शैक्षणिक और करियर के अवसर खुलते हैं। चूंकि हिंदी मीडिया, शिक्षा और व्यवसाय सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुखता प्राप्त कर रही है, इसलिए हिंदी भाषा में मजबूत कौशल वाले छात्र विविध और उन्नत करियर पथ अपना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत में सिविल सेवा सहित कई प्रतियोगी परीक्षाओं में हिंदी को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है, जिससे यह शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाता है।

- **राष्ट्रीय साहित्य और मीडिया की समझ :**

हिंदी साहित्य, सिनेमा और मीडिया भारतीय समाज के अभिन्न अंग हैं। हिंदी सीखकर, छात्र अपनी मूल भाषा में साहित्यिक कृतियों, फिल्मों और समाचारों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच सकते हैं, जिससे भारतीय समाज और उसके आख्यानों के बारे में उनकी समझ गहरी होगी। यह अनुभव एक समग्र विश्वदृष्टि विकसित करने में भी मदद करता है।

- **शैक्षिक नीतियों के साथ संरेखण :**

नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में मातृभाषा में शिक्षा पर जोर दिया गया है, इसलिए हिंदी सीखना राष्ट्रीय शैक्षिक लक्ष्यों के अनुरूप है। हिंदी भाषा सीखने को प्राथमिकता देने वाले स्कूल न केवल इन दिशा-निर्देशों का अनुपालन कर रहे हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि उनके छात्र ऐसी शिक्षा से लाभान्वित हों जो भाषाई विविधता का सम्मान करती हो और समावेशिता को बढ़ावा देती हो।

**निष्कर्ष:** भारत में हिंदी शिक्षा भाषाई विविधता को संरक्षित करने, छात्रों को उनकी जड़ों से जोड़ने और नगरीय-ग्रामीण भिन्न को केन्द्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी को प्रोत्साहित करने और एक अधिक प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए, हमें अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में हिंदी को समान महत्व देना चाहिए, हिंदी पाठ्यक्रम को सुधारने, शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करने, और डिजिटल समावेशन को अपनाने का साहस करना होगा। इस तरह, हम सुनिश्चित कर सकते हैं कि हिंदी प्रारंभिक शिक्षा में हमारी राष्ट्रीय पहचान और धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा बनी रहती है, साथ ही हमारी युवा पीढ़ी को और अधिक समावेशी तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार करती है।

# बच्चों में टीकाकरण का महत्व

मनोज कुमार राऊत, प्रबन्धक, सामान्य प्रशासन विभाग, केंद्रीय कार्यालय

**अवलोकन:**

टीकाकरण एक वैश्विक स्वास्थ्य सफलता की कहानी है, जो हर साल लाखों जीवन बचाती है। टीके आपके शरीर की प्राकृतिक रक्षा प्रणाली के साथ काम करके बीमारी के जोखिम को कम करते हैं और रोग प्रतिरोधक प्रणाली का निर्माण करते हैं। जब आप एक टीका लगवाते हैं, तो आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली प्रतिक्रिया करती है। अब हमारे पास 20 से अधिक जानलेवा बीमारियों को रोकने के लिए टीके हैं, जो सभी उम्र के लोगों को लंबे, स्वस्थ जीवन जीने में मदद करते हैं। टीकाकरण वर्तमान में डिप्थीरिया, टेटनस, काली खांसी, इन्फ्लूएंजा और खसरा जैसी बीमारियों से हर साल 3.5 मिलियन से 5 मिलियन मौतों को रोकता है। टीकाकरण प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल की कुंजी है, एक निर्विवाद मानव अधिकार है, और सबसे अच्छे स्वास्थ्य निवेशों में से एक है जो पैसे खरीदा जा सकता है । टीके संक्रामक रोग के प्रकोपों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए भी महत्वपूर्ण हैं ।

**प्रभाव:**

टीके आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को एंटीबॉडी बनाने के लिए प्रशिक्षित करते हैं, जैसे कि यह तब करता है जब यह किसी बीमारी के संपर्क में आता है। क्योंकि टीके केवल मारे गए या कमजोर रूपों के कीटाणुओं जैसे वायरस या बैक्टीरिया होते हैं, वे बीमारी का कारण नहीं बनते हैं या उनसे जुड़ी जटिलताओं के जोखिम में नहीं डालते हैं।

टीके विभिन्न बीमारियों से बचाते हैं: गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर

| | |
|---|---|
| गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर | काली खांसी |
| हैजा | निमोनिया |
| कोविड-19 | पोलियो |
| डिप्थीरिया | रेबीज |
| हेपेटाइटिस बी | रोटावायरस |
| इन्फ्लूएंजा | रूबेला |
| जापानी इंसेफेलाइटिस | टेटनस |
| मलेरिया | टाइफाइड |
| खसरा | वैरिसिला |
| मेनिन्जाइटिस | पीत ज्वार |
| मम्प्स | |

टीकाकरण - बच्चों के जीवन और उनके भविष्य की रक्षा के लिए सबसे किफायती तरीकों में से एक है। भारत का टीकाकरण कार्यक्रम, यूआइपी (सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम), दुनिया के सबसे व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक है। हर साल, लगभग 26 मिलियन नवजात शिशुओं और 34 मिलियन गर्भवती महिलाओं को टीकाकरण के लिए लक्षित किया जाता है, और पूरे देश में 13 मिलियन से अधिक टीकाकरण सत्र आयोजित किए जाते हैं ताकि बच्चों और गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया जा सके।

पिछले दो दशकों में, भारत ने स्वास्थ्य परिणामों, विशेष रूप से बाल स्वास्थ्य और टीकाकरण में महत्वपूर्ण सुधार किया है। देश को 2014 में पोलियो मुक्त और 2015 में मातृ और नवजात टेटनस मुक्त घोषित किया गया था।

भारत में, संक्रामक रोग अभी भी बाल मृत्यु दर और रुग्णता के एक महत्वपूर्ण अनुपात में योगदान देते हैं। लगभग एक मिलियन बच्चे अपनी पांचवीं वर्षगांठ से पहले ही मर जाते हैं। इनमें से कई मौतें रोकी जा सकती हैं और स्तनपान, टीकाकरण और उपचार तक पहुंच जैसे हस्तक्षेपों से टाली जा सकती हैं।

**मिशन इंद्रधनुष:**

- मिशन इंद्रधनुष (एमआई) दिसंबर 2014 में शुरू किया गया था और इसका उद्देश्य बच्चों के पूर्ण टीकाकरण कवरेज को 90% तक बढ़ाना था ।
- इस अभियान के तहत कम टीकाकरण कवरेज और कठिन पहुंच वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जहां बिना टीकाकरण और आंशिक रूप से टीकाकरण वाले बच्चों का अनुपात सबसे अधिक है।
- मिशन इंद्रधनुष के कुल छह चरण पूरे हो चुके हैं, जिसमें देश भर के 554 जिलों को कवर किया गया है।
- इसे ग्राम स्वराज अभियान (541 जिलों में 16,850 गांवों) और विस्तारित ग्राम स्वराज अभियान (117 आकांक्षी जिलों में 48,929 गांवों) के तहत एक प्रमुख योजना के रूप में भी पहचाना गया था।
- मिशन इन्द्रधनुष के पहले दो चरणों के परिणामस्वरूप एक वर्ष में पूर्ण टीकाकरण कवरेज में 6.7% की वृद्धि हुई, जबकि तीव्र मिशन इन्द्रधनुष (मिशन इन्द्रधनुष का 5वां चरण) में शामिल 190 जिलों में किए गए एक हालिया सर्वेक्षण से पता चलता है कि 2015-16 में किए गए एनएफएचएस - 4 सर्वेक्षण की तुलना में पूर्ण टीकाकरण कवरेज में 18.5% अंकों की वृद्धि हुई है।

**बचपन के टीकाकरण क्यों महत्वपूर्ण हैं:** टीकाकरण न केवल आपके बच्चे को पोलियो, टेटनस और डिप्थीरिया जैसी घातक बीमारियों से बचाता है, बल्कि यह अन्य बच्चों को भी सुरक्षित रखता है एवं उन खतरनाक बीमारियों के संक्रामण की संभावना को समाप्त या बहुत कम कर देता है जो पहले बच्चे से बच्चे में फैलती थीं।

**टीके आपके बच्चे का जीवन बचा सकते हैं:** कुछ बीमारियां जो कभी हजारों बच्चों को बीमार या मार देती थीं, पूरी तरह से समाप्त हो गई हैं और अन्य विलुप्त होने के करीब हैं - मुख्य रूप से सुरक्षित और प्रभावी टीकों के कारण। टीकों का बड़ा प्रभाव का एक उदाहरण पोलियो का उन्मूलन है। पोलियो कभी सबसे भयावह बीमारी थी, जो देश भर में मौत

और पक्षाघात का कारण बनती थी, लेकिन आज पोलियो की कोई रिपोर्ट नहीं है इसके कारण सक्रिय टीकाकरण है।

**टीकाकरण बहुत सुरक्षित और प्रभावी है:**

वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों द्वारा सावधानीपूर्वक समीक्षा के बाद ही टीकों की सिफारिश की जाती है। टीकों में कुछ असुविधा हो सकती है और इंजेक्शन की जगह पर दर्द, लालिमा या कोमलता हो सकती है, लेकिन यह उन बीमारियों के दर्द, असुविधा और आघात की तुलना में न्यूनतम है जिन्हें वे रोकते हैं।

लगभग सभी बच्चों के लिए टीके प्राप्त करने के रोग-निवारक लाभ संभावित दुष्प्रभावों की तुलना में बहुत अधिक हैं।

**टीकाकरण आपके परिवार का समय और पैसा बचा सकता है:**

टीका-रोकथाम योग्य बीमारी वाले बच्चे को स्कूल या डेकेयर सुविधाओं में भाग लेने से वंचित किया जा सकता है। कुछ टीका-रोकथाम योग्य बीमारियों के कारण लंबे समय तक विकलांगता हो सकती है और काम पर समय की हानि, चिकित्सा बिल या दीर्घकालिक विकलांगता देखभाल के कारण वित्तीय नुकसान हो सकता है। इसके विपरीत, इन बीमारियों के खिलाफ टीका लगवाना एक अच्छा निवेश है जिसे आमतौर पर बीमा द्वारा कवर किया जाता है। बच्चों का टीकाकरण कार्यक्रम एक संघ द्वारा वित्त पोषित कार्यक्रम है जो कम आय वाले बच्चों को मुफ्त में टीके प्रदान करता है।

**अपने बच्चे को टीका लगाने से दूसरों की सुरक्षा में मदद मिलती है:** अपने बच्चे को टीका लगाने से न केवल उनकी सुरक्षा होती है; यह आपके पूरे समुदाय की सुरक्षा में भी मदद करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि समुदाय में जितने अधिक लोग टीका लगवाते हैं, बीमारी का फैलना उतना ही कठिन होता है। इस प्रकार की सुरक्षा को सामुदायिक (या झुंड) प्रतिरक्षा कहा जाता है। इसे नीचे दिये गये चित्र से आसानी से समझा जा सकता है।

**टीके भविष्य की पीढ़ियों की रक्षा करते हैं:** टीकों ने कई बीमारियों को कम किया है या यहाँ तक कि उन्हें खत्म भी किया है जिससे कुछ ही पीढ़ियों पहले ये बीमारियां लोगों को मारती थी या गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाती थीं। उदाहरण के लिए, 'चेचक' टीकाकरण के कारण ही अब दुनिया भर में मौजूद नहीं है। अगर हम टीकाकरण करते रहें, तो हमें भविष्य में खसरा या पोलियो जैसी अन्य बीमारियों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी।

## राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. (क) | 2. (ख) | 3. (ग) | 4. (ख) | 5. (ग) |
| 6. (घ) | 7. (ग) | 8. (ग) | 9. (ख) | 10. (घ) |
| 11.(घ) | 12.(घ) | 13. (ख) | 14. (ग) | 15. (ग) |

## ज्ञान के मोती

- समय सबसे बड़ा शिक्षक है, लेकिन दुख की बात यह है कि यह अपने छात्रों को मारकर सिखाता है।
- जो चीज़ आपको डराती है, वही अक्सर आपकी सबसे बड़ी ताकत बन सकती है।
- जो लोग खुद को नहीं बदल सकते, वे दुनिया को कैसे बदलेंगे?
- वक्त का सबसे अच्छा इस्तेमाल यही है कि आप अपने आज को अपने कल से बेहतर बनाएं।
- शिक्षा वह शक्ति है जो अज्ञानता को मिटाकर जीवन को उज्ज्वल बनाती है।
- भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, यह संस्कृति और पहचान का दर्पण होती है।
- समय को सुनियोजित तरीके से व्यतीत करने वाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।
- मन के विचार ही हमारे कर्मों और जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं।
- हमें काम के साथ साथ हमेशा कुछ समय का विराम लेना चाहिए,ताकि खुद के बारे में भी कुछ सोच सकें।
- कामयाबी कुछ नही बस एक नाकामयाब व्यक्ति के संघर्ष की कहानी है।
- हम सबके पास गुण नही है लेकिन हमारे पास अवसर जरुर है उन गुणों को निखारने का।
- अगर आप काम को मजाक के रूप में लेंगे तो वो सही में आपको मजाक ही लगेगा।
- मुसीबतों से भागना, नई मुसीबतों को निमंत्रण देने के समान है।
- प्रसन्नता एक अनमोल खजाना है। छोटी-छोटी बातों पर उसे लुटने न दें।
- जीतने के लिए आपका जिद्दी होना जरूरी है।
- अगर मेहनत आदत बन जाए, तो कामयाबी 'मुकद्दर' बन जाती है।

# हिंदी भाषा: चुनौतियाँ और समाधान

दीपशिखा बडोलिया, मुख्य प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

हिंदी, भारत की राजभाषा और सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है। यह देश की विविधता में एकता का प्रतीक मानी जाती है और देश के विभिन्न भागों में रहनेवाले लोगों को एकजुट करने का कार्य करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ था, लेकिन समय-समय पर इसे कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए ठोस और प्रभावी उपायों की आवश्यकता है। यहाँ हम हिंदी भाषा से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का गहन विश्लेषण करेंगे और इनसे निपटने के लिए उपयुक्त समाधान प्रस्तुत करेंगे।

## हिंदी भाषा की प्रमुख चुनौतियाँ

### 1. शिक्षा प्रणाली और हिंदी का सीमित उपयोग

हमारे देश में उच्च शिक्षा का माध्यम प्रायः अंग्रेजी है । हिंदी माध्यम विद्यालयों की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है, क्योंकि इन स्कूलों में शिक्षण संसाधनों की कमी है और शिक्षक प्रशिक्षण की भी समस्या है । जिसके परिणामस्वरूप हिंदी बोलनेवाले छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई होती है । उच्च शिक्षा में हिंदी के सीमित उपयोग के कारण छात्रों को केवल अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त होती है, जो कि उनके लिए एक बाधा बन जाता है।

### 2. प्रौद्योगिकी और डिजिटल युग में हिंदी का पिछड़ना

आज के डिजिटल युग में हिंदी भाषी को तकनीकी संसाधनों की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है । अधिकांश सॉफ़्टवेयर, एप्लिकेशन और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म अंग्रेजी में उपलब्ध हैं, जिससे हिंदी बोलनेवाले लोग तकनीकी साक्षरता में पिछड़ रहे हैं । इसके अतिरिक्त, इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की भी कमी है, जिससे हिंदी भाषियों को वैश्विक जानकारी और संवाद से जुड़ने में समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं ।

### 3. प्रशासनिक और कानूनी ढांचे में हिंदी का सीमित उपयोग

भारत के प्रशासनिक तंत्र में अभी भी अंग्रेजी का वर्चस्व है । सरकारी दस्तावेज़, प्रक्रिया और कई कानूनी दस्तावेज़ अंग्रेजी में होते हैं, जिससे हिंदी भाषी नागरिकों को समझने में कठिनाई होती है। यह समस्या विशेष रूप से न्यायिक प्रणाली में अधिक स्पष्ट होती है, जहां हिंदी का पर्याप्त उपयोग नहीं होने के कारण न्याय की प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी आती है।

### 4. सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ

अंग्रेजी का प्रभाव आज के युवाओं पर इतना बढ़ गया है कि वे हिंदी को एक हद तक उपेक्षित करने लगे हैं । इस परिवर्तन से हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में कठिनाई हो रही है । साथ ही, हिंदी साहित्य और संस्कृति का संरक्षण भी एक बड़ी चुनौती बन गया है । आधुनिक युग में हिंदी साहित्य की उपेक्षा और उसकी कम होती लोकप्रियता, सांस्कृतिक धरोहर को खतरे में डाल रही है ।

### 5. मानकीकरण और भाषा के विविध रूप

हिंदी की विभिन्न बोलियाँ और उपभाषाएँ मानकीकरण की प्रक्रिया में रुकावट डालती हैं। हिंदी का क्षेत्रीय रूप, जैसे कि अवधी, ब्रज, भोजपुरी, आदि, भाषा के विकास को प्रभावित करते हैं। मानक हिंदी के रूप में एक सर्वसम्मति स्थापित करने में कई कठिनाइयाँ सामने आती हैं, जो भाषा की प्रगति में बाधक बनती हैं।

## हिंदी भाषा की चुनौतियों के समाधान

### 1. शिक्षा प्रणाली में सुधार

- हिंदी माध्यम स्कूलों की गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार को एक ठोस और व्यापक योजना बनानी चाहिए।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार और विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ानी चाहिए।
- उच्च शिक्षा में हिंदी के पाठ्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिए, ताकि छात्र हिंदी में भी वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। साथ ही, भारतीय भाषाओं में भी शोध और विज्ञान के पाठ्यक्रम बढ़ाए जाने चाहिए।

### 2. प्रौद्योगिकी में हिंदी का विकास

- हिंदी भाषा में तकनीकी संसाधनों का विकास करना चाहिए। सॉफ़्टवेयर, मोबाइल ऐप्स और अन्य डिजिटल उपकरणों को हिंदी में उपलब्ध कराना चाहिए।
- डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर हिंदी सामग्री की वृद्धि के लिए सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर कार्य करना चाहिए।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य उन्नत तकनीकों का उपयोग करके हिंदी भाषा को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाया जा सकता है।

### 3. सामाजिक जागरूकता और संस्कृति का संरक्षण

- हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।
- हिंदी साहित्य और संस्कृति के संरक्षण के लिए विभिन्न सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए।
- युवाओं को हिंदी साहित्य से जोड़ने के लिए विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

### 4. मानकीकरण और भाषा का विकास

- हिंदी की विभिन्न बोलियों और उपभाषाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए एक मानक रूप पर विचार किया जाना चाहिए।
- हिंदी भाषा के मानकीकरण के लिए एक राष्ट्रीय नीति बनाई जानी चाहिए, ताकि विभिन्न भाषाई विविधताओं के बावजूद हिंदी का विकास हो सके।

### 5. अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सहयोग

- हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, ताकि कोई भी भाषा उपेक्षित न हो।

### 7. मीडिया का योगदान

- मीडिया को हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।
- टेलीविजन, रेडियो और समाचार पत्रों में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

## निष्कर्ष

हिंदी भाषा की चुनौतियों का समाधान केवल शिक्षा, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, और सामाजिक जागरूकता के समग्र दृष्टिकोण से ही संभव है । इसके लिए सभी क्षेत्रों में सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। हिंदी को एक सशक्त और प्रभावी राजभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। हिंदी के भविष्य की संभावनाएँ उज्ज्वल हैं, यदि हम इन समस्याओं का समाधान करने के लिए ठोस और व्यवस्थित कदम उठाते हैं ।

# सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ) और वेबसाइट के लिए इसका महत्व

प्रणव बारो, वरिष्ठ प्रबंधक, डिजिटल बैंकिंग विभाग, केंद्रीय कार्यालय

वेबसाइटों की ऑनलाइन उपस्थिति में सुधार करने और ऑर्गेनिक ट्रैफ़िक को आकर्षित करने के लिए सर्च इंजन ऑप्टिमाइज़ेशन या बस एसईओ बहुत महत्वपूर्ण है। किसी वेबसाइट के विभिन्न पहलुओं को अनुकूलित करके, व्यवसाय गूगल जैसे खोज इंजन पर अपनी दृश्यता बढ़ा सकते हैं, जिससे बड़े दर्शकों तक पहुंचने की उनकी संभावना में सुधार होता है।

**एसईओ को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:**

**ऑन-पेज एसईओ:**

ऑन-पेज एसईओ में उच्च रैंक और अधिक प्रासंगिक ट्रैफ़िक अर्जित करने के लिए व्यक्तिगत वेब पेजों को अनुकूलित करना शामिल है। इसमें विशिष्ट कीवर्ड के लिए सामग्री को अनुकूलित करना, उचित शीर्षकों और टैग का उपयोग करना, मेटा विवरण और शीर्षकों में सुधार करना, ऑल्ट टेक्स्ट के साथ छवियों को अनुकूलित करना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि वेबसाइट अच्छी तरह से संरचित है। ऑन-पेज एसईओ उन तत्वों पर केंद्रित है जो वेबसाइट मालिक के नियंत्रण में हैं।

**ऑफ-पेज एसईओ:**

ऑफ-पेज एसईओ वेबसाइट के बाहर की गतिविधियों को संदर्भित करता है जो इसकी रैंकिंग को प्रभावित करती हैं। इसमें प्रतिष्ठित साइटों से बैकलिंक्स बनाना, सोशल मीडिया मार्केटिंग, प्रभावशाली आउटरीच और अतिथि ब्लॉगिंग शामिल हैं। ऑफ-पेज एसईओ मुख्य रूप से वेबसाइट की प्रतिष्ठा और अधिकार बनाने से संबंधित है, जो बदले में खोज इंजन पर इसकी रैंकिंग को बेहतर बनाने में मदद करता है।

ऑन-पेज और ऑफ-पेज दोनों एसईओ रणनीतियों का लाभ उठाकर, व्यवसाय प्रभावी ढंग से अपनी ऑनलाइन उपस्थिति में सुधार कर सकते हैं, अधिक आगंतुकों को आकर्षित कर सकते हैं और अपने मार्केटिंग और व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। आइए मैं एसईओ अनुकूलन के महत्व पर कुछ बिंदुओं को सूचीबद्ध करता हूं और विस्तार से बताता हूं या सीधे शब्दों में कहें तो किसी भी वेबसाइट को एसईओ मापदंडों या संरचना के साथ अनुकूलित करने की आवश्यकता क्यों है:

**1. बढ़ी हुई दृश्यता और ब्रांड जागरूकता:**

एसईओ वेबसाइटों को खोज इंजन परिणाम पृष्ठों (एसईआरपी) पर उच्च रैंक देने में मदद करता है, जिससे वे प्रासंगिक कीवर्ड खोजने वाले उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक दृश्यमान हो जाते हैं। उच्च दृश्यता का मतलब है कि अधिक लोग आपके ब्रांड के बारे में जागरूक हो जाते हैं क्योंकि वे आपके द्वारा पेश किए जाने वाले उत्पादों या सेवाओं की खोज करते समय आपकी वेबसाइट पर आते हैं। खोज परिणामों के शीर्ष पर प्रदर्शित होकर, एक वेबसाइट खुद को अपने उद्योग में अग्रणी के रूप में स्थापित कर सकती है, जिससे ब्रांड जागरूकता में वृद्धि हो सकती है।

**2. स्थिर या जैविक यातायात:**

एसईओ का एक प्राथमिक लक्ष्य ऑर्गेनिक ट्रैफ़िक को आकर्षित करना है - वे विज़िटर जो अवैतनिक खोज परिणामों के माध्यम से साइट पर आते हैं। प्रासंगिक कीवर्ड के लिए वेबसाइट को अनुकूलित करके और यह सुनिश्चित करके कि यह खोज इंजन मानदंडों को पूरा करती है, एसईओ ट्रैफ़िक के एक स्थिर प्रवाह को बनाए रखने में मदद करता है। यह सशुल्क विज्ञापन की तुलना में अधिक टिकाऊ और लागत प्रभावी है, क्योंकि इसमें विज़िटर प्रवाह को बनाए रखने के लिए निरंतर निवेश की आवश्यकता नहीं होती है।

**3. बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव:**

खोज इंजन उन वेबसाइटों को प्राथमिकता देते हैं जो अच्छा उपयोगकर्ता अनुभव प्रदान करते हैं। पेज लोड समय में सुधार, मोबाइल उपकरणों के लिए अनुकूलन और उपयोगकर्ता के अनुकूल नेविगेशन बनाने जैसी एसईओ प्रथाएं बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव में योगदान करती हैं। जब कोई वेबसाइट नेविगेट करना आसान होती है और मूल्यवान सामग्री प्रदान करती है, तो उपयोगकर्ताओं के लंबे समय तक रुकने, सामग्री के साथ जुड़ने और अंततः परिवर्तित होने की अधिक संभावना होती है, जो खोज इंजनों को भी संकेत देता है कि साइट मूल्यवान है।

**4. विश्वास और विश्वसनीयता बनाता है:**

खोज परिणामों में उच्च रैंक वाली वेबसाइटें अक्सर उपयोगकर्ताओं द्वारा अधिक भरोसेमंद और विश्वसनीय मानी जाती हैं। एसईओ विभिन्न तकनीकों के माध्यम से प्राधिकरण स्थापित करने में मदद करता है जैसे गुणवत्ता वाले बैकलिंक प्राप्त करना, आधिकारिक सामग्री प्रकाशित करना और एक अच्छी तरह से संरचित और सुरक्षित वेबसाइट बनाए रखना। समय के साथ, चूंकि एक वेबसाइट लगातार मूल्यवान जानकारी प्रदान करती है और अच्छी रैंक करती है, यह उपयोगकर्ताओं और खोज इंजन दोनों का विश्वास हासिल करते हुए एक मजबूत प्रतिष्ठा बनाती है।

**5. उच्च रूपांतरण दर:**

एक अच्छी तरह से अनुकूलित वेबसाइट अधिक प्रासंगिक ट्रैफ़िक को आकर्षित करती है - ऐसे विज़िटर जो आपके द्वारा ऑफ़र किए जाने वाले उत्पादों या सेवाओं को सक्रिय रूप से खोज रहे हैं। जब इन आगंतुकों को वह मिल जाता है जो वे खोज रहे हैं और उन्हें साइट पर सकारात्मक अनुभव होता है, तो उनके रूपांतरित होने की संभावना अधिक होती है, चाहे इसका मतलब खरीदारी करना हो, न्यूज़लेटर के लिए साइन अप करना हो या संपर्क फ़ॉर्म भरना हो। एसईओ यह सुनिश्चित करता है कि सही दर्शकों को सही सामग्री मिले, जिससे रूपांतरण की संभावना बढ़ जाती है।

**6. ग्राहक व्यवहार में अंतर्दृष्टि:**

एसईओ उपकरण और विश्लेषण इस बात की मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं कि उपयोगकर्ता आपकी वेबसाइट के साथ कैसे इंटरैक्ट करते हैं, वे कौन से कीवर्ड का उपयोग करते हैं और कौन सी सामग्री उनके साथ मेल खाती है। ये अंतर्दृष्टि विपणन रणनीतियों, सामग्री निर्माण और यहां तक कि उत्पाद विकास को भी सूचित कर सकती हैं। ग्राहक व्यवहार को समझने से व्यवसायों को अपनी पेशकश और दृष्टिकोण को परिष्कृत करने की अनुमति मिलती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे अपने दर्शकों की जरूरतों और प्राथमिकताओं को पूरा करते हैं।

**7. लक्षित दर्शकों तक पहुंच:**

एसईओ व्यवसायों को कीवर्ड अनुकूलन और सामग्री रणनीतियों के माध्यम से विशिष्ट जनसांख्यिकी, स्थानों और रुचियों को लक्षित करने की अनुमति देता है। लंबी-पहुँच वाले कीवर्ड और स्थानीयकृत खोजों पर ध्यान केंद्रित करके, व्यवसाय अधिक लक्षित दर्शकों तक पहुंच सकते हैं - वे लोग जिनकी उनके उत्पादों या सेवाओं में रुचि होने की अधिक संभावना है। यह सटीक लक्ष्यीकरण उपयोगकर्ताओं के लिए वेबसाइट की प्रासंगिकता बढ़ाता है, जुड़ाव और रूपांतरण दरों में सुधार करता है।

**8. बेहतर रैंकिंग द्वारा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ:**

प्रतिस्पर्धी बाज़ारों में, खोज इंजन पर उच्च रैंकिंग किसी व्यवसाय को उसके प्रतिस्पर्धियों से अलग कर सकती है। एसईओ व्यवसायों को उनकी सामग्री को अनुकूलित करके और यह सुनिश्चित करके कि यह नवीनतम खोज इंजन एल्गोरिदम को पूरा करता है, अपने प्रतिस्पर्धियों से बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करता है। बेहतर रैंकिंग प्राप्त करके, व्यवसाय अधिक ट्रैफ़िक आकर्षित कर सकते हैं, अधिक एक्सपोज़र प्राप्त कर सकते हैं और अंततः, एक बड़ा बाज़ार हिस्सा सुरक्षित कर सकते हैं।

# हंसी की फुलझड़ियाँ

वीरू - सुना है, कि शादियां आसमान में ही तय हो जाती हैं,
जय- बिल्कुल ठीक, लेकिन यह भी याद रखना कि तूफान और बिजली भी आसमान से ही कड़कती हैं।

पत्नी में वो शक्ति है,
जिसके घूरने मात्र से ही,
लौकी की सब्जी में पनीर का स्वाद आने लगता है।

रामः मैंने साबुन से अपना शर्ट धोया और अब मुझे वह छोटा हो गया है।
श्यामः तुम भी उसी साबुन से नहा लो, फिर वह शर्ट तुम्हें फिट हो जाएगा।

टीचरः हॉस्पिटल में ऑपरेशन से पहले मरीज को बेहोश क्यों करते हैं?
छात्र - अगर बेहोश नहीं किया और मरीज ऑपरेशन करना सीख गया तो डॉक्टरों को कौन पूछेगा?

सोनूः पापा, शराबी कौन होते हैं?
पापा - बेटा, ये जो सामने 4 कारें दिख रही हैं ना, वे शराबी को 8 दिखती हैं।
सोनूः लेकिन पापा सामने, तो सिर्फ 2 कारें है।

पप्पू - मुझे लाल किला जाना है।
गप्पू - तो जाओ ना भाई, ऐसे हर किसी को बताते हुए जाओगे तो नहीं पहुंच पाओगे।

गप्पू - आज तू आंगनबाड़ी क्यों नहीं गया?
पप्पू - कल गया था तो वहां मुझे तौल रहे! क्या पता आज बेच दें!

अब तो शक की इंतहा ही हो गई।
बीवीः तुम्हारे शर्ट पर एक भी बाल नहीं है।
सोनू हां तो क्या?
बीवी- सच- सच बताओ कौन थी वह गंजी?

आजकल राते इतनी लंबी हो गई है कि सपने रिपीट होने लगें हैं
कल तो बीच में विज्ञापन भी आ गए।

# राजभाषा की संकल्पना और महात्मा गांधी का योगदान



दीपक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी

**राजभाषा की संकल्पना:-**

राजभाषा वह भाषा है जिसे किसी देश, राज्य या प्रशासनिक इकाई द्वारा आधिकारिक कामकाज के लिए अपनाया गया हो। यह भाषा प्रशासन, न्यायालय, शिक्षा और सरकारी संवाद में उपयोग होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में राजभाषा का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि यह विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच एकता स्थापित करने और प्रशासनिक कार्यों में सुगमता प्रदान करने का माध्यम बन जाती है।

राजभाषा का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों को सरल और सुगम बनाना, जनसामान्य के साथ बेहतर संवाद स्थापित करना और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है।

भारत में, संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को देवनागरी लिपि में राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है, और इसके साथ-साथ अंग्रेजी का भी प्रयोग एक सहायक भाषा के रूप में हो रहा है।

"भारत का हजारों वर्षों का इतिहास साक्षी है कि कोई भी विदेशी भाषा जन मानस की भाषा नहीं हो सकती है । अंग्रेजी न तो कभी रही न रहेगी । भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी ही इस उत्तरदायित्व का निर्वाह बहुत दिनों से करती चली आई है और आज भी ऐसी क्षमता इसी में है और इसमें अखिल भारतीय व्यापकता और सरलता भी है ।"

**महात्मा गांधी का योगदान**

हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित करनें में महात्मा गांधी का योगदान अमूल्य रहा है । हिंदी को स्वतंत्रता आंदोलन के साथ जोड़कर उन्होंने समस्त देशवासियों में राष्ट्रप्रेम निर्मित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । उन्होने हिंदी को जनता की आवाज और अपनी इच्छाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया ।

महात्मा गांधी जी द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी के पाँच प्रमुख बिंदुओं पर जोर दिया गया जो निम्न है ।

1. राजकीय कर्मचारियों के प्रयोग के लिए सरल हो ।
2. पूरे भारत वर्ष में के लिए आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप से व्यवहार सम्पन्न हो ।
3. उस भाषा को अधिकांश जनता समझ और बोल सके ।
4. वह भाषा पूरे राष्ट्र के लिए सरल हो ।
5. वह भाषा किसी क्षणिक स्थिति पर निर्भर न हो ।

महात्मा गांधी के सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के इंदौर अधिवेशन में हिंदी-प्रेम प्रकट करते हुए आह्वान किया था "आप हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करें । हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए ।"

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद गांधी जी हिंदी और हिंदुस्तान को जगाने में लग गए। उन्होंने विभिन्न व्यक्तियों, पत्र-पत्रिकाओं और संस्थाओं को हिंदी के प्रयोग की अनूठी प्रेरणा दी है, गांधी जी का मानना था कि भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी आदर्श भूमिका निभा सकती है। गांधी सेवा संघ, हरिजन सेवक संघ आदि का सारा कामकाज हिंदी में होता रहा है। महात्मा गांधी की प्रेरणा से ही वर्धा और मद्रास में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित हुईं । उन्होंने दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा मद्रास की स्थापना भी की थी ।

महात्मा गाँधी की प्रेरणा से राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने का अथक प्रयास किया। टंडन जी हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में से एक थे एवं लाला लाजपत राय के साथ मिलकर भी हिंदी के प्रसार में लगे रहे। लाला जी की मृत्यु के पश्चात् टंडन जी 'लोकसेवा मंडल' की सभापति के रूप में नियुक्त कर हिंदी के प्रसार में लगे रहे। हिंदी के संदर्भ में उनका यह-विचार दृष्टव्य है-

"मैं हिंदी के प्रचार, राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीयता का मुख्य अंग मानता हूँ। मैं चाहता हूँ कि यह भाषा ऐसी हो, जिसमें हमारे विचार आसानी से साफ-साफ स्पष्टतापूर्वक व्यक्त हो सकें। राष्ट्रभाषा ऐसी होनी चाहिये, जिसे केवल एक जगह के लोग न समझें, बल्कि उसे देश के सभी प्रांतों में सुगमता से पहुँचाया जा सके।"

उपरोक्त विश्लेषण से राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में उनकी भूमिका को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

महात्मा गांधी ने भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी, को एकता और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभावी माध्यम के रूप में देखा। उनका मानना था कि भारत जैसे बहुभाषी देश में एक संपर्क भाषा का होना जरूरी है, जो आम जनता द्वारा आसानी से समझी और बोली जा सके। गांधी जी ने हिंदी को ऐसी ही एक भाषा माना ।

**महात्मा गांधी का हिन्दी के प्रति दृष्टिकोण :**

**1. हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन :** महात्मा गांधी का मानना था कि भारत जैसे बहुभाषी देश में एक ऐसी भाषा होनी चाहिए, जिसे अधिकांश लोग समझ और बोल सकें। इसके लिए उन्होंने हिन्दी को सबसे उपयुक्त भाषा माना । उनका कहना था कि हिंदी भारत के सभी हिस्सों में आसानी से सीखी और बोली जा सकती है।

**2. साधारण हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर जोर :** उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी को सरल और व्यावहारिक बनाया जाना चाहिए ताकि इसे

हर वर्ग और क्षेत्र के लोग आसानी से सीख सकें। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की बजाय जनता की बोलचाल की भाषा को प्राथमिकता दी।

**3. राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी :** गांधी जी ने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक माना । उन्होंने कहा कि यदि भारत को एक संगठित राष्ट्र बनाना है, तो एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जो सभी को जोड़े। उनके अनुसार, हिन्दी इस भूमिका को निभाने में सक्षम थी ।

**4. राजभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए प्रयास :** गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलनों और अन्य मंचों पर हिन्दी के महत्व को बताया । उन्होंने अपने लेखों और भाषणों में हिन्दी को बढ़ावा दिया और इसकी उपयोगिता पर बल दिया।

**5. भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान :** गांधी जी ने केवल हिन्दी ही नहीं, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं का आदर किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हिन्दी को प्रोत्साहित करना अन्य भाषाओं को कमतर आंकने का प्रयास नहीं है। उनका दृष्टिकोण समावेशी था।

महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा कहकर संबोधित किया और इसे पूरे देश को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में प्रस्तुत किया एवं निम्न प्रयास किए थे :

**1. हिंदी साहित्य सम्मेलन :** गांधी जी ने हिंदी साहित्य सम्मेलन जैसे मंचों के माध्यम से हिंदी को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा दिया।

**2. भाषाई समानता :** गांधी जी अन्य भारतीय भाषाओं के महत्व को भी मान्यता देते थे और उनके विकास पर भी जोर देते थे। उनका मानना था कि सभी भाषाएं एक समान हैं, लेकिन हिंदी को एक संपर्क भाषा के रूप में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

**3. अंग्रेजी का विरोध :** गांधी जी ने प्रशासन और शिक्षा में अंग्रेजी के अत्यधिक प्रयोग का विरोध किया। वे चाहते थे कि भारतीय भाषाएं अपने-अपने क्षेत्रों में प्राथमिकता पाएं और हिंदी को पूरे देश में एकजुटता के लिए अपनाया जाए।

### गांधी जी का प्रभाव

गांधी जी के प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। उनके विचार आज भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के संवर्धन में प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

महात्मा गांधी का भारतीय भाषाओं, विशेषकर राजभाषा हिन्दी, के प्रति योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक है। गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह महसूस किया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह लोगों को जोड़ने और उनकी सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने का एक सशक्त साधन है।

### गांधी जी का योगदान :

**हिंदी नवजागरण :** हिंदी नवजागरण के माध्यम और गांधी जी के प्रयासों से हिन्दी भाषा को साहित्य, पत्रकारिता और प्रशासन में एक नई पहचान मिली ।

**हरिजन पत्र :** उन्होंने अपने पत्र "हरिजन" और "यंग इंडिया" के हिन्दी संस्करण प्रकाशित किए ताकि उनकी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सके।

**शिक्षा में हिन्दी :** गांधी जी ने शिक्षा में मातृभाषा और हिन्दी के उपयोग पर जोर दिया। उनका मानना था कि किसी भी व्यक्ति के लिए उसकी मातृभाषा में शिक्षा सबसे प्रभावी होती है।

### गांधी जी की प्रेरणा :

महात्मा गांधी के विचार आज भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार में मार्गदर्शक बने हुए हैं। उन्होंने यह समझाया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संस्कृति और राष्ट्रीयता का आधार भी है।

इस प्रकार, महात्मा गांधी का हिन्दी और राजभाषा के विकास में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनके प्रयासों ने हिन्दी को एक सशक्त पहचान दी और इसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

भांति-भांति की असंख्य विविधताओं वाले भारत में आपस के संवाद के लिए एक सामान्य भाषा की जरूरत आजादी के पहले से महसूस की जा रही थी। महात्मा गांधी हिन्दी को सम्पर्क, संवाद की राष्ट्रभाषा मानकर इस जरूरत को पूरा करना चाहते थे।

गांधी जी ने कहा था, "हिन्दी जनमानस की भाषा है और यह ही भारत को एक सूत्र में पिरो सकती है।"

# वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हमारी हिंदी

प्रशांत कुमार, मुख्य प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी

भाषा वैश्वीकरण से तात्पर्य है दुनिया भर में विभिन्न भाषाओं का आपस में मिलना और एक-दूसरे को प्रभावित करना। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो व्यापार, यात्रा, प्रौद्योगिकी और संस्कृति के आदान-प्रदान के कारण होती है। आसान शब्दों में, दुनिया छोटी होती जा रही है और लोग एक-दूसरे के संपर्क में अधिक आ रहे हैं। इसी के कारण विभिन्न भाषाएँ आपस में मिल रही हैं और बदल रही हैं।

**परिचय** -

वैश्वीकरण के इस युग में राजभाषा हिंदी को एक नई परिभाषा मिल रही है। अब हिंदी सिर्फ भारत की एक भाषा नहीं रही, बल्कि यह एक वैश्विक भाषा बनती जा रही है। यह भारत की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक होने के साथ-साथ, देश के आर्थिक विकास और वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती हुई भूमिका में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

वैश्वीकरण के परिपेक्ष्य में राजभाषा हिंदी का महत्व

वैश्वीकरण के इस दौर में, जहां दुनिया एक गांव बनती जा रही है, वहां हिंदी जैसी भाषा का महत्व और भी बढ़ गया है। आइए देखें कि वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी का महत्व क्यों है:

- भारत की पहचान: हिंदी भारत की आत्मा है। यह भारत की सांस्कृतिक एकता को मजबूत करती है और देश की पहचान को विश्व पटल पर स्थापित करती है।
- संचार का माध्यम: हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को एक साथ जोड़ने का काम करती है और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम बनती है।
- आर्थिक विकास: हिंदी भारत की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देती है।
- सॉफ्ट पावर: हिंदी भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में मदद करती है। यह दुनिया को भारतीय संस्कृति और विरासत से परिचित कराती है।

**वैश्वीकरण के परिपेक्ष्य में राजभाषा हिंदी पर सकारात्मक प्रभाव**

बढ़ते आर्थिक संबंधों और तकनीकी विकास के साथ हिंदी का दायरा लगातार बढ़ रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पादों का प्रचार हिंदी में करने लगी हैं, जिससे हिंदी बोलने वाले लोगों तक उनकी पहुंच आसान हो गई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हिंदी को एक नई ऊंचाई दी है। हिंदी में वेबसाइट, ब्लॉग और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। इससे हिंदी साहित्य का प्रसार विश्वभर में हो रहा है। साथ ही, हिंदी भाषा के विकास के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठन कार्य कर रहे हैं, जिससे हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिल रही है।

**वैश्वीकरण के परिपेक्ष्य में राजभाषा हिंदी के सामने चुनौतियां**

वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी भाषा के समक्ष अनेक चुनौतियां उपस्थित हैं। अंग्रेजी भाषा का विश्वव्यापी प्रभुत्व और तकनीकी क्षेत्र में इसका व्यापक उपयोग हिंदी को पीछे धकेल रहा है। विशेषकर युवा पीढ़ी अंग्रेजी को अधिक महत्व दे रही है, जिससे हिंदी के प्रयोग में कमी आ रही है।वैश्वीकरण के साथ-साथ विदेशी संस्कृति और विचारधाराओं का प्रवाह भी बढ़ रहा है। इससे हिंदी भाषा की शुद्धता और साहित्यिक समृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। विदेशी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग और स्थानीय बोलियों का ह्रास हिंदी को कमजोर बना रहा है।

दूसरी ओर, प्रशासनिक स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। कई सरकारी दस्तावेज और संचार माध्यम अभी भी अंग्रेजी में ही उपलब्ध हैं। इससे हिंदी भाषी लोगों को कई बार असुविधा होती है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा को उचित स्थान नहीं मिल पा रहा है। कई उच्च शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी माध्यम का ही प्रचलन है, जिससे हिंदी माध्यम के छात्रों को कठिनाई होती है। मीडिया और मनोरंजन के क्षेत्र में भी अंग्रेजी भाषा का दबदबा है। हिंदी सिनेमा और संगीत उद्योग में भी अंग्रेजी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद हिंदी भाषा को बचाए रखने और उसे समृद्ध बनाने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे।

**समाधान**

वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी राजभाषा होने के बावजूद कई चुनौतियों का सामना कर रही है। अंग्रेजी का वर्चस्व, तकनीकी क्षेत्र में अंग्रेजी का उपयोग और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव प्रमुख चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का समाधान करते हुए हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। जैसे कि, शिक्षा के सभी स्तरों पर हिंदी माध्यम को प्रोत्साहित करना, तकनीकी शब्दावली का हिंदीकरण करना, सरकारी और निजी क्षेत्र में हिंदी के उपयोग को अनिवार्य बनाना और हिंदी साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देना।

**निष्कर्ष:**

वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी की स्थिति जटिल और बहुआयामी है। एक ओर जहां हिंदी बोलने वालों की संख्या विश्व में काफी अधिक है, वहीं दूसरी ओर वैश्वीकरण के साथ अंग्रेजी का प्रभाव भी बढ़ा है। हिंदी को राष्ट्रीय एकता का सूत्र मानते हुए इसे बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन वैश्विक बाजार में अंग्रेजी का वर्चस्व चुनौती बना हुआ है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को मान्यता दिलाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन अभी तक सफलता मिलती नहीं दिख रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी को पुष्पित और पल्लवित होने के लिए समाज के सभी वर्गों का सहयोग आवश्यक है। हमें हिंदी भाषा को संरक्षित करते हुए उसे आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना होगा।

# नारी सम्मान

कैसा समाज है ये जहां नारी की कोई कथा नहीं,
बस व्यथा, व्यथा ही दिखती है चारों ओर समाज में।
ऐ दानव मानव है वक्त अभी भी संभल जा तू,
नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब नारी काली बन जावे।
है, आग जो सीने में वो अब धधक – धधक कर बढ़ चली,
ऐसा न हो समाज संचालक नारी, सब समाले अपनी आग में।
है वक्त अभी भी संभल जा तू।।

कल दिल्ली था, आज कलकत्ता है, कल कोई और स्थान होगा,
ऐसे तो नारी की अनगिनत कहानी है जिसका कोई व्याख्यान नहीं।
वो नारी जिसे पूजे सब नर तो हैं मां दुर्गा, वो कभी काली भी,
क्यों भूल जाता है ओ दुष्ट मानवता, ये वह नारी है जिससे तेरा अस्तित्व खड़ा।
कभी मां बनके, कभी बहन, कभी पत्नी और कभी बेटी बनकर हर समय संभाला है
जिसने तुझको, तू उसी को नोंचने में है लगा ।।

क्या व्यथा है आज मेरे सीने में, लिखने को तो बहुत मन करता है।
पर लिखूँ क्या, लिख-लिख के तो बहुतेरे चले गए,
क्या होगा आगे और कौन करेगा न्याय हमारा, बस बात इसी पर थम जाती है।
"ओ मेरी बहनों और माताओं सम्बोधन करने वाले, मेरे प्यारे भाई और बेटे मोदी जी,
हम सब मिल विनती करते हैं कुछ तो कर दो, ऐसा जैसा हुआ कभी नहीं,
हम सबकी भी तो सुनो कोई।।

ये सुना – सुना सा लगता है जहां हो समाज पढ़ा – लिखा हुआ,
वहां कोई अत्याचार नहीं, क्या खाक पढ़ा है ये समाज, जहां नारी का सम्मान नहीं,
फिर चाहें हो मायका या हो ससुराल क्या अंतर पड़ता है,
हर जगह नारी का वही है हाल, जगह से भला क्या फर्क पड़ता है।
वो नारी जिसका बीता बचपन बचने में सगे संबंधों से,
बच गए वहां से तो क्या हुआ है भरा समाज दरिंदो से, जो खाने को तुझे तैयार खड़ा।
फिर चाहें वो हो शिक्षा का मंदिर, उसको भी कुछ दानवों ने बदनाम किया।

अब बारी आती है दफ्तर की जहां सोचा अब मैं अपने पैरों पर हूँ खड़ी,
पर क्या पता ये समाज हर मोड़ में तोड़ने को मुझे तैयार खड़ा।
चाहे कितनी मेहनत, हिम्मत या खुद को भी समर्पित कर डाला,
पर चाह कर भी नारी कभी नर की बराबरी न कर पायी।
फिर चाहे घर हो या हो दफ्तर हर जगह सफाई न दे पायी।

बस बहुत हुआ अब अपमान हमारा चांहे हो मन का या तन का
सब झेल – झेल के नारी का मानों आँसू सूख गया।
ऐ निर्मम समाज के लोगों बस बहुत हुआ अब रूक जाओ
वरना वो दिन दूर नहीं जब आ जन्मे रानी झांसी।।
जिसने अंग्रेजों के अत्याचारों पे अपनी तलवार उठायी थी।

अब बारी है हम जैसों की जिनको आवाज उठाना है,
और खत्म करेंगे उस अत्याचारी दानव को जो
है खड़ा हर मोड़ पे नारी के वस्त्र उतारने को,
अपने सम्मान की रक्षा है अपने ही हाथों में।
आ जाओ मिलके हम सब खायें कसम कुछ कर गुजरें
अब नारी सम्मान बचाने में।

वंदना सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
लखनऊ क्षेत्र

# डिजिटल युग में हिंदी भाषा का विकास

विमल सैनी, ग्राहक सेवा सहयोगी, देहरादून क्षेत्र

हिंदी भाषा का इतिहास सदियों पुराना है परंतु आधुनिक युग में डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी ने इसके विकास में नई दिशा और गति प्रदान की है । जहाँ पहले हिंदी का प्रयोग सीमित था और यह अधिकतर व्यक्तिगत या क्षेत्रीय संचार का माध्यम ही समझी जाती थी, वहीं आज डिजिटल युग में यह वैश्विक स्तर पर पहुँच चुकी है।

इंटरनेट और सोशल मीडिया का हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इसके कई कारण और प्रभाव हैं जो हिंदी के प्रसार और विकास में सहायक रहे हैं ।

### 1. हिंदी सामग्री का आसानी से उपलब्ध होना

इंटरनेट पर हिंदी में लेख, समाचार, ब्लॉग, कहानियाँ और कविताएँ लिखने का चलन तेजी से बढ़ा है। विभिन्न वेबसाइट्स, ब्लॉग्स, और डिजिटल न्यूज़ पोर्टल्स ने हिंदी में सामग्री उपलब्ध करवाई है, जिससे लोग अपनी भाषा में जानकारी पा सकते हैं।

### 2. सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग

फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप जैसी सोशल मीडिया साइट्स ने हिंदी को अपनाने का अवसर दिया है। लोग अपनी भावनाओं और विचारों को हिंदी में व्यक्त करते हैं, जो भाषा को एक नया जीवन देता है और नई पीढ़ी के बीच इसे लोकप्रिय बनाता है।

### 3. हिंदी में शिक्षा और जानकारी का आदान-प्रदान

इंटरनेट पर हिंदी भाषा में ट्यूटोरियल, शैक्षिक सामग्री और वीडियो उपलब्ध होने के कारण लोग विभिन्न विषयों को हिंदी में समझ पा रहे हैं। यूट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर शिक्षा और अन्य जानकारी को हिंदी में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे हिंदीभाषी लोग जटिल विषयों को अपनी भाषा में सीख सकते हैं।

### 4. हिंदी साहित्य का डिजिटलीकरण

इंटरनेट ने पुराने हिंदी साहित्य और पुस्तकों को डिजिटलीकरण करके लोगों तक पहुँचाया है। कई वेबसाइट्स पर हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों की पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो नई पीढ़ी को हिंदी साहित्य से जोड़ती हैं ।

### 5. लोकप्रियता और रोज़गार के अवसर

हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स, ब्लॉगर्स, यूट्यूबर्स, और इंफ्लुएंसर्स को सोशल मीडिया ने मंच प्रदान किया है। इन माध्यमों से हिंदी में कंटेंट बनाने वालों को कमाई और पहचान मिलती है, जिससे हिंदी में काम करने की रुचि बढ़ती है।

### 6. अनुवाद और ट्रांसलेशन टूल्स का योगदान

गूगल ट्रांसलेट और अन्य अनुवाद टूल्स ने भाषा की सीमाओं को खत्म करने का कार्य किया है। अब किसी भी अंग्रेजी या अन्य भाषा के कंटेंट को आसानी से हिंदी में अनुवाद किया जा सकता है, जिससे हिंदी भाषी लोग विश्व के हर कोने से जुड़ सकते हैं। यह न केवल हिंदी की पहुँच बढ़ाता है बल्कि ज्ञान के विविध स्रोतों को हिंदी में उपलब्ध कराता है।

### 7. ई-कॉमर्स और ई-गवर्नेंस में हिंदी का प्रयोग

डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग न केवल संचार में बल्कि सरकारी और निजी सेवाओं में भी हिंदी को मुख्य भाषा के रूप में उभरने का अवसर देता है। ऑनलाइन शॉपिंग, बैंकिंग, और सरकारी योजनाओं की जानकारी अब हिंदी में उपलब्ध कराई जा रही है। भारत में ई-गवर्नेंस के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी डिजिटल सेवाओं का लाभ अपनी भाषा में उठा सकते हैं।

### 8. ई-लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षा में हिंदी का विस्तार

डिजिटल शिक्षा प्रणाली में हिंदी माध्यम के कई पाठ्यक्रमों, कोर्सों, और वीडियो लेक्चर्स की उपलब्धता ने इसे और भी लोकप्रिय बना दिया है। कई ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे कि बायजूज़, खान अकेडमी, और कोर्सेरा हिंदी में कोर्सेस प्रदान कर रहे हैं। इससे विद्यार्थी और शिक्षक अपनी मातृभाषा में ज्ञान अर्जित और वितरित कर सकते हैं।

### 9. हिंदी ब्लॉगिंग और यूट्यूब चैनल्स का प्रचलन

आज के समय में ब्लॉगिंग और यूट्यूब चैनल्स के माध्यम से हिंदी का प्रचलन बढ़ रहा है। हिंदी में कई लोकप्रिय ब्लॉग्स और यूट्यूब चैनल्स हैं जो विभिन्न विषयों पर जानकारी उपलब्ध कराते हैं, चाहे वह शिक्षा हो, तकनीकी ज्ञान हो, या फिर मनोरंजन। इससे हिंदी भाषी दर्शकों के लिए अधिक से अधिक कंटेंट उपलब्ध हो रहे हैं, जो हिंदी के प्रति रुचि को बढ़ावा देते हैं।

### 10. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का प्रयोग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का प्रयोग करके हिंदी में स्पीच-टू-टेक्स्ट और टेक्स्ट-टू-स्पीच सिस्टम तैयार किए जा रहे हैं। इससे हिंदी में दस्तावेज़ों का निर्माण, पढ़ाई-लिखाई में आसानी, और विभिन्न डिवाइसेज में हिंदी का सहज उपयोग हो रहा है। उदाहरण के लिए, गूगल असिस्टेंट या अमेज़न अलेक्सा हिंदी में संवाद कर सकते हैं।

### 11. हिंदी में डिजिटल साहित्य का विकास

ई-बुक्स और ऑडियो बुक्स के माध्यम से हिंदी साहित्य का प्रसार हो रहा है। अमेज़न किंडल, ऑडिबल, और अन्य प्लेटफॉर्म पर हिंदी साहित्य की उपलब्धता ने इसे पाठकों के बीच लोकप्रिय बनाया है। लेखक और कवि अब अपनी रचनाओं को डिजिटल फॉर्मेट में प्रस्तुत कर सकते हैं, जिससे हिंदी साहित्य को एक नई पहचान मिल रही है।

डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी ने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भाषा की सीमाओं को तोड़ते हुए लोगों को एक नए स्तर पर जोड़ने का कार्य कर रही है। इसने हिंदी को न केवल भारतीय समाज में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पहचान दिलाई है। डिजिटल युग में हिंदी का यह विकास इसे भविष्य में और भी प्रगति की ओर ले जाएगा और भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान और प्रगति की नई मिसाल कायम करेगा।

अतः हिंदी का डिजिटल युग में विकास सुनिश्चित करता है कि आने वाली पीढ़ियां भी अपनी मातृभाषा को अपनाए रखेंगी और इसे आधुनिकता के साथ जोड़ते हुए विश्व पटल पर और भी सशक्त बनाएंगी।

पवन कुमार, ग्राहक सेवा सहयोगी, लखनऊ क्षेत्र

भारत एक विशाल और बहुभाषी देश है जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं किन्तु देश के समग्र संचालन और आपसी एकता को बनाए रखने के लिए एक केंद्रीय भाषा की देश में आवश्यकता थी जिसके लिए संविधान समिति द्वारा संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्ज़ा दिया गया और इसके कार्यान्वयन के लिए कई कदम उठाए गए। सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न सरकारी उपक्रमों और संगठनों में राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित किया गया। इसमें इण्डियन ओवरसीज़ बैंक भी शामिल है, जो देश के प्रमुख बैंकों में से एक है आज इण्डियन ओवरसीज़ बैंक में राजभाषा का कार्यान्वयन तीव्र गति से हो रहा है।

## राजभाषा की उपयोगिता

राजभाषा का तात्पर्य उस भाषा से है, जिसे देश के प्रशासनिक कार्यों के लिए मान्यता दी गई हो। भारत में हिंदी को राजभाषा घोषित करने का उद्देश्य था कि लोगों तक सरकारी जानकारी उनकी अपनी भाषा में पहुंचे। इससे न केवल जनता का सरकारी प्रक्रियाओं में भरोसा बढ़ता है, बल्कि यह एकरूपता और संचार में सुगमता भी लाता है। राजभाषा की उपयोगिता देश की संपर्क भाषा के रूप में भी है जिसे यह देश के हर क्षेत्र को जोड़ती है।

भारत में राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़े। इसके साथ ही अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी समान आदर और स्थान मिले। इसके लिए तीन त्रिभाषा सूत्र अपनाया गया, जिसमें हिंदी, अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषाओं का समन्वय स्थापित किया गया। इण्डियन ओवरसीज़ बैंक सरकार एवं जनता की राजभाषाई अपेक्षाओं में हर मापदंड में खरा साबित हो रहा है।

## राजभाषा कार्यान्वयन की कठिनाईयाँ

राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में कई प्रकार की चुनौतियाँ सामने आई हैं। भारत में कई राज्यों की अपनी क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, जो जनता की संवाद का प्राथमिक माध्यम हैं। इसलिए सरकारी नीतियों और कार्यों को हिंदी में लागू करना हमेशा आसान नहीं रहा है। इसके अलावा, अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव भी कार्यान्वयन में एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा गया है, क्योंकि कई तकनीकी शब्दों का हिंदी में अनुवाद करना और उसे लागू करना कठिन रहा है। जिससे बैंकिंग क्षेत्र में बाधा उत्पन्न हो रही है।

## राजभाषा विभाग का कार्य

भारत सरकार ने राजभाषा नीति के सुचारू कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग की स्थापना की। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत विभिन्न सरकारी कार्यालयों और उपक्रमों में हिंदी कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। साथ ही, यह विभाग विभिन्न संगठनों के हिंदी में किए गए कार्यों की निगरानी करता है और इसे बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान करता है।

## इण्डियन ओवरसीज़ बैंक और राजभाषा कार्यान्वयन

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक भारत के प्रमुख सरकारी बैंकों में से एक है और जिसने बैंकिंग कार्यों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को लेकर ठोस कदम उठाए हैं जैसे – बैंकिंग सॉफ्टवेयर को हिन्दी में विकसित करना, समय – समय पर राजभाषा के प्रचार व प्रसार हेतु जागरूकता कैंपो का आयोजन करना, बैंक की वेबसाइट, बैंकिंग सेवाएँ, ग्राहक संचार और आंतरिक संवाद का हिंदी करण शामिल है।इण्डियन ओवरसीज़ बैंक ने सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी अधिकारी नियुक्त किए गए हैं, जो बैंक के राजभाषा कार्यों को संपादित करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि बैंक की सेवाएँ हिंदी में भी उपलब्ध हों।

राजभाषा कार्यान्वयन के लिए इण्डियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा उठाए गए कदम -

### राजभाषा समितियों की स्थापना:

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक ने अपनी शाखाओं और सभी प्रमुख कार्यालयों में राजभाषा समितियों की स्थापना की है। ये समितियाँ नियमित रूप से बैठकें आयोजित करती हैं और राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करती हैं।

### हिंदी कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण:

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करती है ताकि उसके कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में दक्ष बनाया जा सके। इन कार्यशालाओं के माध्यम से कर्मचारियों को सरकारी नीतियों के अनुसार हिंदी में कार्य करने की जानकारी दी जाती है।

### प्रशिक्षण सामग्री का हिंदी में अनुवाद:

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा प्रयोग किए जाने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज, परिपत्र और प्रशिक्षण सामग्री का हिंदी में अनुवाद किया जाता है। इससे कर्मचारियों को बैंकिंग प्रक्रियाओं को समझने और उनका पालन करने में आसानी होती है।

### ग्राहक संवाद में हिंदी का प्रयोग:

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक अपने ग्राहकों को हिंदी में भी सेवाएँ प्रदान करता है। बैंक की वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन पर हिंदी इंटरफेस उपलब्ध है। साथ ही, ग्राहक सेवाओं में भी हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाया गया है, जिससे ग्राहकों को अपनी मातृभाषा में सेवाएँ मिलती हैं।

### पुरस्कार और प्रोत्साहन:

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक अपने कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है और समय-समय पर पुरस्कार भी प्रदान करता है। इस प्रकार के प्रोत्साहनों से बैंक कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह बढ़ता है और वो अपने कार्यो का निर्वहन उत्साहपूर्वक करते हैं।

### राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ और इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की रणनीतियाँ

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक में राजभाषा के कार्यान्वयन के दौरान कई प्रकार की चुनौतियाँ भी सामने आईं, जिनमें प्रमुख रूप से क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव, तकनीकी शब्दावली का अभाव, और अंग्रेज़ी के प्रति झुकाव शामिल हैं। लेकिन इण्डियन ओवरसीज़ बैंक ने इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ अपनाई हैं। बैंक ने तकनीकी शब्दों का हिंदी में सरल अनुवाद करने के प्रयास किए और क्षेत्रीय भाषाओं का भी सम्मान करते हुए हिंदी को प्रोत्साहित किया व बैंक में हिन्दी विभाग की स्थापना की गई है।

### भविष्य में राजभाषा कार्यान्वयन की संभावनाएँ

राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी प्रगति और डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का समावेश एक महत्वपूर्ण कारक है।इण्डियन ओवरसीज़ बैंक जैसे बैंक इनका उपयोग करके हिंदी में सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के प्रयोग से अनुवाद और संचार में और भी सुधार लाया जा सकता है।

### निष्कर्ष

राजभाषा कार्यान्वयन एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिससे सरकारी कार्यों में पारदर्शिता और लोगों तक जानकारी पहुँचाने में सुगमता होती है।इण्डियन ओवरसीज़ बैंक ने राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए जो कदम उठाए हैं, वे अन्य सरकारी संगठनों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने से देश में सांस्कृतिक एकता और समरसता को भी बढ़ावा मिलता है। समय – समय पर भारत सरकार द्वारा बैंक को राजभाषा हिन्दी के लिए पुरस्कृत भी किया जाता रहा है।

देखो सुबह का अखबार आ गया
जैसे कोई सुखद पैगाम आ गया।।
सभी हाथों-हाथ लेने को बेताब हैं
कहीं कोई अक्षर न मिट जाए
ऐसे उनके जज्बात हैं ।।
तुरत ही हो गया पन्नों का बंटवारा
किसी को मिला प्रथम तो मिला किसी को अंतिम पृष्ठ
आम हो गया थोड़ी ही देर में,जो था विशिष्ट।।
सबने उसे अपने अपने ढंग से निचोड़ा
कहीं कुछ बाकी न रह जाये,कुछ भी नही छोड़ा
एक पल में युवा से बुजुर्ग हो गया
कोने में पड़ा कहीं कचरे का ढेर हो गया।।
हालात देख अपनी, उसे भी भान हो गया
कोने में पड़े रहना ही शान हो गया।
आती है जब कोई मुश्किल घड़ी
याद आती है वो न्यूज ,जो कोने में पड़ी।।
झोंक देती है वो अपना पूरा ज्ञान
जो तुम पुकारो उसे एक बार।।
नए के साथ पुराने का भी रखो उतना ही मान
क्योंकि दिलाया है उसी ने तुम्हें
ज्ञान विज्ञान और सम्मान।।

सत्य प्रकाश पाण्डेय
प्रबन्धक
केन्द्रीय कार्यालय

# हिंदी भाषा से रोजगार की संभावनाएं

शबनम बानो, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

हिन्दी भाषा काफी सरल भाषा है और इसी सरलता के कारण हिन्दी भाषा देश के कोने-कोने में जा बसी है। हिंदी, भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में, शहरी वित्तीय प्रणालियों और ग्रामीण आबादी के बीच एक महत्वपूर्ण पुल के रूप में कार्य करती है, जो इसे वित्तीय साक्षरता, जागरूकता और वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए एक कड़ी का कार्य करती है। हिंदी भाषा भारत की राज-काज की भाषा है, और इसका महत्व दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। केवल भारतवर्ष ही नहीं, अपितु विश्व के ज्यादातर देशों में हिंदी भाषा और उस देश की भाषा पर पकड़ रखने वाला विद्यार्थी बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकता है। हिंदी भाषा में दक्षता हासिल कर आज मीडिया, विज्ञापन, सिनेमा, पर्यटन, अनुवाद, शिक्षा, फिल्म जगत आदि क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी हिंदी में बहुत बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है। ऐसे में इस क्षेत्र में भी हिंदी के विद्यार्थियों के लिए रोजगार की बहुत सी संभावनाएं हैं। हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं।

## हिंदी भाषा में रोजगार प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्र एवं संभावनाएं:

**1. पत्रकारिता:** हिंदी भाषा में पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां आप समाचार पत्र, पत्रिकाएं, और ऑनलाइन मीडिया में काम कर सकते हैं। समाज और लोकतंत्र में अपनी प्रभावशाली भूमिका के कारण पत्रकारिता को भारत में एक अच्छा करियर विकल्प माना जाता है। हिन्दी पत्रकारिता द्वारा रोजगार की संभावनाएं अच्छी ख़ासी है। पत्रकारिता के कैरियर में प्रिंट, ऑडियो और वीडियो रिपोर्टिंग आदि शामिल हैं। इसके अंतर्गत फाइलें पढ़ना, साक्षात्कार आयोजित करना और व्यक्तियों या एजेंसियों के बारे में रिपोर्ट या दस्तावेज आदि बनाना शामिल है।

### हिन्दी पत्रकारिता के प्रमुख रूप या प्रकार:

- खेल, राजनीतिक और मनोरंजन पत्रकारिता
- आर्थिक और व्यापार पत्रकारिता
- यूट्यूब पर उपलब्ध निजी चैनलों में पत्रकारिता
- विभिन्न टीवी चैनलों के पत्रकार
- रेडियो समाचार वक्ता तथा पत्रकार

**2. अनुवाद:** हिंदी भाषा में अनुवाद एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां आप सरकारी, निजी कंपनियों और संगठनों में काम कर सकते हैं। आज प्रशासन, शिक्षण संस्थानों, पर्यटन, पत्रकारिकता, विज्ञापन जगत, फिल्म जगत एवं साहित्य जगत आदि क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता बहुत अधिक है इसके साथ ही बड़े पैमाने पर सरकारी कार्यालयों, बैंकों, सरकारी उपक्रमों एवं पत्र-पत्रिकाओं में अनुवादकों के लिए रोजगार उपलब्ध है। डबिंग, वॉयस ओवर, सबटाइटलिंग आदि के क्षेत्र में अनुवादकों के लिए अपार संभावनाएँ हैं जहाँ वे न केवल अनुवाद करते हैं बल्कि अपनी कलात्मक रुचि के अनुसार मूल रूप से पुनः सृजन का आनंद लेते हैं। अनुवाद संबंधी रोजगार में साहित्यिक कृतियों के अनुवाद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसा ही कार्य है। इसी तरह द्विभाषी दक्षता रखकर कोई भी फ्रीलान्स अनुवादक के रूप में अपनी आजीविका अर्जित कर सकता है और अपनी अनुवाद कंपनियां भी स्थापित कर सकता है। ऐसी कंपनियां अनुबंध के आधार पर काम करती हैं और कई पेशेवर अनुवादकों को रोजगार प्रदान करती हैं।

**3. शिक्षा:** मनुष्य को शिक्षित करने के लिए भाषा को ही माध्यम बनाया जाता है। ज्ञान विज्ञान का सबसे सर्वोत्तम ज़रिया भाषा ही है। इस तरह शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाषा को ही आधार बनाया जाता है। हिंदी भाषा में शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां आप स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय में अध्यापन कर सकते हैं। हमें हिंदी का महत्व इस बात से पता चलता है कि दुनिया भर के 170 से अधिकविश्वविद्यालयों तथा अधिकतर स्कूलों में हिंदी एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। हिंदी भाषा भारत के बाहर 20 से अधिक देशों में बोली जाती है। इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्र रोजगार के लिए बेहतर विकल्प माना जा सकता है।

**4. लेखन:** हिंदी भाषा में लेखन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां आप कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास आदि लिख सकते हैं। साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी रोजगार की अधिकतम संभावनाएं है। इस क्षेत्र में विभिन्न साहित्य संग्रह, कविता संग्रह आदि में विभिन्न रोज़गार उपलब्ध हैं। यदि आप एक अच्छे लेखक हैं तो अपनी पुस्तक का प्रकाशन करके अच्छा खासा नाम तथा पैसा कमा सकते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न ऑनलाइन डिजिटल प्लेटफॉर्म भी उपलब्ध हैं जहां लेखन करके पैसा कमाया जा सकता है। आजकल अच्छा लिखने वाले कवियों तथा लेखकों को टीवी चैनलों द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रम में आमंत्रित किया जाता है जहां उन्हें उनके हुनर के लिए अच्छा मानदेय दिया जाता है।

**5. संपादन:** हिंदी भाषा में संपादन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां आप पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और पुस्तकों का संपादन कर सकते हैं। संपादन का शाब्दिक अर्थ है – किसी काम को अच्छी और ठीक तरह से पूरा करना। संपादन प्रक्रिया अक्सर लेखक के काम के विचार से ही शुरू होती है, जो लेखक और संपादक के बीच सहयोग के रूप में काम के निर्माण के रूप में जारी रहती है। संपादक के कार्य में लेखन सामग्री को क्रमबद्ध करना, सामग्री का प्रस्तुतीकरण निश्चित करना और त्रुटियाँ सुधारना आदि शामिल होता है। इसके तहत संशोधन,

परिवर्तन या परिवर्धन करके किसी लेखन सामग्री को सार्वजनिक प्रयोग अथवा प्रकाशन के योग्य बना देना होता है। संपादक के काम में विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों और लेखों आदि का संपादन करना, प्रकाशनों के ले-आउट की योजना बनाना तथा महत्वपूर्ण विषयों या घटनाओं पर प्रमुख लेख लिखना आदि शामिल होते हैं। इस क्षेत्र में हिन्दी भाषा प्रगति कर रही है और यहाँ रोज़गार की असीम संभावनाएं हैं।

**6. कॉपी एडिटर:** संपादन के ही अंतर्गत कॉपी एडिटर भी आता है जिसमें प्रकाशन से पहले एडिटिंग करना लेखन प्रक्रिया का अंतिम चरण है। कॉपी एडिटिंग का मतलब है पाठ को सुसंगत बनाने के लिए उसमें सुधार करना होता है, जबकि उसका अर्थ और शैली समान बनी रहे उसमें कोई बदलाव ना किया जाए। एक कॉपी एडिटर को व्याकरण, वर्तनी, लहजा और शैली की जांच करनी होती है और पूरे पाठ को एक समग्र आसान प्रवाह देना होता है। अतः हिन्दी भाषा से संबन्धित कार्यों अनुरूप इस क्षेत्र में भी रोज़गार प्राप्त किया जा सकता है।

**7. सबटाइटलिंग:** सबटाइटलिंग यानी उपशीर्षक, दृश्य बोध कराने वाली फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत किए जा रहे संवादों की लिखित रूप में प्रस्तुति अर्थात 'लिप्यंकन' होता है। आजकल विभिन्न भाषाओं के नाटक तथा फिल्मों की सबटाइटलिंग हिन्दी में उपलब्ध करवाई जा रही है। आपने देखा होगा की किसी भी अन्य भाषा में दिखाए जाने वाले नाटक, फिल्में तथा भाषण आदि जो समाचार के माध्यम से दिखाएँ जाते हैं उनका हिन्दी सबटाइटल हिन्दी में प्रदर्शित होता है ताकि उसे पढ़कर समझा जा सके। हिन्दी के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए सबटाइटलिंग भी बहुत ही अच्छा विकल्प माना जा सकता है।

**8. वॉइसओवर तथा डबिंग :** किसी ऑफस्क्रीन कथावाचक, उद्घोषक या इसी तरह की आवाज़ देना ही वॉइसओवर कहलाता है। एक टेलीविज़न अनुक्रम, जैसे कि किसी विज्ञापन में, ऐसी आवाज़ का उपयोग करना या किसी भी ऑफस्क्रीन आवाज, जैसे कि किसी कथा में किसी पात्र की आवाज अथवा किसी अन्य भाषा में बनी फिल्म या नाटक में हिन्दी डबिंग के दौरान अपनी आवाज़ देना होता है। कार्टून चरित्र या किसी एनीमेशन मूवी में हिन्दी आवाज़ देना वॉयस ओवर की एक अनूठी उत्पादन तकनीक है जिसमें कोई व्यक्ति कहानी सुनाने या अधिक जानकारी जोड़ने के लिए आवाज़ रिकॉर्ड करता है। वर्तमान समय में इस क्षेत्र में भी रोज़गार की काफ़ी बढ़ोत्तरी हुई है।

**9. कंटेंट राइटर:** जब हम किसी भी विषय या शीर्षक के बारे में अच्छी तरह से बताते हुए लिखते हैं जिससे पढ़ कर लोगों को उस विषय के बारे में सही और विस्तृत जानकारी मिलती हैं उसे सामग्री लेखन या कंटेंट राइटिंग कहते हैं। कंटेंट राइटर एक पेशेवर होता है जो ब्रांड को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने में मदद करने के लिए जानकारीपूर्ण और आकर्षक लेख लिखता है। वे एक समग्र प्रकाशन का प्रबंधन कर सकते हैं, चाहे वह ब्लॉग हो, ब्रांड पत्रिका हो अथवा कोई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आदि। आजकल बढ़ते सोशल मीडिया तथा यूट्यूब के प्रयोग से कंटेंट राइटर को रोज़गार के विभिन्न अवसर प्राप्त हो रहे हैं जिसके द्वारा वे अच्छा खासा पैसा कमा सकते हैं।

**10. एंकरिंग:** यदि भाषा पर आपकी पकड़ अच्छी है और आप निर्बाध रूप से हिन्दी बोल सकते हैं तथा एंकर के रूप में, आप माहौल तैयार करने, उपस्थित लोगों को शामिल करने और कार्यक्रम की निर्बाध प्रगति सुनिश्चित करने की शक्ति रखते हैं तो स्टेज या डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एंकरिंग भी एक अच्छा करियर विकल्प है। मंच पर आपकी उपस्थिति कार्यक्रम और दर्शकों के बीच एक सेतु का काम करती है, उत्साह और प्रत्याशा का माहौल बनाए रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों में उनका मार्गदर्शन करती है और इसमें भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हिन्दी माध्यम में चलने वाले ऐसे कई कार्यक्रम हैं जहां अच्छी हिन्दी बोलने वाले एंकर की तलाश होती है जहां आप अपने कौशल को निखार कर करियर बना सकते हैं।

**हिंदी भाषा में रोज़गार प्राप्त करने के विभिन्न अवसर:**

**1. सरकारी नौकरी:** हिंदी भाषा में सरकारी नौकरी के बहुत सारे अवसर मिल सकते हैं, जैसे कि राज्य सरकार, केंद्र सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अनुवादक, राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा सहायक आदि। इनके अतिरिक्त हिन्दी टायपिस्ट जो हिन्दी दस्तावेज़ों तथा हिन्दी पत्रों को टाइप करने का कार्य करते हैं वे भी विभिन्न संस्थाओं में पदस्थ होते हैं।

**2. निजी कंपनियां:** हिंदी भाषा में निजी कंपनियों में विभिन्न रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं, जैसे कि मीडिया हाउस, प्रकाशन और अनुवाद एजेंसी आदि। निजी कंपनियाँ अपनी ज़रूरत के हिसाब से हिन्दी संबंधी कार्य करने के लिए पद पर भर्ती करती हैं इसके अंतर्गत मार्केटिंग तथा प्रिंटिंग क्षेत्र शामिल हो सकते हैं। इसके अलावा आजकल ऑनलाइन हिन्दी प्लेटफॉर्म भी काफी प्रचलित हैं उनके अनुसार भी यहाँ रोज़गार उपलब्ध हो सकते हैं।

**3. स्वतंत्र लेखन:** हिंदी भाषा में स्वतंत्र लेखन एक महत्वपूर्ण विकल्प है, जहां आप अपनी रचनाएं ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रकाशित कर सकते हैं। विभिन्न लोकल पत्रिकाएँ, समाचार पत्र तथा ई-पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं जहां स्वतंत्र लेखन हेतु अवसर प्रदान किए जाते हैं। बहुत से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हिन्दी लेखन हेतु अवसर देते हैं। आप ब्लोगिंग करके अपने स्वयं के वेबपेज से कमाई कर सकते हैं।

**4. ऑनलाइन शिक्षा:** हिंदी भाषा में ऑनलाइन शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां आप ऑनलाइन पाठ्यक्रम और ट्यूटोरियल बना सकते हैं। आज के समय में खासकर कोरोना काल के पश्चात ऑनलाइन शिक्षा में बढ़ोत्तरी हुई है। घर बैठे ही शिक्षा प्राप्त करने का यह अच्छा

माध्यम है तथा हिन्दी माध्यम से पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए भी यह रोजगार का बेहतर विकल्प है।

**6. डिजिटल तथा ऑनलाइन क्षेत्र:** डिजिटल तथा ऑनलाइन प्रचलन बढ़ने के कारण हिन्दी भाषा का यहाँ भी ग्राफ बढ़ा है। आज विभिन्न सोशल मीडिया चैनल, ऑनलाइन ब्लोगिंग चैनल, विभिन्न विषयों पर चल रहे विभिन्न यूट्यूब चैनल जहां आप हिन्दी भाषा के ज़रिये अपने कौशल, कला तथा अनुभव देश-विदेश के किसी भी हिस्से में पहुंचा सकते हैं और आपके द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को जितने अधिक लोग देखेंगे उतना ही अधिक पैसा इस क्षेत्र से कमाया जा सकता है और यह हिन्दी से रोजगार प्राप्त करने का एक अच्छा माध्यम है।

**हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल:**

1. लेखन कौशल
2. संपादन कौशल
3. अनुवाद कौशल
4. पत्रकारिता कौशल
5. शिक्षा कौशल

**हिन्दी भाषा के रोजगार प्राप्त करने हेतु आवश्यक शिक्षा:**

1. बीए हिंदी से स्नातक
2. एमए हिंदी से मास्टर डिग्री
3. हिंदी विषय से एमफिल
4. हिंदी में पीएचडी
5. पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन में हिंदी

**निष्कर्ष:**

हिंदी भाषा में पत्रकारिता, अनुवाद, शिक्षा, लेखन और संपादन जैसे क्षेत्रों में काम करने के बहुत से अवसर उपलब्ध हैं। हिंदी फिल्मों, विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसा ही कार्य है जहां इस तरह की द्विभाषी दक्षता रखकर कोई भी फ्रीलान्स अनुवादक के रूप में अपनी आजीविका अर्जित कर सकता है। कई पेशेवर कंपनियाँ मार्केट में अपनी जगह स्थापित करने के लिए हिन्दी भाषा से जुड़े रोजगार प्रदान करती हैं। हिन्दी पद सम्बन्धित विभिन्न सरकारी नौकरी, निजी कंपनियों द्वारा भर्ती, स्वतंत्र लेखन और ऑनलाइन शिक्षा जैसे कई अवसर हैं जिनके द्वारा रोजगार प्राप्त करना आसान हो गया है। आजकल बड़ी-बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनियाँ भी हिन्दी में अपने एप लॉन्च कर रहीं है जो हिन्दी में रोजगार प्राप्त करने वाले क्षेत्रों को और भी विस्तारित कर देता है। हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाओं को पहचानकर कई युवा अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं।

# मैं बेटी हूँ

मुझे भी जी भर जीने दो
अरमाँ, पूरे कर लेने दो
चिड़ियों सा पंख लगा कर के
नील गगन तक उड़ने दो....

सच है कि मैं बेटी हूँ
पर इतनी भी नहीं छोटी हूँ
अस्तित्व में आ जाने से पहले
कोख में मारी जाती हूँ....

मुझे भी खिल खिलाने दो
जीवन के गीत सुनाने दो
फूलों जैसी खुशबू पाकर
दुनिया को महकाने दो....

बिन मेरे ये दुनिया कब तक....?
बारिश बिन हरियाली कब तक....?
सिर झुकाकर जीना कब तक....?
अबला की तरह मरना कब तक....?

कंधे से कंधा मिलाने दो
तन कर कदम बढ़ाने दो
एक नदिया जैसी धारा पाकर
बिन बंधन बह जाने दो

सब कहते हैं तू झुककर
फिर मैं रोती हूँ छुपकर
मेरी आँखों के सपनों को
चूर करते हैं हँसकर.....

मुझको भी कुछ कह जाने दो
गुमनाम नहीं रह जाने दो
माँ दुर्गा जैसी हिम्मत पाकर
जीवन से लड़ जाने दो

मुझे भी जी भर जीने दो
अरमाँ, पूरे कर लेने दो

**विपिन सतोरिया**
ग्राहक सेवा सहयोगी
भोपाल क्षेत्र

# सुशासित लोकतंत्र में शिक्षा का महत्व

बिश्वजीत चंद, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय रांची

लोकतंत्र, जिसमें जनता अपनी सरकार चुनने का अधिकार रखती है, एक ऐसी व्यवस्था है जो समानता, स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों के मूल्यों पर आधारित है। यह प्रणाली तभी प्रभावी हो सकती है जब इसके नागरिक जागरूक, जिम्मेदार और शिक्षित हों। शिक्षा न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास का साधन है, बल्कि यह उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझने और उनका पालन करने में सक्षम बनाती है। लोकतंत्र के सफल संचालन और स्थायित्व के लिए शिक्षा का महत्व अत्यधिक है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ केवल किताबों और डिग्री तक सीमित नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयों का ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण विकास को सुनिश्चित करना है। यह व्यक्ति के विचार, व्यवहार, दृष्टिकोण और समाज के प्रति उसकी भूमिका को आकार देने में मदद करती है।

आमतौर पर समाज में शिक्षा को डिग्री प्राप्ति से जोड़ा जाता है। डिग्री व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रमाण है, लेकिन यह उसके बौद्धिक और नैतिक स्तर का मापक नहीं है। एक डिग्रीधारी व्यक्ति शिक्षित हो सकता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि वह विवेकशील या नैतिक हो। शिक्षा का असली अर्थ है व्यक्ति के भीतर जागरूकता और चेतना का विकास हो।

शिक्षा केवल पुस्तकों, परीक्षा और अंकों तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य है:

1. **मूल्य आधारित विकास:** शिक्षा व्यक्ति के भीतर नैतिकता, करुणा और सहिष्णुता जैसे मूल्यों का विकास करती है।
2. **समस्या समाधान की क्षमता:** एक शिक्षित व्यक्ति समस्याओं का समाधान खोजने और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होता है।
3. **सामाजिक जिम्मेदारी का बोध:** शिक्षा व्यक्ति को समाज और राष्ट्र के प्रति उसकी जिम्मेदारियों का एहसास कराती है।

### लोकतंत्र और शिक्षा का संबंध

लोकतंत्र की सफलता का आधार नागरिकों की भागीदारी और समझ पर टिका होता है। एक शिक्षित नागरिक समाज में:

1. **समझदारीपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता:** शिक्षित लोग सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को समझ सकते हैं और सही प्रतिनिधि चुनने में सक्षम होते हैं।
2. **आलोचनात्मक सोच का विकास:** शिक्षा व्यक्ति को विभिन्न विचारों का विश्लेषण करने, सही और गलत के बीच फर्क करने और अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है।
3. **समानता और समावेशिता का प्रचार:** शिक्षा समानता के विचार को बढ़ावा देती है, जिससे समाज में भेदभाव और असमानता को समाप्त किया जा सकता है।
4. **जिम्मेदारी का अहसास:** शिक्षित नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी पहचानते हैं, जिससे समाज में एक सामंजस्यपूर्ण वातावरण बनता है।

### अशिक्षा के कारण लोकतंत्र को खतरे

जब नागरिक अशिक्षित होते हैं, तो लोकतंत्र को कई प्रकार के खतरे होते हैं:

1. **भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी:** अशिक्षित लोग अक्सर भ्रष्ट नेताओं के झूठे वादों का शिकार बन जाते हैं।
2. **राजनीतिक अस्थिरता:** अशिक्षित समाज में हिंसा, भेदभाव और गलतफहमियों का अधिक प्रचलन होता है, जिससे राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है।
3. **अधिकारों की अनदेखी:** अशिक्षित लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों को नहीं समझ पाते, जिससे वे शोषण का शिकार बनते हैं।

### शिक्षा के माध्यम से लोकतंत्र की मजबूती

लोकतंत्र के लिए शिक्षा एक ऐसी कुंजी है जो न केवल नागरिकों को जागरूक बनाती है, बल्कि उन्हें जिम्मेदार भी बनाती है। यह निम्नलिखित तरीकों से लोकतंत्र को सशक्त बनाती है:

#### 1. सक्रिय नागरिकता का निर्माण

शिक्षा नागरिकों को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है। शिक्षित नागरिक वोट देने के महत्व को समझते हैं और अपने मत का प्रयोग सही तरीके से करते हैं। वे अपने क्षेत्र की समस्याओं को पहचानते हैं और उनके समाधान के लिए सरकार पर दबाव डालते हैं।

#### 2. सामाजिक और आर्थिक विकास

शिक्षा से समाज और देश का आर्थिक विकास होता है। जब नागरिक शिक्षित होंगे, तो वे रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त करेंगे, जिससे गरीबी और असमानता कम होगी।

#### 3. भ्रष्टाचार और अन्याय का विरोध

शिक्षा नागरिकों को भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ खड़े होने की ताकत देती है। शिक्षित लोग सूचना का विश्लेषण कर सकते हैं और समाज में पारदर्शिता लाने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

### भारतीय संदर्भ में शिक्षा और लोकतंत्र

भारत जैसे विविधता से भरे देश में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। भारतीय संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020):** यह नीति भारत में शिक्षा के स्तर को सुधारने और अधिक समावेशी बनाने के लिए बनाई गई है।

**शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009):** यह अधिनियम 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करता है।

**साक्षरता कार्यक्रम:** भारत सरकार ने कई साक्षरता अभियान चलाए हैं, जैसे साक्षर भारत मिशन, जो देश में शिक्षा के प्रसार को बढ़ावा देने का काम करते हैं।

### चुनौतियां और समाधान

हालांकि शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है, फिर भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं, जैसे:

1. **ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा की कमी:** दूरस्थ इलाकों में स्कूलों और शिक्षकों की कमी के कारण शिक्षा का स्तर कम है।

   **समाधान:** ऑनलाइन शिक्षा और मोबाइल शिक्षण केंद्रों को बढ़ावा देना।
2. **लैंगिक असमानता:** कई क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता।

   **समाधान:** बालिकाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रोत्साहन और योजनाएं लागू करना।

### निष्कर्ष

शिक्षा लोकतंत्र का आधारस्तंभ है। यह नागरिकों को न केवल बेहतर इंसान बनाती है, बल्कि उन्हें अपने देश और समाज के प्रति जिम्मेदार भी बनाती है। एक शिक्षित समाज ही सच्चे लोकतंत्र की नींव रख सकता है, जहां समानता, स्वतंत्रता और न्याय के मूल सिद्धांतों का पालन होता है।

## राजभाषा नियम 1976 और उसका कार्यान्वयन

राजभाषा नियम 1976 को भारत में लागू करने की आवश्यकता मुख्य रूप से संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 के अंतर्गत दिए गए राजभाषा संबंधी प्रावधानों को प्रभावी बनाने के लिए पड़ी। इसका उद्देश्य भारत में प्रशासन और सरकारी कामकाज के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी के प्रयोग को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना था ताकि भाषाई विवादों को रोका कर और संचार प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके।

**राजभाषा नियम 1976 लागू करने की मुख्य वजहें:**

क संवैधानिक अनिवार्यता:भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया, जबकि अंग्रेज़ी को सहायक भाषा के रूप में रखा गया। किंतु हिंदी के साथ-साथ गैर-हिंदी भाषी राज्यों की भाषा के संतुलन हेतु एक स्पष्ट नियम की आवश्यकता पड़ी।

ख राज्य और केंद्र के बीच समन्वय:भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ कई राज्यों की अपनी क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। इन नियमों के जरिए केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच भाषा को लेकर सामंजस्य स्थापित किया गया।

ग संचार में स्पष्टता:सरकार के विभिन्न कार्यालयों और विभागों में कामकाज के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी के प्रयोग को सुव्यवस्थित करने के लिए इन नियमों को लागू किया गया।

घ हिंदी भाषा को प्रोत्साहन:हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए और इसे एक संचार के माध्यम के रूप में मजबूत बनाने हेतु नियमों को लागू किया गया।

1) प्रथम राजभाषा आयोग के अध्यक्ष कौन थे?
क) बी. जी. खेर ख) देवजी भाई पटेल
ग) निहारिका बारिक सिंह घ) आरके विस्दा

2 संबंधित मंत्रालय / विभाग में हिंदी के प्रचार में प्रगति की समीक्षा किस समिति द्वारा की जाती है?
क) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
ख) हिंदी सलाहकार समिति
ग) संसदीय राजभाषा समिति घ) उपर्युक्त मे से कोई नहीं

3 संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के कितने सदस्य होते हैं ?
क) 10 ख) 15 ग) 20 घ) 25

4 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की अवधि क्या है ?
क) वर्ष में चार बार ख) छमाही में एक बार
ग) वर्ष में तीन बार घ) हर तिमाही में

5 संसदीय राजभाषा की कितनी उपसमितियाँ हैं ?
क) 1 उपसमिति ख) 2 उपसमितियाँ
ग) 3 उपसमितियाँ घ) उपर्युक्त मे से कोई नहीं

6 संसदीय राजभाषा समिति का गठन कब हुआ था ?
क) जून 1975 ख) मई 1963
ग) दिसम्बर 1976 घ) जनवरी 1976

7 राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की अवधि क्या है ?
क) छमाही में दो बार ख) प्रत्येक माह
ग) तिमाही में एक बार घ) वर्ष में तीन बार

8 राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) को कब से लागू किया गया था ?
क) 26 जुलाई 1965 ख) 26 जनवरी 1963
ग) 26 जनवरी 1965 घ) 26 जनवरी 1976

9 केंद्र सरकार के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए हिंदी शिक्षण योजना की स्थापना कब की गई थी ?
क) जुलाई 1951 ख) जुलाई 1955
ग) जुलाई 1965 घ) जुलाई 1968

10 राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए वार्षिक कार्यक्रम हर वर्ष केंद्र सरकार के किस मंत्रालय द्वारा जारी किए जाते हैं ?
क) मानव संसाधन विकास मंत्रालय
ख) शिक्षा मंत्रालय
ग) समाज कल्याण मंत्रालय घ) गृह मंत्रालय

11 राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) का उल्लेख राजभाषा नियम 1976 के किस नियम में किया गया है ?
क) नियम 9 ख) नियम 8
ग) नियम 7 घ) नियम 6

12 महात्मा गाँधी ने हिंदी के प्रचार - प्रसार के लिए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना कब की थी ?
क) वर्ष 1924 में ख) वर्ष 1922 में
ग) वर्ष 1920 में घ) वर्ष 1918 में

13 केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन कब किया गया था ?
क) 01.07.1971 ख) 01.03.1971
ग) 01.01.1971 घ) 01.10.1971

14 संविधान के अनुच्छेद 120 में किसकी भाषा का प्रावधान किया गया है ?
क) उच्चतम न्यायलय की ख) पूर्वोत्तर राज्यों की
ग) संसद की घ) जम्मू कश्मीर की

15 इनमें से कौन सी भाषा देवनागरी लिपि में नहीं लिखी जाती है ?
क) हिंदी ख) संस्कृत
ग) गुजराती घ) मराठी

**नोट : राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 44 देखें**

**संकलनकर्ता:**
**बरुन चौधरी**
**प्रबंधक**
**क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर**

अपने बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका "वाणी" का 141वां अंक प्राप्त हुआ । मेरी ओर से वाणी के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ। अपने बैंक की गृह पत्रिका "वाणी" का नियमित पाठक होने का गर्व मुझे लगातार प्राप्त होता रहा है । हमारे बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार से पुरस्कार मिलना निश्चित ही गौरवान्वित करता है। पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख ज्ञानवर्धक व कलेवर बड़ा ही आकर्षक है । समस्त राष्ट्र में हमारे बैंक द्वारा हो रही लगभग सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों व राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियों को बड़े ही सुसज्जित तरीके से स्थान दिया गया है, जो कि एक मिसाल है। यह पत्रिका वास्तव में एक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का स्थान प्राप्त करती है क्योकि इस पत्रिका में बैंकिंग, साहित्य, विधि, के साथ-साथ कविता-कहानी, चुटकुले आदि का समांग मिश्रण है। इस कार्य के लिए इस पत्रिका के समस्त रचनाकारों को भी धन्यवाद देता हूँ।

अतः आशा ही नहीं विश्वास करता हूँ कि इस पत्रिका के आगामी अंक भी बेहतरीन होंगे ।

**गौरव भारद्वाज**
मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "वाणी" का 141वां अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका का यह अंक रोचक एवं सूचनाप्रद है । इस पत्रिका के माध्यम से आपके संस्थान के स्टाफ सदस्यों को भाषा ज्ञान संबंधी प्रतिभा, रचनात्मक कौशल एवं गतिविधियों की जानकारी मिलती है ।

हम आशा करते हैं कि आपके मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में इस पत्रिका को उत्तरोत्तर और अधिक ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर बनाने के प्रयास किए जाएंगे एवं इसी प्रकार इसका नियमित प्रकाशन जारी रहेगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं!

सधन्यवाद,

**अजय कुमार**
सहायक महा प्रबन्धक (राजभाषा)
इंडियन बैंक

हमारी गृह पत्रिका "वाणी" का 141वाँ अंक प्राप्त हुआ जिसे पढ़कर हमेशा की तरह प्रसन्नता की अनुभूति हुई । पत्रिका की साज सज्जा मनोहर है तथा संदेशों व लेखों के माध्यम से एक प्रेरणादायक प्रस्तुति दी गई है। 'देशों की रेटिंग' - विशेष आलेख श्री सुरेश कुमार रूंगटा, अंशकालिक निदेशक द्वारा अनोखे तरीके से प्रस्तुत किया गया है ।

साथ ही पत्रिका में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बैंकिंग, 'हरित बैंकिंग', 'नियो बैंक – पारंपरिक बैंकों के लिए एक चुनौती' सोशल मीडिया और हिंदी, केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी','व्यापार में व्हिसलब्लोइंग की नैतिकता,'बैंकिंग में डिजिटल उत्पादों का बढ़ता उपयोग एवं संभावनाएं,'नई साइबर धोखाधड़ी एवं उनकी कार्यप्रणाली ऐसे लेख हैं जो समय की मांग अनुरूप परिपक्व है । वाणी पत्रिका शुरू से अंत तक बहुत ही सुन्दर, ज्ञानवर्धक और अनोखी है । इस उपलब्धि के लिए संपादक मंडली को शुभकामनाओं के साथ बधाई । पत्रिका के नवीन अंक की प्रतीक्षा रहेगी ।

**शंकरा नन्द झा**
मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय एनसीआर - दिल्ली

हिन्दी दिवस – 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दूसरे दिन बैंक द्वारा प्रकाशित "निबंध संचय -3" का विमोचन करते हुए माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री **श्री नित्यानन्द राय** एवं साथ में हैं हमारे एमडी व सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** व अन्य गणमान्य सदस्य

स्वच्छता दिवस 2024 के दौरान स्वच्छता शपथ लेते हुए बैंक के एमडी वी सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** एवं साथ में हैं कार्यपालक निदेशक द्वै **श्री जयदीप दत्ता रॉय** एवं **श्री धनराज टी**

आइओबी

अपने **वेतन** की क्षमता बढ़ाएँ

# आइओबी एसबी वेतन के साथ

## (गोल्ड-डायमंड-प्लैटिनम वेतन खाता)

### मुख्य विशेषताएँ

- शून्य बैलेंस रख सकते हैं
- नि:शुल्क पारिवारिक शून्य बैलेंस खाते
- वैयक्तिक दुर्घटना बीमा
- डेबिट कार्ड सुविधा

नियम व शर्तें लागू

www.iob.in

हमें फॉलो करें

@IOBindia

1800 890 4445